स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

दिसम्बर 2023, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

युगों युगों तक याद रहेंगे सुमति गुरुवर। महापुरुष को गमगीन महा विदाई।

श्रमण संघीय सलाहकार भीष्म पितामह राजर्षि पूज्य गुरूदेव श्री सुमतिप्रकाश जी म. सा. के संलेखना - संथारा सहित देवलोकगमन पर जैन कांफ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से

हार्दिक श्रद्धांजलि - आदरांजलि

गुरुदेव का दिव्य आशीर्वाद जन - जन पर बरसता रहे।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

सूरत - श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिव मुनि म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास के पश्चात् प्रथम विहार

सिकन्दराबाद - युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्रऋषि जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास के पश्चात् प्रथम विहार

दिल्ली - आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. जन्मोत्सव पर उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी म. प्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनिजी म. आदि संत व उपस्थित अन्य श्रद्धालु भक्तजन

पुणे - उपाध्याय प्रवर श्री गौतम मुनि जी महाराज प्रथम दीक्षा मंगल पाठ प्रदान करते दीक्षा पश्चात् नाम.....

लुधियाना - उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म., प्रवर्तक श्री आशीष मुनि जी म. आदि संत - साध्वीवृन्द के सान्निध्य में आयोजित श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्म पितामह, संथारा साधक पूज्य गुरूदेव श्री सुमति प्रकाश जी म. की श्रद्धांजलि सभा

नाथद्वारा - प्रवर्तक श्री मदनमुनि जी म. की पुण्यस्थली पर आयोजित कार्यक्रम में प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म. सा.,श्री अमृतमुनिजी म. सा., श्री कोमलमुनिजी म. सा. आदि संत व उपस्थित महानुभाव

दिल्ली - भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म., उपप्रवर्तक श्री आनन्दमुनिजी म. सा. अन्य संतवृन्द।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 67 | अंक - 12 | दिसम्बर - 2023 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल
संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560
डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400
एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
+91 72899 00012
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE
aissjc137342@cnrb
CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा की सूचना		11
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना		12
साधारण सभा की सूचना		13
कला और जीवन का संबंध		14
आध्यात्मिक चातुर्मास...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	15
हमारे पट्टधर		16
भगवान महावीर...	- प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	17
रात्रि भोजन...	- सलाहकार श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'	18
श्री मोतीलालजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	19-21
कोटि-कोटि हृदयों के...	- युवा मनीषी श्री जागृतमुनिजी म.सा.	22
यह काम परमात्मा...	- श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन	23-24
अन्न के महत्व को समझे...	- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन	25-26
राम : एक आचरण...	- श्री सम्पतराज सिंघवी जैन	27
उपवास से अनेक घातक...	- श्री अभयकुमार जैन	28-30
श्रवण प्रक्रिया...	- श्री पदमचंद गांधी	31-34
अहिंसा और पर्यावरण	- डॉ. एन.के. खींचा जैन	35-36
पश्चिमी सभ्यता से...	- श्री जे. महावीरचंद कोठारी जैन	37
योग प्राणायाम और ध्यान...	- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन	38-39
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा नवंबर माह में सम्पन्न...		40
श्रमण संघीय पूर्वाचार्यों और पदाधिकारी मुनिराजों के जन्म दीक्षा आदि महत्वपूर्ण तिथियाँ		41-43
समाचार प्रकाश		44-47
शोक समाचार		49-50

अस्वीकरण :
लेखक / प्रेषक द्वारा लिखे गए विचारों, सामग्री एवं विषय व उसकी प्रमाणिकता के लिए सम्पादक या जैन कॉन्फ्रेंस जिम्मेदार नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी रचनाएं मौलिक एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ-युक्त हों। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुमतिप्रकाशजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	09.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	93021 03817
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	11.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
04.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082	12.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98100 45440
06.	श्री राजीव जैन, दिल्ली	98110 42280	14.	श्री कांतिकुमार लोढा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	15.	डॉ. अमित राय जैन, बड़ौत	98373 94448
08.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838			

❖❖ ❖❖ ❖❖

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-23

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति, रा. कार्य. समिति एवं साधारण सभा में जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता शुल्क राशि निम्न प्रकार से सर्वसम्मति से पारित की गई :-

व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-

नोट :

जैन प्रकाश पत्रिका को केवल ई-पत्रिका (E-Magazine) आजीवन ऑनलाइन प्रेषित की जाएगी।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह
व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

'मैं' को हटाओ, 'मैं' से मिलो

"मैं" (आत्मा) की ऊर्जा प्रकटाने हेतु, "मैं" (अहं) को प्रतिदिन गुड बाय कहो ।
1440 मिनटों में कम से कम 48 मिनट सम्यक् श्रवण में डोनेट या दान करने हेतु
'जाग सकें तो जाग'

साधना के राजमार्ग पर चलो

साधना के आईने में झांककर अशुभ व्यवहार की कोटिंग हटाओ-आंतरिक छवि को धवल बनाओ
इस दुर्लभ जन्म में शुभ भाव + शुभ क्रिया को युगल रूप में निरन्तर बनाए रखने हेतु
'जाग सकें तो जाग'

स्रोत : साध्वी युगल निधि-कृपा रचित - "जाग सके तो जाग-आचारांग संहिता" पुस्तक से साभार

सम्पादकीय

तपोनिधि संतरत्न श्री सुमतिप्रकाशजी महाराज

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail: ajvk1973@gmail.com

आदरणीय पाठकगण, आत्मीय बंधुओं !
सादर जय जिनेन्द्र ।

भारत का कण-कण यहाँ पर समय-समय पर हुए महापुरुषों के पावन चरित्र से पावन हुआ है। उनके लोक कल्याणकारी जीवन ने उन्हें दैवीय व्यक्तित्व प्रदान किया और लोग उन्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रातः-प्रातः स्मरण करते हैं। ऐसे ही स्वनाम धन्य, प्रातः स्मरणीय, श्रमणसंघीय वरिष्ठ सलाहकार, राजर्षि, भीष्म पितामह गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी महाराज का तपोमय जीवन भी रहा है, जिन्होंने अपनी साधना से भरी पूरी ज़िंदगी से लाखों लोगों के जीवन में साधना के प्रति उत्साह जगाया।

हिमाचल के हमीरपुर जिले के चावगाँव में क्षत्रिय कुल के हवलदार श्रीमान ख्यालसिंहजी एवं माताश्री जानकी देवी के घर में आश्विन शुक्ल सप्तमी 1938 को एक बालक का जन्म हुआ। पूरे कुल में बालक के जन्म की खुशियाँ मनाई गयीं और उचित संस्कारों के पोषण के साथ बालक का लालन पालन होने लगा। बालक का नाम रखा गया कुलदीप। कितना तो सार्थक नाम रखा गया बालक का क्योंकि उस समय तो बेशक समय के गर्भ में यह बात छुपी थी परन्तु समय आने पर जिनशासन में आप तपस्वी राज, साधक शिरोमणि रूप से परम् यशस्वी हुए।

होशियारपुर शहर में परम् तपस्वी श्री नरपतरायजी महाराज का देवलोक गमन हुआ और उनकी पालकी यात्रा निकाली गयी। बालक ने कुछ जिज्ञासाएँ रखीं और इसी जिज्ञासा समाधान में वो पहुंच गया जैन मुनियों के पास। मुनियों के संग रहने लगे और उनकी जीवनचर्या सहित कुछ विद्या भी अर्जित करने लगे।

फिर आया 23 अप्रैल 1959 का दिन और कुलदीप ने उत्तर भारतीय प्रवर्तक, परम् प्रभावी श्री शांतिस्वरूपजी महाराज का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। दीक्षा पाठ प्रदाता बने घोर तपस्वी, परम् प्रभावशाली, महा चमत्कारी बाबा श्री निहालचंदजी महाराज। इस तरह साधना मार्ग पर कदम बढ़ाने वाले कुलदीप को नया नाम मिला सुमति प्रकाश।

समर्थ सद्गुरु की शरण में आप समर्थ शिष्य के रूप में अपनी साधना को पुष्ट बनाने लगे। आपने लगभग 49 वर्षों तक एकांतर आयंबिल तपस्या की जिससे आपकी स्वाद पर विजय दिखती है। पाँच-पाँच महीने मौन की साधना करते थे जिससे आप में एक अद्भुत तेज का उदय हुआ। जिन शासन में आपके तपोमय जीवन का यश विस्तार होने लगा। आप सच्चे मायनों में एक तपोनिधि संत रत्न थे जिनका पूरा जीवन अनेक प्रकार की तपस्याओं में व्यतीत हुआ।

आपके प्रभावक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेकों स्त्री पुरुषों ने जिनशासन का उत्कृष्ट संयम जीवन अपनाया है जिनमें अकेले नेपाल से ही 48 साधु-साध्वीजी हैं जिनमें उपाध्याय प्रवर, वाचनाचार्य श्री विशालमुनिजी महाराज, श्री विचक्षणमुनिजी महाराज आदि प्रभावक संत रत्न हैं।

आपकी प्रभावक संयम यात्रा के साथ बाहर भी भारत भर में यात्रा चलती रही। अपने शिष्य परिवार संग आपने भारत के 25 राज्यों में 75 हजार कि.मी. की यात्रा जिनाज्ञा अनुसार पैदल ही पूरी की और एक समर्थ यायावर बनकर धर्मोद्योत किया। आपकी साधना का बल ऐसा था कि अनेकों लोगों के जीवन में जो दुर्व्यसनों का अंधेरा फैल रहा था, वह अंधेरा मिट गया और शालीनतापूर्ण जीवन जीने को लोग प्रेरित और उत्साहित हुए।

अभी 27 नवंबर को वह कालरात्रि भी आयी जिसने केवल श्रमण संघ, स्थानकवासी सम्प्रदाय को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जिनशासन सहित भारतीय संत परम्परा के एक अनमोल संत रत्न को हम सभी से छीन लिया। आपके उत्कृष्ट जीवन की मैं हार्दिक-हार्दिक अभ्यर्थना करता हूँ और आपके पावन पुनीत जीवन का अभिनंदन करता हूँ। साथ ही आपकी निर्वाण यात्रा आगे के भवों में भी इसी सहज और सरल भावों के साथ चलती रहे और शीघ्र ही निर्वाणगामी बनें ऐसी अनुशंसा करता हूँ।

नववर्ष का पुनीत अवसर हम सभी के समक्ष आ रहा है। इस नववर्ष पर हम सभी संकल्प लें पूज्य साधु-साध्वीजी म. सा. की वैय्यावच्च का और निज जीवन में कुछ नवीन संकल्प लेकर अपने जीवन को नव प्रकाश की ओर ले जाने का। मेरे एवं मेरे परिवार की ओर से तथा जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। ❖

अध्यक्षीय उद्गार

चातुर्मास : क्या खोया ? क्या पाया ?

E-mail : rjachallani@gmail.com

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण

सादर जय जिनेन्द्र !

जैन जगत् में साधु-साध्वीवृन्द के चातुर्मास की परम्परा पुरातन काल से लेकर आज तक अविच्छिन रूप से प्रवाहमान है। भगवान महावीर के चातुर्मासों का भी ऐतिहासिक उल्लेख प्राप्त है। चातुर्मास अनेकों जप-तप, त्याग, ध्यान प्रभावना आदि के साथ सफलतापूर्वक समाप्त हुए। सभी संत-सतीवृन्द का अब विचरण प्रारंभ हो चुका है।

चिंतनीय विषय यह है कि चातुर्मासकाल में हमने क्या खोया और क्या पाया। हमने साधु-साध्वियों के अम्मा-पियरो होने का कर्त्तव्य भलिभांति निर्वहन किया या नहीं अथवा मात्र धन की, अन्न की, समय की बर्बादी करके केवल दिखावे, पहनावे में ही समय को व्यर्थ में बर्बाद किया। चातुर्मासकाल में पूज्य साधु-साध्वीजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को प्रदर्शन, दिखावे का रूप मात्र न बनने दें, अपितु चातुर्मास हमारे समक्ष जो लक्ष्य प्रदान करने के लिए आते हैं, उसी लक्ष्य को निर्धारित करते हुए इस समय का लाभ उठाना चाहिए अर्थात् चातुर्मास काल के दौरान ज्ञान-ध्यान, तप-आराधना, स्वाध्याय को अपने जीवन में धारण करना चाहिए, तभी चातुर्मास की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी।

दूसरा विषय यह कि चातुर्मास काल में हमने क्या संकल्प लिये और क्या उपलब्धि प्राप्त की? दान/सहयोग से सम्पन्न होने वाले चातुर्मास के द्वारा आपके क्षेत्र के सभी श्रावक-श्राविकाएं संतुष्ट हैं या नहीं? हमारा प्रबुद्ध वर्ग तो आम के आम गुठलियों के दाम की कहावत को चरितार्थ करके ही कोई कार्य करता है। हमने कितने स्वाध्यायी तैयार किए, कितने बालक-बालिकाओं तथा युवावर्ग को सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण ज्ञान-ध्यान आदि सिखाया? श्रावकों ने सप्त कुव्यसन, गुटखा, शराब आदि के त्याग लिए या नहीं? जैनत्व के गुण हम श्रावकों में डाल पाये अथवा नहीं? क्योंकि सही मायने में चातुर्मास की सार्थकता का यही पैमाना है। आज गौतम प्रसादी के नाम पर भीड़ एकत्रित करना, प्रलोभन देकर बुलाना, महंगे तामझाम करने से हम समाज को सही राह नहीं दे सकते अपितु ऐसा करना चातुर्मास को मात्र इवेंट समझकर बस दिखावटी मनोरंजन जैसा कार्य करना ही है। अपनी प्रसिद्धि को दिखावे का रूप प्रदान करना केवल व्यावहारिक चातुर्मास के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

मेरा मानना है कि हमारे श्रमणसंघीय संत-सतीवृन्द तथा श्रावकगण भी अपनी सम्प्रदाय, पंथ को श्रमणसंघ में प्रश्रय न दें। श्रमणसंघ एक है, एक ही रहे, इस राह को अपनाते हुए सम्प्रदायवादी विचारधारा का त्याग करें और श्रमणसंघीय विचारधारा को प्रमुखता प्रदान करें। सभी श्रावक वर्ग भी अपने आप को श्रमणसंघीय श्रावक समझें और सभी जगह यहीं कहें कि हमारे प्रमुख गुरु आचार्य भगवंत ही हैं, हम सभी श्रमणसंघीय गुरुभक्त हैं और इसी विचारधारा को अपनाते हुए सभी मिलकर श्रमण संघ को आगे बढ़ाएं। **सभी श्रमणसंघीय श्रावक आदि वर्ष में कम से कम एक बार आचार्य भगवंत के अवश्य दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त करें ।** जैन कॉन्फ्रेंस एवं श्रमणसंघ सदैव एक-दूसरे के परस्पर हितैषी रहे हैं और सदैव रहेंगे। श्रमणसंघीय संत-सतीवृंद हम सभी के लिए पूजनीय थे, हैं और सदैव पूजनीय रहेंगे। हम सभी सदैव उनकी ही सेवा का लक्ष्य रखकर श्रमणसंघ के छत्र तले ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग, आराधना और सेवा का लक्ष्य रखकर आगे बढ़ते रहेंगे।

श्रमणसंघ का जब गठन हुआ था तो सभी ने अपनी-अपनी सम्प्रदायों का विलीनीकरण कर इसकी नींव को सुदृढ़ बनाया था । श्रमणसंघ में सम्मिलित सभी मुनिवरों, साध्वियों ने एकमात्र आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म.सा. को अपना आराध्य माना । मेरे लिखने का तात्पर्य यह है कि आप अपने अपने गुरुदेवों के जन्म, दीक्षा, पुण्य दिवसों को मना सकते हैं किंतु सम्प्रदायवाद या पंथवाद का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकते। आपके आद्य महापुरुषों एवं पूर्व में हुए आचार्यों के यशोगान एवं गुणगान से कोई आपत्ति नहीं है, उनके जीवन चरित्र पढ़े जाने चाहिये, उनके गुण एवं उनकी साधना स्मरणीय है परन्तु सम्प्रदायवाद को भीतर ही भीतर पनपाना यह सर्वथा अनुचित ही नहीं अपितु अनुशासनहीनता का प्रतीक है, क्योंकि श्रमणसंघ के निर्माण के समय आपके पूर्वज मुनिवरों ने अपनी-अपनी सम्प्रदायों का विलीनीकरण कर स्वयं को विस्तृतता ही प्रदान की है न कि संकुचितता। अतः संकुचित न बन कर विस्तृत बने।

नववर्ष 2024 हम सभी के समक्ष है। इस नववर्ष में हम सभी अपने-अपने लक्ष्यों को सही दिशा की ओर अभी से निर्धारित करते हुए आगे बढ़ेंगे तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से, मेरी ओर से आप सभी को नववर्ष 2024 की शुभकामनाएं तथा पूजनीय संत-सतीवृंद को वंदन-नमन एवं सुखसाता पृच्छा !

❖❖

॥ श्री महावीराय नमः ॥

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 , शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

H.O. : Jain Bhavan, 12, Shaheed Bhagat Singh Marg, Gole Market, New Delhi-110001

दूरभाष : +91-011-23363729, 23365420, फैक्स : 23344380, E-mail : aissjc1906@gmail.com

AISSJC/MEETING-MC-VII/21-23/4796/23/639 दिनांक : 05.12.2023

राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र!

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति की सभा रविवार, दिनांक 31 दिसम्बर 2023 को प्रातः 9:15 बजे से जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001 में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपश्रीजी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है ।

विषय सूची :–

01. मंगलाचरण ।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक – श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि प्रदान करना।
04. सभा की तारीख से एक सप्ताह पूर्व तक प्राप्त आजीवन सदस्यता आवेदन पत्रों पर विचार–विमर्श एवं स्वीकृति प्रदान करना।
05. वर्ष 2024–25 के अनुमानित आय – व्यय पत्रक (बजट) की प्रस्तुति एवं स्वीकृति तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा में प्रस्तुत करने हेतु संस्तुति।
06. राष्ट्रीय अध्यक्ष / प्रांतीय अध्यक्ष एवम् राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के आगामी चुनाव हेतु खर्च के लिए राशि पर विचार–विमर्श कर निर्धारित करना।
07. मतदाता सूची / सी. डी. की राशि पर विचार – विमर्श कर निर्धारित करना।
08. राष्ट्रीय / प्रांतीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के चुनाव हेतु नामांकन पत्र की राशि एवं नामांकन शुल्क (Nomination Fee) की राशि पर विचार–विमर्श कर निर्धारित करना।
09. चुनाव से प्राप्त राशि का प्रयोग जैन कॉन्फ्रेंस की सभी योजनाओं में एक समान रूप से खर्च करने पर विचार–विमर्श कर पुष्टि प्रदान करना।
10. आगामी चुनाव में कोई भी प्रत्याशी किसी भी पोस्ट के लिए चुनाव की अधिसूचना प्रसारित होने की तारीख के पश्चात्, प्रत्याशी या आजीवन सदस्य, मतदाताओं को किसी भी तरह के उपहार / भेट वस्तु आदि कोई भी सामग्री का प्रलोभन / वितरण नहीं कर सकता, इस विषय पर विचार–विमर्श कर निर्णय लेना।
11. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अतुल जैन)
राष्ट्रीय महामंत्री

नोट : 1. संपूर्ण सभा में आपकी उपस्थिति आवश्यक है।
2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।
3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो, केन्द्रीय कार्यालय को सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना भेजें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थता हो सकती है।
4. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420, 90197 31906, ई–मेल aissjc1906@gmail.com
5. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना उपरोक्त लिखित नम्बरों पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके आवास–निवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

॥ श्री महावीराय नमः ॥

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 , शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

H.O. : Jain Bhavan, 12, Shaheed Bhagat Singh Marg, Gole Market, New Delhi-110001

दूरभाष : +91-011-23363729, 23365420, फैक्स : 23344380, E-mail : aissjc1906@gmail.com

AISSJC/MEETING-WC-VII/21-23/4797/23/639 दिनांक : 05.12.2023

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र!

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति** की सभा **रविवार, दिनांक 31 दिसम्बर 2023** को **प्रातः 11:15 बजे से जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001** में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपश्रीजी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है ।

विषय सूची : –

01. मंगलाचरण।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि प्रदान करना।
04. राष्ट्रीय प्रबंध समिति द्वारा पारित वर्ष 2024–25 के अनुमानित आय–व्यय पत्रक (बजट) की प्रस्तुति एवं साधारण सभा में प्रस्तुत करने हेतु संस्तुति।
05. जैन भवन पर चल रहे एल. एण्ड डी. ओ. के केस पर चर्चा एवं आवश्यक निर्णय लेना।
06. द्वितीय (2) ज़ोन से राष्ट्रीय अध्यक्ष, सभी प्रांतीय शाखा अध्यक्षों एवं प्रांतों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के चुनाव पर विचार–विमर्श कर घोषणा करना।
07. राष्ट्रीय चुनाव समिति का गठन करना, जिसमें एक मुख्य राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी एवं दो राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारियों की नियुक्ति करना।
08. राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा, राष्ट्रीय प्रबंध समिति द्वारा स्वीकृत आजीवन सदस्यों की मताधिकार हेतु संख्या की पुष्टि करना।
09. राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा, प्रान्तों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति हेतु चुने जाने वाले सदस्यों की संख्या का संविधान / नियम–उपनियम के अनुसार घोषणा करना।
10. आगामी चुनाव में कोई भी प्रत्याशी किसी भी पोस्ट के लिए चुनाव की अधिसूचना प्रसारित होने की तारीख के पश्चात्, प्रत्याशी या आजीवन सदस्य, मतदाताओं को किसी भी तरह के उपहार भेट वस्तु आदि कोई भी सामग्री का प्रलोभन / वितरण नहीं कर सकता, इस विषय पर विचार–विमर्श कर निर्णय लेना।
11. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अतुल जैन)
राष्ट्रीय महामंत्री

नोट : 1. संपूर्ण सभा में आपकी उपस्थिति आवश्यक है।
2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।
3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो, केन्द्रीय कार्यालय को सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना भेजें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थता हो सकती है।
4. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420, 90197 31906, ई–मेल aissjc1906@gmail.com
5. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना उपरोक्त लिखित नम्बरों पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके आवास–निवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

॥ श्री महावीराय नमः ॥

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 , शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

H.O. : Jain Bhavan, 12, Shaheed Bhagat Singh Marg, Gole Market, New Delhi-110001

दूरभाष : +91-011-23363729, 23365420, फैक्स : 23344380, E-mail : aissjc1906@gmail.com

AISSJC/MEETING-GB-V/21-23/4798/23/639 दिनाक : 05.12.2023

साधारण सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र!

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की साधारण सभा रविवार, दिनांक 31 दिसम्बर 2023 को प्रातः 02:15 बजे से जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001 में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपश्रीजी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

01. मंगलाचरण।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि प्रदान करना।
04. राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा द्वारा पारित वर्ष 2024–25 के अनुमाति आय–व्यय पत्रक (बजट) की प्रस्तुति एवं स्वीकृति।
05. जैन भवन पर चल रहे एल. एण्ड डी. ओ. के केस की जानकारी प्रस्तुत करना।
06. द्वितीय (2) ज़ोन से राष्ट्रीय अध्यक्ष, सभी प्रांतीय शाखा अध्यक्षों एवं प्रांतों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य चुनने के लिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा द्वारा की गई चुनाव घोषणा की जानकारी प्रस्तुत करना एवं स्वीकृति।
07. राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा द्वारा गठित राष्ट्रीय चुनाव समिति जिसमें एक राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी, दो राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारियों की नियुक्ति की जानकारी प्रस्तुत करना एवं स्वीकृति।
08. राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा द्वारा पारित आगामी चुनाव से संबंधित खर्च की जानकारी प्रस्तुत करना एवं स्वीकृति।
09. राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा, प्रांतों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति हेतु चुने जाने वाले सदस्यों की संख्या की जानकारी प्रस्तुत करना एवं स्वीकृति।
10. जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
11. जैन कॉन्फ्रेंस की जीवन प्रकाश योजना, जीव दया योजना, मानव सेवा योजना, ज्ञान प्रकाश योजना तथा वैय्यावच्च योजना, अल्पसंख्यक योजना, विहारधाम योजना के राष्ट्रीय अध्यक्षों द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
12. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित

भवदीय

(अतुल जैन)
राष्ट्रीय महामंत्री

नोट :
1. संपूर्ण सभा में आपकी उपस्थिति आवश्यक है।
2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।
3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो, केन्द्रीय कार्यालय को सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना भेजें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थता हो सकती है।
4. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420, 90197 31906, ई–मेल aissjc1906@gmail.com
5. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना उपरोक्त लिखित नम्बरों पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके आवास–निवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

कला और जीवन का सम्बन्ध

- आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा.

किसी भी विषय को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का नाम कला है। मानव जीवन के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आज से ही नहीं, प्रागैतिहासिक काल से - भगवान ऋषभदेव के युग से विविध कलाएँ मानव जीवन को सुन्दर ढंग से यापन करने हेतु जीविका का साधन रही हैं। उनमें महिलाओं की 64 और पुरुषों की 72 कलाएँ शामिल होती हैं। महिलाओं की कलाओं में संगीत, नृत्य, वाद्य, पाक आदि कलाएँ प्रमुख हैं तो पुरुषों की 72 कलाओं में युद्ध, वाणिज्य, चित्र, साहित्य आदि कलाएँ प्रमुख हैं। ये सब कलाएँ जीवन को सरस, सरल और सुखपूर्वक व्यतीत करने में सहायक होती थीं। जीवन को सँवारने, विशुद्ध और विकसित करने के लिए भी इन कलाओं का होना आवश्यक माना जाता था। भारतीय संस्कृति के उन्नायक महर्षि भर्तृहरि ने कला के अभाव में मनुष्य को पशु की संज्ञा देते हुए कहा है -

साहित्य-संगीत-कलाविहीनः ।
साक्षात् पशुः पुच्छ-विषाणहीनः ।।

साहित्य और संगीत कला से विहीन पुरुष सींग व पूँछ से रहित साक्षात् पशु है। वास्तव में कला की आराधना-साधना मानव जीवन को सुसंस्कृत और सरस बनाने के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। जीवन को सुन्दर, सरल, सरस और मधुर बनाना हो तो कला की आराधना के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है।

इस प्रकार कला का मानव-जीवन से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध जाने-अनजाने में ही हो गया। आगे चलकर लोग संगीत, नृत्य, वाद्य, चित्र आदि ललित कलाओं को ही कला कहने के आदी हो गये, बाकी की कलाएँ या तो शिल्प में गतार्थ हो गईं या फिर व्यवसाय के अन्तर्गत हो गईं। पश्चिम के सम्पर्क से ललित कलाओं को छोड़कर सिर्फ कला जीवन यापन की एक पद्धति या शैली बन गई, जीवन-शोधन की एक प्रक्रिया हो गई। इससे भी आगे बढ़कर कला भोग-विलास के साधनों एवं उपकरणों तथा सौन्दर्य प्रसाधन के अर्थ में प्रयुक्त होने लगी परन्तु यह कला की विकृति है, कला की विसंगति है, जो कला को बदनाम करने के लिए तथा जीवन को विकृत बनाने के लिए है।

इस प्रकार कला का मानव जीवन से सम्बन्ध होने पर भी वह हितावह नहीं, जीवन के लिए श्रेयस्कर नहीं।

वास्तव में ज़िन्दगी जीना भी एक कला है। कई लोगों को यह अजीब-सा लगता है कि ज़िन्दगी तो हम स्वाभाविक रूप से जी ही रहे हैं, पर वह कला कैसे? मैं कहता हूँ- क्या कुत्ते, बिल्ली आदि पशुओं का सा जीवन जीना अच्छा है या शानदार, सरस एवं मधुर जीवन जीना अच्छा है?

सभी मनुष्यों के पास प्रायः हाथ, पैर, आँख, नाक, कान जीभ आदि अवयव रहते हैं, गँवारों के पास भी, अमीरों के पास भी और सुसंस्कृत शिक्षितों के पास भी किन्तु गँवार या फूहड़ व्यक्ति जीवन को कलात्मक ढंग से जीना नहीं जानते और न ही वे अमीर जानते हैं, जिनके घर में पैसे की कमी नहीं, कार है, बंगला है, ऐशो-आराम की सभी वस्तुएँ हैं पर यह सब होते हुए भी ऐसा लगता है कहीं कोई कमी है। कहीं न कहीं शृंखला की कड़ियाँ टूटी हुई हैं। साधन सम्पन्न होते हुए भी जीवन का सच्चा आनन्द नहीं। किसी तरह से जी रहे हैं। रो-झोंककर जीना उत्कृष्ट रूप से जीना नहीं है। उत्कृष्ट एवं परिष्कृत रूप से जीना ही वास्तव में कलात्मक जीवन है।

बहुत से लोग जिनमें धनिक, शिक्षित आदि भी हैं, उत्कृष्ट और परिष्कृत जीवन जीना नहीं जानते। अधिकांश लोग ऊँचे दर्जे के रहन-सहन, सौन्दर्य प्रसाधन, आमोद-प्रमोद, हास-विलास, इन्द्रिय-सुखभोग के साधन, स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन आदि की प्रचुरता के साथ जीने को उत्कृष्ट कोटि का जीवन मानते हैं। बहुत से लोग ज़िन्दगी को विविध उपकरणों से सजाये संवारे रहने को ही कला समझते हैं परन्तु बाह्य प्रसाधनों द्वारा जीवन की साज-सज्जा या शृंगार किये रहना कला नहीं है, यह तो मनुष्य की लिप्सा है, जिसे पूरा करने में उसे एक झूठे संतोष का आभास होता है।

फलतः वह मान बैठता है कि वह ठीक ढंग से जी रहा है। कला तो वास्तव में वह मानसिक वृत्ति है, जिसके आधार पर साधनों की कमी में भी ज़िन्दगी को खूबसूरती से जीया जा सकता है। खाने-पीने, चलने, उठने-बैठने, मल-मूत्र त्याग आदि के सभी साधन पशुओं और मनुष्यों को प्रायः एक-से मिले हैं। इसमें क्या विशेषता हुई कि मनुष्य ने खाने-पीने, पहनने, रहने के ढेर सारे साधन इकट्ठे कर लिये हैं, उससे क्या लाभ? विचारणीय है । ❖❖

आध्यात्मिक चातुर्मास का अवलोकन : चतुर्विध संघ के नाम अध्यात्म निर्देश

- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

इस लेख के प्रकाशन होने तक, अध्यात्म प्रेमी आत्मार्थी चतुर्विध संघ का वर्षावास पूर्ण होने जा रहा है। वर्षावास काल में आपने ज्ञान-ध्यान को गहराई से अनुभव किया होगा। कल्प मर्यादा अनुसार चातुर्मास काल के पश्चात विहार हुआ। चातुर्मासिक प्रतिक्रमण से पूर्व अवलोकनार्थ -

- **अनुमोदना** - चातुर्मास काल में कितना जीव के स्वभाव का पोषण हुआ। कितना जड़ देह के मिथ्यात्व व मोह का त्याग हुआ। कितना वैराग्य का पोषण हुआ। कितनी साधना वीतरागता की ओर बढ़ी। कितना समय ज्ञाता-दृष्टा भाव में बीता, उसकी अनुमोदना करते हैं।

- **प्रतिक्रमण** - जो समय जीव का विभाव में बीता। कर्त्ता-भोक्ता भाव में बीता। अपने को देह मानकर देह की साता का पोषण किया। अनुकूलता की चाह में लगे रहे। स्वाध्याय, ध्यान के अलावा जो समय संसार को दिया, संसार को सुना। भूत-भविष्य का चिंतन किया, संसार की चिंता की। पुदगलों को समय दिया, वो सब कर्म बंधन का समय था, आम्रव का था, उसका प्रतिक्रमण करें।

- **उपलब्धि** - चातुर्मास की सफलता कार्यक्रम, प्रवचन, यात्रियों के आवागमन व केवल धार्मिक क्रिया व अनुष्ठान से ही नहीं होती है। व्यवहार धर्म के अनुसार धर्म ध्यान के अनुष्ठान करवाने होते हैं किन्तु इतनी मात्रा से तृप्त नहीं होना है, इतने से तृप्त हुए तो केवल शुभ तक चातुर्मास रह जायेगा, लेकिन हमारी साधना संवर-निर्जरा की है। हमने शुभाशुभ से पार शुद्धोपयोग तक पहुंचकर कर्मक्षय की धारा को अखण्ड चलाना है। हम चतुर्विध संघ में धर्म आराधना क्यों करते, करवाते हैं कि हमारी - दृष्टि व्यवहार से निश्चय की ओर आये। देह से आत्मा की ओर बढ़े। सम्बन्धों से परे हम प्रत्येक जीव को महत्व दें, प्रत्येक में जीव के दर्शन करें।

- **मुनि बनने का उद्देश्य** - संसार के आम्रव छोड़कर हम महाव्रती बनें क्योंकि संसार जीव की साधना में बाधक लगा, इस व्यवहार के साथ हम अपने जीव तत्व को समय नहीं दे पायेंगे। अतः हमने सिद्धत्व के लक्ष्य से त्याग, वैराग्य के साथ वीतरागता के लिए संसार का त्याग किया।

- **आत्म ग्वेषण** - आज प्रत्येक मुनि अपना चिंतन करें। क्या मेरा वैराग्य बढ़ा है? क्या मैं अपने जीव तत्व को समय दे पा रहा हूँ? अगर नहीं दे पा रहे हैं तो जो सम्बन्ध मैंने संयम लेने के बाद जनता से बनाये हैं तो उन सम्बन्धों को त्याग कर अपने लक्ष्य को प्रमुखता दें।

- पुदगलों में सुख मानकर पुदगल की चिंता कर रहा हूँ, पुदगल का संग्रह कर रहा हूँ एवं भविष्य की चिंता कर रहा हूँ तो फिर मेरे भीतर मिथ्यात्व प्रवेश कर गया है क्योंकि सम्यक्त्व कहती है मैं जीवात्मा हूँ। मेरे पास, मेरे अलावा, मेरा कुछ नहीं, मेरा कोई नहीं है। अगर इस वाक्य पर श्रद्धा नहीं है तो निश्चय-नय से हम मिथ्यात्व में है। व्यवहार के नाम पर निश्चय को गौण न करें।

- **साधना के प्रति सजगता** - तीर्थवासी कोई भविष्य की चिंता न करे। कर्म-सिद्धान्त पर श्रद्धा करें और अपने जीव को समय दें। प्रत्येक साधु-साध्वीवृंद व श्रावक-श्राविका वर्ग से अनुरोध है कि वे भूत व भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान में अपने जीव को समय दे। जीव को दिया गया समय आपको सिद्धत्व की ओर ले जाएगा। पुद्गल को दिया गया समय आपको संसार की ओर ले जाएगा। पुद्गल अर्थात अपनी देह एवं देह से जुड़ा व्यक्ति, वस्तु व स्थान को दिया गया समय कर्म आम्रव का कारण बनता है।

अतः अपने जीव का ध्यान करें, जीव को समय दें। अगले चातुर्मास तक यही पुरुषार्थ करें, शेषकाल में व्यक्तिगत साधना को महत्व दें। वर्षावास के पश्चात् साधु-साध्वीवृंद विहार करेंगे, सभी साधु-साध्वी क्षेत्र स्पर्शना को विशेष महत्व दें। हमारे विहार ग्रामानुग्राम हों, वर्तमान में हम शहरों की ओर दौड़ रहे हैं। छोटे-छोटे गांव को फरसते हुए वहां अत्यधिक धर्म संस्कारों का सिंचन करें।

श्रावक-श्राविकाएं अम्मा-पिया की भूमिका निभाते हुए विहार सेवा में विशेष लक्ष्य दें। साधु-साध्वी पूर्ण सजगता के साथ विहार यात्रा करें। विहार यात्रा में पूर्व में दिए गए सभी निर्देश अपनायेंगे तो हमारा विहार सुरक्षित होगा। आने वाले शरद् कालीन चातुर्मास सुसम्पन्न होने हेतु आपको खूब-खूब शुभमंगलकामनाएं। आपका जीवन स्व-पर-कल्याण में अग्रसर हो। ❖❖

हमारे पट्टधर

सन्दर्भ : जैन धर्म का मौलिक इतिहास

1 आचार्य – तीर्थंकर प्रभु के बाद जिन शासन का एक सबसे महत्वपूर्ण अंग। संघ का संगठन, संचालन, संरक्षण, संवर्धन, अनुशासन एवं सर्वतोमुखी विकास-अभ्युत्थान का मुख्य उत्तरदायित्व आचार्य पर रहता है।

अनेक शास्त्रों में आचार्य भगवन्त की महिमा बताई गई है। इन्हीं परम उपकारी आचार्यों के अथक, अनुपम योगदान के कारण ही आज 2550 वर्ष के उपरांत भी जैन धर्म, प्रभु की वाणी अक्षुण्ण रूप से आज तक अविरल बह रही है। आचार्य भगवन् 7 पदों में सर्वोपरि हैं। आचार, सूत्र, शरीर, वचन, वाचना, मति, उपयोग एवं संग्रह – ये 8 संपदा यानि उच्च गुणों के धनी हैं। अठारह हजार शीलांग रथ के धारणहार, 36 गुणों के स्वामी होते हैं। ऐसे कहें तो सातों पदों का मुख्य उत्तरदायित्व आचार्य पर रहता है, जो संयोग अनुसार अन्य छहों पदों का भी कार्य निर्वहन करते हैं।

2 उपाध्याय – आचार्य के बाद मुख्य महत्वपूर्ण पद उपाध्याय भगवन्त का है। जो जैन दर्शन ज्ञान एवं क्रिया के समन्वित अनुसरण पर आधारित रहता है। ज्ञान को अत्यंत मूलभूत तत्त्व कहा गया है। उपाध्याय भगवन्त 25 गुणों से युक्त होकर संघ के श्रमण-श्रमणी की ज्ञानाराधना में सहायक बनते हैं। द्वादशांगी के अर्थ एवं पूर्ण समझ के साथ सूत्र-वाचना देना उपाध्याय का प्रथम कर्त्तव्य है।

3 प्रवर्तक – आचार्य के बहुविध उत्तरदायित्व के सम्यक् निर्वहन में सुविधा हेतु इस पद का भी महत्व है। संघ के, श्रमण के कल्याण हेतु तप, संयम की प्रशस्त योगमूलक अन्य प्रवृत्तियों में उनकी योग्यता परखकर उनका उत्साह बढ़ाते हुए मोक्ष मार्ग की आराधना करवाएं, यह इनके मुख्य कार्यों में शामिल है।

4 स्थविर – मूल अर्थ है प्रौढ़ या वृद्ध। दस प्रकार के स्थविर में श्रमण जीवन से संबंधित अंतिम तीन प्रकार हैं –

वय स्थविर – जिस श्रमण की उम्र 60 वर्ष या उससे ऊपर हों।

श्रुत स्थविर – समवाय आदि अंग आगम के ज्ञाता श्रमण हों।

पर्याय स्थविर – जिनकी दीक्षा को 20 वर्ष या अधिक समय हो गया हो।

इनका कर्त्तव्य संघ के श्रमणों को धर्म, साधना, संयम में स्थिर जागरूक एवं प्रयत्नशील बनाये रखना।

5 गणी – सामान्यतः इसका अर्थ है – साधु समुदाय का अधिपति। विशेष अर्थ कहें तो ये इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि आचार्य भी इनसे वाचना ले सकते हैं।

6 गणधर – आगम वाङ्मय में गणधर के दो अर्थ बतलाये हैं। एक तीर्थंकर भगवान के प्रमुख शिष्य, जिन्हें सूत्र आत्म गम्य होते हैं, द्वादशांगी के कर्ता, अपने गण को वाचना देने वाले होते हैं। दूसरा अर्थ संयमी जीवों को जाग्रत कर प्रेरणा देते रहने वाले श्रमण।

7 गणावच्छेदक – श्रमण संघ के श्रमणों की संयम-यात्रा के सुचारु निर्वहन हेतु उपधि (उपकरण) आदि आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले प्रयत्नशील श्रमण।

इन सातों पदों के लिए कुछ योग्यताएं आवश्यक कही गई थीं – जैसे कम से कम 8 वर्ष का संयम पर्याय, अनाचार रहित चारित्र के स्वामी, बहुश्रुत विद्वान, कम से कम स्थानांग एवं समवायांग सूत्र के ज्ञाता, आचार, संयम, प्रवचन, प्रज्ञा, संग्रह परिपोषण में कुशल हों, उन्हें इन 7 पद पर अधिष्ठित कर सकते हैं।

कुछ विशेष संयोग में 5 वर्ष आचार्य पद, उपाध्याय पद व 3 वर्ष संयम पर्याय भी योग्य कहा गया है। ❖❖

दो वर्ष बाद आप, अपने किसी दर्जी के पास जाते हो, तो वो भी फिर से आपके शरीर का नाप लेता है। यह सोचकर कि हो सकता है आप में कुछ बदलाव आया हो। ठीक उसी प्रकार यदि आप दो वर्ष बाद किसी व्यक्ति से मिलो, जिसने आपके साथ कोई गलत व्यवहार किया हो, तो उसके साथ पुराने नाप की तरह नहीं मिलना चाहिए क्योंकि हो सकता है कि उसमें भी कोई परिवर्तन आया हो। ❖❖

श्रमणसंघीय आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. की सहमति स्वरूप ...

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण वर्ष कैसे मनाएं ?

प्रस्तुति - उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

आराध्य महाप्रभु भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। इस अवसर पर समाज को, सन्त-साध्वियों को क्या करना चाहिये, इस विषय पर दिनाँक 5 नवम्बर 2023 को आचार्य भगवन्त डॉ. श्री शिवमुनि जी म. की सहमति से श्रमणसंघीय उपाध्याय प्रवरों एवं प्रवर्तक मण्डल द्वारा निम्नलिखित तथ्य सर्वसम्मत्ति से स्वीकार किये गये, साथ में यह भी तय हुआ कि इन सभी तथ्यों से जैन कॉन्फ्रेंस एवं समस्त श्रीसंघों को विदित करवा दिया जाये।

1. यह वर्ष सेवा वर्ष के रूप में मनाया जाना चाहिये। अहिंसा का एक नाम सेवा है। सेवा करना अहिंसा की ही आराधना है। वर्ष भर सेवा के कार्य चलते रहने चाहिएं। विशेष रूप से जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणकों पर विशेष आयोजन कर धर्म-प्रभावना करें, भगवान महावीर स्वामी की शिक्षाओं एवं संदेश जन-जन तक पहुंचे। सेवा परम धर्म का उद्घोष हो।
2. वर्ष में जैन धर्म की चारों परम्पराओं के संयुक्त कार्यक्रम भी आयोजित किये जाएं तथा औरों के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर जैनत्व की एकता का संदेश दें।
3. भगवान महावीर शताब्दी का एक फ्लैक्स हर स्थानक पर लगाना चाहिये।
4. जैन धर्मस्थलों, घरों, कार्यालयों, फैक्ट्रियों पर जैन ध्वज लगायें।
5. सर्वत्र जैन स्थानकों से प्रभात फेरी का आयोजन हो।
6. गरीबों को भोजन वितरण, औषध दान हो।
7. भगवान महावीर की जीवन पुस्तकों का वितरण हो।
8. स्वास्थ्य कैम्प, नेत्र शिविर, रक्तदान शिविर आदि और चिकित्सा शिविरों का आयोजन समाज द्वारा आयोजित हो।
9. डिस्पैंसरियों, जैन अस्पतालों में तीर्थंकर भगवन्तों के कल्याणकों पर निःशुल्क सेवा।
10. जैन स्कूलों-कॉलेजों में गरीब बच्चों को वर्ष के अन्तर्गत निःशुल्क शिक्षा दें।
11. सामाजिक स्तर पर सर्दियों में ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि का वितरण करें।
12. बाल जैन शिक्षा शिविर आयोजन हों। भगवान महावीर चारित्र अवश्य पढ़ायें।
13. महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन का आयोजन तथा और भी सेवा व समाज उन्नत्ति के नियमित कार्य इस वर्ष से जोड़ें।
14. स्कूलों, शिक्षा संस्थानों में भाषण प्रतियोगिता, काव्य प्रतियोगिता का आयोजन हो।
15. प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार का पुरुषार्थ करें।
16. क्षेत्र में विराजित पूज्य मुनिराज-पूज्या महासाध्वियों जी म. से विनती कर भगवान महावीर कथा श्रवण करें।
17. जैन समाज के सभी आयोजन 2550वें वर्ष के अन्तर्गत हों।
18. इस वर्ष में सामायिकों का विशेष आयोजन किया जाये।
19. जो सन्त-साध्वी अथवा श्रावक-श्राविका उत्तराध्ययन सूत्र, मौखिक याद करके सुनायें, उनको सम्मानित किया जाये, शास्त्र स्वाध्याय पर बल दिया जाये।
20. भगवान महावीर सम्बन्धी स्टेशनरी, पैन, डायरी, स्टीकर बनवाये जायें। ❖❖

कोई भी लक्ष्य
मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं,
हारा तो है बस वही
जो कभी लड़ा ही नहीं ।।

रात्रि भोजन

- श्रमणसंघीय सलाहकार पू. डॉ. राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

जितने भी शरीरधारी प्राणी हैं, वे सभी भोजन अवश्य करते हैं क्योंकि भोजन शरीर की आवश्यकता है, खुराक है। जैन धर्म में भोजन संबंधी विशेष चर्चाएं कई बार की गई हैं तथा कहा गया है कि मनुष्य को शरीर एवं जीवन निर्वाह हेतु ही भोजन करना चाहिए, वह भी शुद्ध सात्विक तथा दिन में ही। रात्रि भोजन कभी नहीं करना चाहिए।

रात्रि-भोजन विविध दृष्टि से मानव के लिए अहितकर, हानिप्रद है। रात्रि के समय भोजन पकाते समय कई बार असावधानी वश उसमें विषैले उड़ने वाले, चलने वाले जीव-जन्तु गिर जाते हैं। कई बार सामूहिक भोज में छिपकली आदि भी गिर जाती है, जिससे सामूहिक रूप में लोग Food Poison के शिकार होते हैं तथा प्राणों से हाथ तक धो बैठते हैं।

यह प्रत्यक्ष देखने में आता है कि रात्रिकाल में बहुत से उड़ने वाले जीव-जन्तु अधिक मात्रा में घूमते हैं तथा दिन के उजाले में वे इधर-उधर छिपे रहते हैं। रात्रिकाल में उड़ने व घूमने वाले कीट-पतंगें मनुष्य के भोजन में गिरकर उदर में पहुंच जाते हैं जिससे स्वास्थ्य तो प्रभावित होता ही है, साथ में हिंसक प्रवृत्ति से पाप-कर्म का भी बंध होता है। इसीलिए रात्रि-भोजन को अन्धा भोजन भी कहा है और अहिंसक व शाकाहारी प्राणी के लिए रात्रि-भोजन किसी भी दृष्टि से ग्राह्य नहीं है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी सूर्य के प्रकाश में किया गया भोजन शीघ्र पचता है तथा रात्रि के समय किया गया भोजन कठिनता से पचता है। प्रायः देखने में आता है कि बहुत से पक्षी भी ऐसे हैं जो सूर्यास्त के बाद रात्रि को कुछ भी खाते नहीं, यहां तक कि पानी तक नहीं पीते हैं।

जैन शास्त्रों में तो रात्रि-भोजन निषेध है ही, जैनेतर ग्रंथों कूर्म पुराण आदि में भी रात्रि भोजन को दोषपूर्ण कहकर निषिद्ध कहा है।

चिकित्सा शास्त्र विशेषकर आयुर्वेद में भी रात्रि भोजन को हानिप्रद कहकर वर्जित किया है। प्राचीन काल में तो विवाह-शादी में भी रात्रि भोजन से परहेज किया जाता था। वर्तमान समय में रात्रि भोजन का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इसी कारण देखने में आ रहा है बदहज़मी, गैस प्रकोप, ब्लड प्रैशर, हृदय रोग, शूगर आदि रोगों की अभिवृद्धि होती जा रही है।

अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा अहिंसा के दृष्टिकोण से भी रात्रि भोजन निषेध का जैन धर्म का सिद्धांत सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय है।

जैन धर्म में अध्यात्म व शरीर स्वास्थ्य की दृष्टि से रात्रि भोजन निषेध के साथ-साथ बिना छना हुआ पानी पीने का भी निषेध है। कई बार देखने में आता है कि पानी में कई तरह के चलते-फिरते सूक्ष्म कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं और बिना छना पानी पीने से वे कीटाणु पेट में चले जाते हैं और कुछ असाध्य रोगों का कारण बन जाते हैं। इसलिए जैन धर्म में पानी को छानकर तथा पानी को गर्म करके पीने का विधान है। हिंसा एवं पाप कर्म से बचने के लिए पानी प्रयोग करने की मर्यादा का विधान है तथा प्रासुक (अचित्त) जल सेवन का नियम जैन मुनि के लिए आजीवन रहता है ।

सारांश में इतना ही कहा जा सकता है कि रात्रि भोजन निषेध तथा गर्म करके अथवा अचित्त पानी छानकर पीना, दोनों ही स्वास्थ्य एवं धार्मिक उभय दृष्टि से हितकर व लाभप्रद हैं।

महात्मा गांधी ने जीवन के अंतिम चालीस वर्षों में रात्रि भोजन त्याग करके नियम को दृढ़तापूर्वक निभाया था। वे यूरोप गए, तब भी इस नियम का पालन किया। इन सब बातों को जानकर प्रत्येक जैन व प्रत्येक मानव को रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। ❖❖

काम पाणी सूं है,
कचरा सूं कांई लेणो है ।
काम हीरा सूं है,
भाटा सूं कांई लेणो है ।
जो जैसा करे ला वो वैसा भरे ला,
आपणे तो फूलां सू काम है,
कांटा सूं कांई लेणो है ।

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

मेवाड़ भूषण पू. गुरुदेव श्री मोतीलाल जी महाराज

महिमा मण्डित मेवाड़ भूषण श्री मोतीलालजी म.सा. का जन्म स्थान चित्तौड़गढ़ जिलान्तर्गत ऊँठाला (वल्लभ नगर) है। जहाँ बीसा ओसवाल सांभर गोत्रीय श्री धूलचन्द जी की धर्मपत्नी का नाम सुश्राविका श्रीमती जड़ावदेवी था। उन्होंने एक स्वप्न में मोतियों की माला देखी। कालान्तर में उन्होंने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। उसका नाम मोतीलाल रखा गया। कहते हैं, धूल में फूल खिला करते हैं। वास्तव में, धूलचन्द जी के यहाँ ऐसा फूल खिला, जिसकी सुरभि से मेवाड़ के जैन जनमानस का दिग्दिगन्त वर्षों तक सुरभित रहा।

श्री धूलचन्द जी के घर में वातावरण शान्त और संस्कार युक्त था। अतः बालक मोतीलाल स्वभाव से मृदु था, पवित्र वातावरण में संस्कारयुक्त सुनियोजित तरीके से ढलने लगा। बालक मोतीलाल का सन्त दर्शन और धर्म वाणी श्रवण का एक विशेष चाव रहता था, इन्हीं कारणों से उसमें विशेष गुण पनपने लगे।

एक बार की बात है, माँ ने उसे कुछ ककड़ियाँ काटने को दीं। कहा गया कि कड़वी को छोड़कर मीठी को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट देना। बालक मोतीलाल संत समागम से इतना तो जान गया कि वनस्पति में जीव है। इसे काटना पाप है। इच्छा नहीं होते हुए भी माँ को इन्कार नहीं कर पाया। उसने कड़वी-मीठी सभी ककड़ियाँ साथ में काट डालीं। माँ ने टुकड़ों को चख कर देखा तो सब मिली हुई थीं।

माँ ने कहा - 'यह क्या किया?' मोतीलाल ने कहा- 'मुझे तो कुछ साफ-साफ मालूम नहीं पड़ा कि कड़वा क्या और मीठा क्या?' माँ ने कहा- 'भविष्य में तू ककड़ियाँ कभी मत काटना ।' मोतीलाल ने कहा- 'मैं भी तो यही चाहता हूँ।' उसके बाद माँ ने कभी ककड़ियाँ नहीं कटवाई और मोतीलाल इस पाप से साफ बच गया।

वि. सं. 1943 में जन्म लेकर इन्होंने 1960 में संयम ग्रहण किया। बाल्यावस्था में ही माँ का वियोग सहना पड़ा। श्री मोतीलाल जी थोड़ा ही पढ़ पाये, मगर योग्यता थोड़ी नहीं थी। माता के अभाव में घर की देखभाल के अलावा पिता के व्यापार में हाथ बंटाते थे जिससे व्यापार कला में बहुत समझदार बन गए। श्री धूलचन्दजी क्रमशः वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहे थे। अपने सुयोग्य पुत्र को देखकर फूले नहीं समाते थे। वे सपने संजो रहे थे। शीघ्र ही एक बहू मेरे घर में आये। युवक मोतीलाल के विवाह के प्रस्ताव चल रहे थे कि अचानक श्री धूलचन्द जी का देहावसान हो गया। मातृ-पितृ वियोग से संसार के प्रति रहा-सहा अनुराग भी समाप्त हो गया।

पूज्य श्री एकलिंगदासजी म.सा. उस समय मेवाड़ धर्मसंघ के प्रथम संत थे। वे ऊँठाला पधारे। श्री मोतीलाल जी के लिए मानो स्वर्ण सूर्य का उदय हो गया। उन्होंने अपने को त्याग, तप और ज्ञानाराधना में लगा दिया। पूज्य श्री एकलिंगदासजी म. युवक मोतीलाल जी के इस आध्यात्मिक अभ्युदय से बड़े प्रभावित हुए, उन्होंने सुपात्र समझकर तत्वोपदेश दिया। वैराग्य की उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान लहरों में झूमते युवाहृदय श्री मोतीलाल जी ने अपने सम्बन्धियों के सामने संयम का प्रस्ताव रखा। वि. सं. 1960 मार्गशीर्ष शुक्ला 7 के शुभ दिन सनवाड़ में पूज्य श्री एकलिंगदासजी म. ने दीक्षा प्रदान की। दीक्षा लेते ही नवदीक्षित मुनिश्री जी ने एक समय भोजन वह भी रूखा व ठण्डा लेना प्रारम्भ कर दिया। उनकी साधना मात्र आहार त्याग तक ही नहीं थी अपितु ज्ञान, दर्शन की ओर भी उन्मुख थी। शास्त्रीय अध्ययन के संग अन्य धर्म ग्रन्थों का अध्ययन भी चल रहा था।

उस युग में लेखन का बड़ा महत्व था। प्रकाशित पुस्तकें कम थीं। अधिकतर हस्तलिखित पुस्तकों का ही प्रचलन था। मुनिश्री बड़ी गम्भीरता के साथ लेखन कार्य में प्रवृत्त हुए। आपको लोगस्स की हस्तलिखित प्रति की ज़रूरत हुई। लेखक मुनि के पास समय नहीं होने के कारण आपने ही लेखन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। प्रयास इतना अधिक सफल बना कि आपके अक्षर मोती की लड़ियों की भाँति चमकने लगे। आपने अनेक शास्त्र, चरित्र, ढालें हाथों से लिखकर समाज पर उपकार किया था। आज हम प्रकाशन परम्परा में हैं परन्तु हम लेखन परम्परा के ऋणी हैं। यदि लेखन परम्परा भारत में नहीं होती तो हमारे सभी शास्त्र और पूर्वजों की रचनाएँ हम तक नहीं पहुँच पातीं। हम नितान्त रीते ही होते।

वि.सं.1987 में मेवाड़ संघ के आचार्य श्री एकलिंगदासजी म. का ऊँठाला में स्वर्गवास हो गया। अनेक प्रयत्नों के बाद

वि. सं. 1995 ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया के शुभ दिन लावा-सरदारगढ़ में मुनिश्री मोतीलाल जी म. को मेवाड़ के आचार्य पद पर अभिसिक्त किया गया। आचार्य श्री के व्यक्तित्व में एक जादू तथा विलक्षण ओज था।

मारवाड़ सादड़ी में आचार्यश्री जी का चातुर्मास था, कुछ उपद्रवी तत्व सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के समय द्वार पर नाचने लगे, ढोल बजाने लगे और चिल्लाने लगे। श्रावकवर्ग जो प्रतिक्रमण में लगा था, इस चिल्लाहट से कुछ उद्वेलित हो गया। श्रावक प्रतिकार को उद्यत हुए तो आचार्यश्री ने रोक दिया। दूसरे दिन वह चमत्कार हुआ कि सारे अपराधी तथा उपद्रवी तत्व श्रीसंघ के चरणों में पहुँच कर क्षमायाचना करने लगे। पूज्यश्री जी जब कहीं विहार करते तब जो भी व्यक्ति उन्हें देखता, उनसे प्रभावित होकर नतमस्तक हो जाता। प्रायः गाँवों में अनपढ़ किसान मुनियों को देखकर उनका हंसी ठठ्ठा कर लिया करते परन्तु पूज्यश्री को कोई देख लेता तो वह बैठा हुआ होता तब भी तुरन्त खड़ा हो जाता। पूज्यश्री भी खड़े होकर उसकी भक्ति को रचनात्मक रूप देने लगते। कुछ त्याग-प्रत्याख्यान कराते हुए आगे बढ़ जाते।

एक बार खमनोर चातुर्मास में ईद का दिन था। वह बकरा ईद थी। एक बकरा शाम को किसी तरह अपने बन्धन से छूट आया जो सीधा पूज्यश्री के पाट के नीचे आकर बैठ गया। रात भर उसी तरह बैठा रहा। प्रातः उसके अधिकारी को बुलाया। वह बड़ा आग बबूला था, पूज्यश्री के दर्शन करते ही पानी-पानी हो गया। उसने तुरन्त वन्दन कर बकरे को अमर करने की घोषणा कर दी। उसने कहा - 'संत का दरबार है, वही खुदा का दरबार है। मेरा बकरा यहाँ पहुँच गया तो खुदा के पास ही पहुँच गया, खुदा से जो मिला, उसे कोई इन्सान कैसे मार सकता है?' उसके पास एक बकरा और था, उसे भी उसने अभयदान दे दिया। एक बार पूज्यश्री मोतीलाल जी म. का चातुर्मास तिरपाल (मेवाड़) में था। वहाँ पर पचरंगी के दिन बीच बाज़ार में क्षत्रिय बकरों तथा पाड़ों का वध कर वहीं पका कर खाते। बाज़ार में सारी बस्ती अहिंसक समाज की

थी। इस कुकृत्य को रोकने के सभी प्रयास के साथ सरकारी कार्यवाही तथा शक्ति भी बेकार रही। होली चातुर्मास पर पूज्य श्री मोतीलाल जी म. वहीं पर विराज रहे थे। प्रतिदिन प्रवचन भी बीच बाज़ार में ही हो रहे थे। ज्यों-ज्यों पचरंगी दिन पास आता जा रहा था, त्यों-त्यों अहिंसा और धर्मप्रेमी जनता को उस क्रूर घटना की चिंता सता जा रही थी। पूज्य श्री मोतीलालजी म. के समझाने पर क्षत्रिय समाज के लोग मान गये। वहाँ हमेशा के लिए खून की होली बन्द कर आपस में मिठाई वितरित कर अहिंसा का एक नया इतिहास रचा गया।

राजाजी का करेड़ा में कालोजी के स्थान पर हिंसा बन्द करवाई। बदनौर में 120 गाँवों में अगता पलवाया। झाड़ौल में बलि बन्द करवाई। राशमी में देवी के मन्दिर में पाड़े की बलि बन्द करवाई। बदनौर में ठाकुर साहब के यहाँ विवाह में माँसाहारी भोज बन्द कराकर शाकाहारी भोज का श्रीगणेश करवाया। डूंगला, बम्बोरा, वल्लभ नगर आदि गाँवों से तड़े तुड़वाने का कार्य किया। जिससे गाँव में एकता कायम रहे। मसूदा के राजघराने के पर्दे खत्म करवाये। आकोला (मेवाड़) के यादवों में मदिरापान की प्रवृत्ति अधिक थी, उन भाइयों को मदिरापान का त्याग करवाया। मसूदा में पूज्यश्री जी जंगल की ओर पधार रहे थे। मार्ग में मसूदा दरबार का हाथी बंधा था। पूज्यश्री को देखकर हाथी नतमस्तक हो गया।

स्थानकवासी जैन मुनियों का मारवाड़ सादड़ी में वृहद् साधु-सम्मेलन हुआ, जिसमें आपने संघ हित में अपना आचार्य पद त्याग दिया। सम्मेलन में उन्हें 'मंत्री' पद से विभूषित किया गया। पूज्यश्री स्थानकवासी जैन सिद्धान्त के प्रति अर्थात् आगमीय कल्प के प्रति बड़े आस्थावान व गौरवानुभूति से ओत-प्रोत थे और अन्य सम्प्रदायों के प्रति उनके मन में कोई द्वेष नहीं था। बनेड़िया में शान्त क्रान्ति के अग्रदूत, परम पूज्य उपाचार्य प्रवर श्री गणेशलालजी म., पूज्यश्री जी के दर्शनार्थ पधारे, तब श्रमण संघ नया बना ही था। श्री मोतीलालजी म. मंत्री पद पर थे। दोनों का छोटे-बड़े भाई जैसा मधुर मिलन रहा।

पूज्यश्री एक बार गिलुंड में विराजित थे। डाकुओं का एक दल गाँव को लूटने के लिए चला आया पर डाकू के सरदार ने ज्यों ही पूज्यश्री का नाम सुना तो वे तत्काल वापिस चले गये। उस दिन उन्होंने काबरा गाँव को लूटा। वल्लभनगर के दस-बीस सज्जन पूज्यश्री के दर्शनार्थ गिलुंड बैलगाड़ियों पर जा रहे थे। मार्ग में काबरा गाँव आता है। गाड़ियाँ देखते ही डाकुओं ने घेर लिया। सरदार आया, उसने पूछा-'कहाँ जा रहे हो?' गाड़ीवान ने कहा - 'गिलुंड में श्री चौथमल जी म. के दर्शन करने जा रहे हैं।' सरदार ने उसे एक थप्पड़ लगा दिया।

इतने में गाड़ी में से महाजन ने कहा - 'हम श्री मोतीलालजी म. के दर्शन करने जा रहे हैं।' डाकू ने कहा- 'तुम्हारा कहना ठीक है। गिलुंड में परम पूज्य श्री मोतीलालजी म. हैं, पूज्यश्री को देखकर आ रहा हूँ। यह डाका गिलुंड में पड़ने वाला था पर महाराज वहाँ ठहरे हुए हैं, इसलिए हम वहाँ से हटकर यहाँ आये हैं।' सरदार ने आगे कहा- 'तुम सभी यहाँ रुक जाओ।' एक जाजम बिछाकर सभी को बिठा दिया। एक महाजन अपने सोने के बटन, चेन, अंगूठी आदि छिपाने लगा तो डाकू ने कहा- 'तुम व्यर्थ क्यों छिपा रहे हो? हम लेना चाहेंगे तो बन्दूक की नोक पर सब निकलवा लेंगे किन्तु हमें लेना नहीं है। आप लोग महाराज के दर्शनों को जा रहे हैं। पूज्य गुरुदेव के दर्शनों को जाने वालों को हम नहीं लूटा करते।' अब डाका पूरा हुआ, बड़े प्रेम से डाकुओं ने महाजनों को विदा दी।

पूज्यश्री जी की जन्म भूमि, दीक्षा भूमि और निर्वाणभूमि यद्यपि मेवाड़ रही, पर कार्य क्षेत्र, विचरण क्षेत्र केवल मेवाड़ तक सीमित न रहा। पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, गुजरात आदि क्षेत्रों में विचरण हुआ। जीवन के आख़िरी 22 वर्षों तक मेवाड़ सम्प्रदाय के शासन का बड़े सुन्दर ढंग से संचालन किया।

इस बीच कई दीक्षाएं पूज्यश्री के हाथों से हुईं। हज़ारों उपकार हुए। धर्मसंघ आपके नेतृत्व में फला-फूला। जीवन के अंतिम वर्षों में देलवाड़ा (मेवाड़) में पाँच वर्षों तक आप स्थानापन्न रहे। वि.सं. 2015, श्रावण शुक्ला 14 की सायं वेला में 6.45 बजे पूज्यश्री का स्वर्गवास हो गया। वास्तव में पूज्यश्री जी मेवाड़ के आस्था केन्द्र थे।

❖❖

दिल को छू लेने वाला किस्सा

जिन घरों में मैंने अखबार वितरित किया उनमें से एक का मेलबॉक्स अवरुद्ध था, इसलिए मैंने दरवाजा खटखटाया। अस्थिर कदमों वाले एक बुजुर्ग व्यक्ति श्री बनर्जी ने धीरे से दरवाज़ा खोला। मैंने पूछा, 'सर, मेलबॉक्स का प्रवेश द्वार क्यों अवरुद्ध है?' उन्होंने जवाब दिया, 'मैंने जानबूझकर इसे ब्लॉक किया है।' वह मुस्कुराए और कहा, 'मैं चाहता हूँ कि आप हर दिन मुझे अखबार दें। कृपया दरवाजा खटखटाएं या घंटी बजाएं और मुझे व्यक्तिगत रूप से सौंप दें।'

मैं हैरान हो गया और जवाब दिया, 'ज़रूर, लेकिन यह हम दोनों के लिए असुविधा और समय की बर्बादी लगती है।' उन्होंने कहा, 'यह ठीक है, मैं तुम्हें हर महीने 500 रुपये अतिरिक्त दूंगा।' विनती भरी अभिव्यक्ति के साथ, उन्होंने कहा, 'अगर कभी ऐसा दिन आए जब आप दरवाजा खटखटाएं और मैं न आ सकूं, तो कृपया पुलिस को बुलाएँ!' मैं चौंक गया और पूछा, 'क्यों?' उन्होंने उत्तर दिया, 'मेरी पत्नी का निधन हो गया, मेरा बेटा विदेश में है और मैं यहाँ अकेला रहता हूँ, कौन जानता है कि मेरा समय कब आएगा?' उस पल, मैंने बूढ़े आदमी की धुंधली और नम आँखें भी देखीं। उन्होंने आगे कहा, 'मैंने कभी अखबार नहीं पढ़ा, मैं खटखटाने या दरवाज़े की घंटी बजने की आवाज़ सुनने के लिए इसकी सदस्यता लेता हूँ। एक परिचित चेहरा देखने और कुछ शब्दों और खुशियों का आदान-प्रदान करने के लिए!' उसने हाथ जोड़कर कहा, 'नौजवान, कृपया मुझ पर एक एहसान करो! यह मेरे बेटे का विदेशी फोन नंबर है। यदि किसी दिन तुम दरवाज़ा खटखटाओ और मैं जवाब न दूं, तो कृपया मेरे बेटे को फोन करके सूचित करें।'

इसे पढ़ने के बाद, मुझे विश्वास है कि हमारे दोस्तों के समूह में बहुत सारे अकेले, बुजुर्ग लोग हैं। कभी-कभी, आपको आश्चर्य हो सकता है कि वे बुढ़ापे में भी व्हाट्सएप्प पर संदेश क्यों भेजते हैं, जैसे वे अभी भी काम कर रहे हैं। दरअसल, सुबह-शाम के इन अभिवादनों का महत्व दरवाज़े पर दस्तक देने या घंटी बजाने के अर्थ के समान ही है। यह एक-दूसरे की सुरक्षा की कामना करने और देखभाल व्यक्त करने का एक तरीका है।

आजकल व्हाट्सएप्प बहुत सुविधाजनक है और हमें अब समाचार पत्रों की सदस्यता लेने की आवश्यकता नहीं है। अगर आपके पास समय है तो अपने परिवार के बुजुर्ग सदस्यों को व्हाट्सएप्प चलाना सिखाएं। किसी दिन, यदि आपको उनकी सुबह की शुभकामनाएँ या साझा लेख नहीं मिलते हैं, तो हो सकता है कि वे अस्वस्थ हों या उन्हें कुछ हो गया हो। उन्हें फोन करके उनकी खोज खबर लें। कृपया अपने दोस्तों और परिवार का ख्याल रखें। एक-दूसरे के लिए हमारे व्हाट्सएप्प संदेशों के महत्व को गहराई से समझें और समझाएं।

प्रस्तुति : श्री लक्ष्मीचन्द वीरवाल जैन, उदयपुर

आईना मधुर स्मृतियों का ...

कोटि-कोटि हृदयों के तुम सच्चे जननायक थे ...

श्रमणसंघीय सलाहकार पू. गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाश जी म.

प्रेषक : युवा मनीषी श्री जागृत मुनि जी म. सा.

प्रेम, संधि और समरसता के, तुम जग में परिचायक थे,
कोटि-कोटि हृदयों के तुम सच्चे जन नायक थे,
श्रमणत्व के उज्ज्वल पथ में, एक विलक्षण साधक थे,
ओज लिए तपोवन की आभा का, एक सुशोभित मानव थे।

कहते हैं कि जब तक इंसान के अंदर का बच्चा जीवित है, तब तक अंधकारमयी निराशा की छाया उससे दूर रहती है। जीवन के अंतिम क्षणों तक कुछ ऐसा ही बाल्यपन जैसा व्यक्तित्व बना रहा हमारे आराध्य, श्रमणत्व के राही, हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक, हमारे परम अनुशास्ता, आयम्बिल तप सम्राट्, राजर्षि, श्रमणसंघीय सलाहकार पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाश जी म. सा. का, पूज्य गुरुदेव अपने श्रीचरणों में आने वाले श्रद्धालुओं के स्वभावानुसार उनके साथ ढल जाया करते थे। हास-परिहास करना, उनका स्वभाव था; लेकिन संवेदनशील विषयों पर भी वे बहुधा धीर-गंभीर होकर ही निर्णय लिया करते थे।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे एक ऐसी परम्परा में दीक्षित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसका सौरभ पूरे देश में व्याप्त है अपितु श्रद्धास्पद भावों से, आदरणीय भावों से विश्रुत है।

मैं कहना चाहूँगा कि -

किसी ने मुझमें अच्छाई देखी,
किसी ने मुझमें बुराई देखी ।
इक आप ही थे गुरुवर जिसने मुझमें,
शिष्यत्व की एक परछाई देखी।

गुरुदेवश्री जी ने तपस्या के संसार को ऐसा आलोक दिया जिसे विश्व के सभी श्रद्धालुओं ने आत्मीय भावों के साथ देखा, तप के माध्यम से आपने आत्मीय आंतरिकता को जहाँ सबल, सशक्त एवं समृद्ध बनाया वहीं आपश्री जी ने आयम्बिल तप के महत्व को जन-जन में प्रचारित-प्रसारित भी किया। हिमालय की सुरम्य वादियों के बीच स्थित ग्राम चावगाँव की लालिमा के बीच आपका जन्म जहाँ वातावरण को सुगन्ध प्रदान कर रहा था, वहीं देवभूमि की महक आपके व्यक्तित्व में यावज्जीवन बनी रही। आप लाखों भक्तों के तारणहार बने और उनके जीवन में सुख-सौख्य की बहारें प्रदान कीं। आप जहाँ निःस्वार्थ भावों के साथ समानतापूर्वक श्रावक-श्राविकाओं के साथ व्यवहार किया करते थे वहीं आपश्री जी की मृदु, मधुर एवं ममत्व से पूर्ण वाणी से श्रद्धालु भावविभोर हो जाया करते थे, निहाल हो जाया करते थे।

तपस्या के क्षेत्र में आपश्री जी की लम्बी-लम्बी मौन साधनाएं व तपस्याएं सदैव अनुकरणीय बनीं। शिष्यों की लम्बी फेहरिस्त में शामिल उनके शिष्यों ने भी तपस्या के क्षेत्र में जहाँ अनेक कीर्तिमान सुस्थापित किए वहीं आगमों के सम्बन्ध में भी श्रावक-श्राविकाओं को अनेक आगमिक सोपान प्रदान करते हुए उनके आगम ज्ञान को समृद्ध बनाया। श्रमणों की श्रेष्ठ परम्परा के बीच आपश्री जी एक देदीप्यमान नक्षत्र बनकर उभरे तथा अपनी गुरु परम्परा को और भी उत्कर्ष प्रदान किया अपितु अनुशासित बनाए रखा।

23 अप्रैल 1959 चैत्र मास की पूर्णिमा के पावन दिवस पर आपश्री जी को महाघोर तपस्वी पूज्य गुरुदेव श्री निलाहचन्द जी म. सा. के मुखारविन्द से जहाँ दीक्षा पाठ प्रदान किया गया वहीं आपश्री जी को श्रेष्ठ श्रमण उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री शान्तिस्वरूप जी म.सा. का शिष्य घोषित किया गया।

देश के लगभग हरेक प्रान्त में आपश्री जी के व्यापक विचरण से जहां जनमानस में जन-जागरण हुआ, वहीं आपश्री जी के दर्शन करने वाला श्रद्धालु आपका हो जाया करता था। चातुर्मास के दिनों में प्रति वर्ष बड़ी संख्या में देश भर के श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनार्थ पधारना, उनके प्रति अपार श्रद्धा, निष्ठा एवं समर्पण भावना को दर्शाता रहा। गुरुदेवश्री जी द्वारा प्रदत्त हास-परिहास, सरलता, सौम्यता, सहजता का वातावरण हमारे दिलों में चिर-स्मरणीय बना रहेगा और हम उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर पूरी तन्मयता से बढ़ते रहेंगे। ❖❖

यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने ...

प्रस्तुति : श्री सुरेशचदंजी छल्लाणी जैन, बैंगलोर (राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक-जैन कॉन्फ्रेंस)

एक पुरानी सी इमारत में वैद्यजी का मकान था। वैद्यजी पिछले हिस्से में रहते थे और अगले हिस्से में दवाखाना खोल रखा था। उनकी पत्नी की आदत थी कि दवाखाना खोलने से पहले उस दिन के लिए ज़रूरी सामान एक चिट्ठी में लिखकर दे देती थी। वैद्यजी गद्दी पर बैठकर पहले भगवान का नाम लेते फिर वह चिट्ठी खोलते और पत्नी ने जो बातें लिखी होतीं, उनका भाव देखते फिर उनका हिसाब करते थे। फिर परमात्मा से प्रार्थना करते कि, हे भगवान ! मैं केवल तेरे ही आदेश के अनुसार तेरी भक्ति छोड़कर यहाँ दुनियादारी के चक्कर में आ बैठा हूँ।

वैद्यजी कभी अपने मुँह से किसी रोगी से फीस नहीं मांगते थे। कोई देता था, कोई नहीं देता किन्तु एक बात निश्चित थी कि ज्यों ही उस दिन की आवश्यकता के सामान खरीदने योग्य पैसे पूरे हो जाते थे, उसके बाद वह किसी से भी दवा के पैसे नहीं लेते थे, चाहे रोगी कितना ही धनवान क्यों न हो। एक दिन वैद्यजी ने दवाखाना खोला। गद्दी पर बैठकर परमात्मा का स्मरण करके पैसे का हिसाब लगाने के लिए आवश्यक सामान वाली चिट्ठी खोली तो चिट्ठी को एकटक देखते ही रह गए। एक बार तो उनका मन भटक गया। उन्हें अपनी आँखों के सामने तारे चमकते हुए नजर आए किन्तु उन्होंने अपनी तंत्रिकाओं पर नियंत्रण पा लिया। आटे, दाल, चावल आदि के बाद पत्नी ने लिखा था - 'बेटी का विवाह 20 तारीख को है, उसके दहेज का सामान।' कुछ देर सोचते रहे फिर बाकी चीज़ों की कीमत लिखने के बाद दहेज के सामने लिखा - 'यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने।' एक-दो रोगी आए थे, उन्हें वैद्यजी दवाई दे रहे थे। इसी दौरान एक बड़ी सी कार उनके दरवाजे के सामने आकर रुकी। वैद्यजी ने कोई तवज्ज़ो नहीं दी क्योंकि कई कारों वाले उनके पास आते रहते थे। दोनों मरीज़ दवाई लेकर चले गए। एक सूटेड बूटेड साहब कार से बाहर निकले और नमस्ते करके बैंच पर बैठ गए। वैद्यजी ने कहा कि अगर आपको दवा लेनी है तो इधर स्टूल पर आएं ताकि आपकी नाड़ी देख लूँ और अगर किसी रोगी की दवाई लेकर जाना है तो बीमारी की स्थिति का वर्णन करें। वह साहब कहने लगे वैद्यजी ! आपने मुझे पहचाना नहीं। मेरा नाम कृष्णलाल है, लेकिन आप मुझे पहचान भी कैसे सकते हैं, क्योंकि मैं 15-16 साल बाद आपके दवाखाने पर आया हूँ। आपको पिछली मुलाकात का हाल सुनाता हूँ फिर आपको सारी बात याद आ जाएगी।

जब मैं पहली बार यहाँ आया था, मैं खुद नहीं आया था अपितु ईश्वर मुझे आपके पास लेकर आये थे क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर कृपा की थी और वे मेरा घर आबाद करना चाहते थे। हुआ इस तरह था कि मैं कार से अपने पैतृक घर जा रहा था। बिल्कुल आपके दवाखाने के सामने हमारी कार पंक्चर हो गई। ड्राईवर कार का पहिया उतार कर पंक्चर लगवाने चला गया। आपने देखा कि गर्मी में मैं कार के पास खड़ा था, तो आप मेरे पास आए और दवाखाने की ओर इशारा किया तथा कहा कि इधर आकर कुर्सी पर बैठ जाएं। फिर मैं कुर्सी पर आकर बैठ गया। ड्राईवर ने कुछ ज़्यादा ही देर लगा दी थी। एक छोटी सी बच्ची भी यहाँ आपकी मेज़ के पास खड़ी थी और बार-बार कह रही थी चलो न बाबा मुझे भूख लगी है। आप उससे कह रहे थे कि बेटी थोड़ा धीरज धरो, चलते हैं। मैं आपके पास बैठा था और यह सोच रहा था कि मेरे ही कारण आप खाना खाने नहीं जा रहे थे। मुझे कोई दवाई खरीद लेनी चाहिए ताकि आप मेरे बैठने का भार महसूस न करें। मैंने कहा वैद्यजी मैं पिछले 5-6 साल से इंग्लैंड में रहकर कारोबार कर रहा हूँ। इंग्लैंड जाने से पहले मेरी शादी हो गई थी, लेकिन अब तक बच्चे के सुख से वंचित हूँ। यहाँ भी इलाज कराया और वहाँ इंग्लैंड में भी, लेकिन किस्मत ने निराशा के सिवा और कुछ नहीं दिया। आपने कहा था कि मेरे भाई भगवान से निराश न होओ। याद रखो कि उसके कोष में किसी चीज़ की कोई कमीं नहीं है। आस-औलाद, धन-इज्ज़त, सुख-दुःख, जीवन-मृत्यु सब कुछ उसी के हाथ में है। वह किसी वैद्य या डॉक्टर के हाथ

में नहीं होता और न ही किसी दवा में होता है। जो कुछ होना होता है वह सब भगवान के आदेश से होता है। औलाद देनी है तो उसी ने देनी है। मुझे याद है आप बातें करते जा रहे थे और साथ-साथ पुड़िया भी बनाते जा रहे थे। सभी दवा आपने दो भागो में विभाजित कर दो अलग-अलग लिफ़ाफों में डाली थीं और फिर मुझसे पूछकर आपने एक लिफ़ाफे पर मेरा और दूसरे पर मेरी पत्नी का नाम लिखकर दवा उपयोग करने का तरीका बताया था। मैंने तब वह दवाई ले ली थी क्योंकि मैं सिर्फ कुछ पैसे आपको देना चाहता था लेकिन जब दवा लेने के बाद मैंने पैसे पूछे तो आपने कहा था बस ठीक है। मैंने जोर डाला, तो आपने कहा कि आज का खाता बंद हो गया है। मैंने कहा मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। इसी दौरान वहाँ पर एक और आदमी आया और उसने हमारी चर्चा सुनकर मुझे बताया कि खाता बंद होने का मतलब यह है कि आज के घरेलू खर्च के लिए जितनी राशि वैद्यजी ने भगवान से मांगी थी, वह ईश्वर ने उन्हें दे दी हैं। अधिक पैसे वे नहीं ले सकते। मैं कुछ हैरान हुआ और कुछ लज्ज़ित भी कि मेरे विचार कितने निम्न थे और वह सरल चित्त वैद्य कितने महान् हैं। मैंने जब घर जाकर पत्नी को औषधि दिखाई और सारी बात बताई तो उसके मुँह से निकला कि वो इंसान नहीं कोई देवता है और उसकी दी हुई दवा ही हमारे मन की मुराद पूरी करने का कारण बनेगी।

वैद्यजी आज मेरे घर में दो फूल खिले हुए हैं। हम दोनों पति-पत्नी हर समय आपके लिए प्रार्थना करते रहते हैं। इतने साल तक कारोबार ने फुर्सत ही नहीं दी कि स्वयं आकर आपसे धन्यवाद के दो शब्द कह सकें। इतने बरसों बाद आज भारत आया हूँ और कार केवल यहीं रोकी है। वैद्यजी हमारा सारा परिवार इंग्लैंड में सैटल हो चुका है। केवल मेरी एक विधवा बहन अपनी बेटी के साथ भारत में रहती है। हमारी भान्जी की शादी इस महीने की 21 तारीख को होनी है। न जाने क्यों जब-जब मैं अपनी भान्जी के भात के लिए कोई सामान खरीदता था तो मेरी आँखों के सामने आपकी वह छोटी सी बेटी भी आ जाती थी और हर सामान मैं दोहरा खरीद लेता था। आपके विचारों को जानता था कि संभवतः आप वह सामान न लें किन्तु मुझे लगता था कि मेरी अपनी सगी भान्जी के साथ जो चेहरा मुझे बार-बार दिख रहा है वह भी मेरी भान्जी ही है। मुझे लगता था कि ईश्वर ने इस भान्जी के विवाह में भी मुझे भात भरने की ज़िम्मेदारी दी है। वैद्यजी की आँखे आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं और बहुत ही धीमी आवाज में बोले कृष्णलालजी आप जो कुछ कह रहे है मुझे समझ नहीं आ रहा कि ईश्वर की यह क्या माया है कि आप मेरी श्रीमती के हाथ की लिखी हुई यह चिट्ठी देखिये। वैद्यजी ने चिट्ठी खोलकर कृष्णलालजी को पकड़ा दी। वहाँ पर उपस्थित सभी लोग यह देखकर हैरान रह गए कि दहेज का सामान के सामने लिखा हुआ था कि यह काम परमात्मा का है, परमात्मा जाने। काँपती सी आवाज़ में वैद्यजी बोले कृष्णलालजी विश्वास कीजिये कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि पत्नी ने चिट्ठी पर आवश्यकता लिखी हो और भगवान ने उस दिन उसकी व्यवस्था न कर दी हो। आपकी बातें सुनकर तो लगता है कि भगवान को पता होता है कि किस दिन मेरी श्रीमती क्या लिखने वाली है अन्यथा आपसे इतने दिन पहले ही सामान खरीदना आरंभ न करवा दिया होता परमात्मा ने। वाह भगवान वाह ! तू महान् है, तू दयावान है। मैं हैरान हूँ कि वह कैसे अपने रंग दिखाता है। वैद्यजी ने आगे कहा, एक ही पाठ पढ़ा है कि सुबह परमात्मा का आभार करो, शाम को अच्छा दिन गुजरने का आभार करो।, खाते समय उसका आभार करो, सोते समय उसका आभार करो। ❖❖

हमारी जिंदगी में भी ऐसे बहुत सारे लोग होते है,
जिनको हमारी Success बुरी लगती हैं।
वो हमेशा हमारे अंदर कोई न कोई कमीं निकालते हैं
और अगर हमसे कोई छोटी सी भी गलती हो जाए तो उसका तमाशा
बना देते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे लोगो से दूर रहना ही बेहतर होता है।

अन्न के महत्व को समझें, जूठा न छोड़ने की आदत डालें

- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन, राष्ट्रीय कार्य. समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

अन्नौ वै ब्रह्मा 'अन्नं न निन्धानत्'

अन्न को वैदिक शास्त्रों में देवता माना गया है, निश्चय ही अन्न देव पूज्यनीय है, मानवीय संस्कृति में इसे माँ अन्नपूर्णा के प्रतिरूप प्रसाद के रूप में भी माना गया है, यही कारण है कि प्राचीनकाल से ऋषि मुनियों से लेकर प्रत्येक वर्ग अन्न ग्रहण करने से पूर्व पूजा व प्रार्थना करता है, कहावत भी है कि - अन्न है तो मन प्रसन्न है।

इसके विपरित देश में कुल उत्पादन खाद्य का करीब 30 प्रतिशत तक किसी न किसी रूप में खराब होकर व्यर्थ हो रहा है, वर्ल्ड फूड ऑर्गेनाइजेशन के अनुसार विश्व के हर सातवें व्यक्ति को पर्याप्त भोजन नहीं मिल रहा, कुपोषण भुखमरी का शिकार होना इस आधुनिक युग का कटु एवं विचारणीय विषय है। भारत, विश्व भूख सूचकांक में 2015 में 54 से 2018 में स्थिति को सुधारते हुए अभी 103 स्थान पर पहुंच गया। सरकार इस सूचकांक से जल्द मुक्त होने हेतु प्रयासरत है। इसी बाबत 2013 में प्रत्येक नागरिक को भोजन का अधिकार मिले इस हेतु संसद में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम कानून पारित किया गया। योजना के तहत सार्वजनिक वितरण प्रणाली को दुरुस्त कर ज़रूरतमंदों तक मुफ्त में अनाज पहुंचाने का भागीरथी कार्य शुरु हुआ। इसके विपरीत आज भी व्यापक पैमाने पर समाज में अन्न की बर्बादी जारी है। एक आंकलन के अनुसार जितना वर्ष भर में हमारा गेहूँ बर्बाद होता है उसके बराबर आस्ट्रेलिया जैसे देश की कुल पैदावार है। नष्ट हुई गेहूँ की कीमत 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक होती है जबकि इससे करीब प्रतिवर्ष 25 करोड़ जनता की भूख की पूर्ति संभव है। एक आंकलन के अनुसार हर व्यक्ति बेपरवाह होकर साल में औसतन दस किलो अन्न बर्बाद करता है। इन दिनों यह उद्घोष सार्थक है कि - **"उतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में।"**

जितना साल भर में हमारी लापरवाही से अन्न बर्बाद होता है उतनी कीमत से सैकड़ों कोल्ड स्टोरेज बनाकर खाद्य पदार्थों का संरक्षण व सड़न से बचाव हो सकता हैं। यहाँ कुछ अन्य अन्न बर्बादी के कारण व निवारण के प्रयासों पर चर्चा करेंगे। जैन धर्म में भोजन को जूठा छोड़ने, व्यर्थ करने पर अनन्त-अनन्त पाप कर्मों का बंध बताया है। यही कारण है कि हमारे ज्ञानी साधु महात्मा प्रतिदिन उतना ही भोजन गोचरी में लाते हैं जितनी खपत हो, थाली को साफ कर उसे पानी से धोकर पीने को बहुत बड़ा पुण्य बताया है।

भारतवर्ष में बढ़ती धनाढ्यता, समृद्धि दिखावे के कारण भोजन के साथ जनमानस असंवेदनशील हो रहा है। खर्च करने की क्षमता बढ़ने के साथ-साथ फैंकने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। कुबेरपति सेठों के विवाह पारिवारिक आयोजनों में तो 40 प्रतिशत तक कूडेदान में वेस्टेज खाना पाया जाता है। सैंकड़ों की संख्या में पकवान बनते हैं परन्तु भूख तो सीमित ही होती है। यही वजह है कि व्यक्ति डस्टबीनों को जूठन से भरने का कार्य करता है। आधुनिकता की दौड़ में हम इतने अंधे हो गये हैं कि थाली में भोजन छोड़ने को फैशन समझ बैठे हैं। रोटियाँ उन्हीं की थालियों से कूड़े तक जाती है, जिन्हें भूख का अहसास नहीं। गरीब का बच्चा तरसता है जिसे पाने को, नादान फैंक देते हैं उसे कूडे दानी में। ऐसे समारोह में आधे से ज्यादा आइटम तो अधिकांशतः अंत में बच जाती हैं, जिन्हें कामगार शीघ्र नष्ट कर उस स्थल को खाली करने का प्रयास करते हैं।

यह सच है कि एक दिन में अत्यधिक प्रदार्थ ग्रहण करने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आज अधिकांश बीमारियों का मूल कारण पेट को कूड़ादान समझकर आहार डालना है। चालीस पचास वर्ष पूर्व समारोह आदि में सीमित आइटम के साथ देशी खाना खिलाया जाता था, जो स्वास्थ्यवर्धक, गुणकारी होता था। उस खाने को कितना भी खा लो पच जाता था। आजकल तो कैमिकल युक्त फैंसी पकवान, ठंडे बासी भोजन को इंस्टैंट गर्म करके खिलाने का फैशन है। समाज में बढ़ते दिखावे के कारण आयोजनों में भोजन की बर्बादी सामान्य बात हो गई है। अमीरों की देखा-देखी से

मध्यम वर्ग परेशान हैं। अपने पास पूर्ण संसाधन नहीं होने के कारण कर्ज़ आदि लेकर भी वह अमीरों की बराबरी की कृत्रिम खुशी प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसके अतिरिक्त फल, सब्जी आदि का उचित रख-रखाव न होना, जागरूकता संसाधनों, भंडारण की कमी भी बर्बादी के अन्य कारण है।

अन्न की बर्बादी एवं अन्य चुनौतियाँ : अपाच्य दूषित भोजन से जल, भूमि और जलवायु के साथ-साथ जैव विविधता पर भी बेहद नकारात्मक असर पड़ता है। जूठन, भोज्य की सड़न से सर्वत्र बदबू, गंदगी के साथ ही पर्यावरण में हानिकारक गैसों का निर्माण होता है। इस कारण महंगाई तो बढ़ती ही है, अर्थव्यवस्था पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। समाज में कुपोषण एवं अपराध जैसी बीमारियाँ पनपती हैं। अन्न बर्बादी की रोकथाम हेतु जारी सरकारी प्रयास व अपेक्षा के साथ स्वयं प्रधानमंत्री मोदी जी स्वयं मन की बात में अन्न व अन्नदाता के महत्व तथा सम्मान के संबंध में विस्तृत चर्चा कर चुके हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को पूर्णतया कम्पयूटराइज्ड किया गया है। राज्यों में पारदर्शिता पोर्टल, शिकायत निवारण केन्द्र के साथ-साथ आधार लिंक कर लाभार्थी का सत्यापन किया जा रहा है। अन्न बर्बादी को रोकने हेतु यातायात व्यवस्था, भंडारण आदि सुगम बनाने का कार्य युद्ध स्तर पर जारी है। सरकार को अन्न बर्बादी हेतु सख्त कानून, नियमावली बनाकर लागू किये जाने की आवश्यकता है। भव्य आयोजनों में भोज्य पदार्थ की संख्या सीमित बनाई जाए। अतिरिक्त होने पर उसे टैक्स सहित अन्य कड़े कानूनों के अन्तर्गत लाया जाए। समारोह आदि में फूड अवेयरनैस का बोर्ड आदि अनिवार्य रूप से लगाने की पहल करनी चाहिए। पाकिस्तान आदि देशों में अन्न की अभी जो वर्तमान में किल्लत है, उसे देखते हुए एक सौ चालीस करोड़ के भारत देश में अन्न की बर्बादी रोकने की दिशा में व्यापक व सशक्त कानून लाने की नितांत आवश्यकता है। पड़ोसी देश पाकिस्तान ने समय रहते इस प्रकार का प्रबंधन कर लिया होता तो आज वह जन आक्रोश और भुखमरी का शिकार नहीं होता।

प्रत्येक कस्बे, शहर में ऑनलाइन अपडेट फैसिलिटी के साथ फूड बैंक खुलें, जिसमें देनदार व लेनदार का आदान-प्रदान, डाटा बेस हो और सरकार की तरफ से फूड सेफ्टी पालन प्रोत्साहन, मीडिया आदि में भी इस प्रकार के प्रचार-प्रसार को और अधिक व्यापक बनाया जाए। अन्न का सम्मान सबका दायित्व है। वर्तमान समय में समाज के सभी वर्गों को इस विषय पर व्यापक जागरूकता लानी होगी।

आज शादियों, पार्टियों के नाम पर बहुलता से व्यंजनों को परोसने की फिजूल परंपरा सी बन गई है। इसकी रोकथाम के साथ-साथ हमें हमारी प्राचीन संस्कृति व परम्पराओं को वापिस लाना होगा। सीमित संख्या में पकवान और भोजन साझा करने की ही उत्कृष्ट परम्परा हमारे पूर्वजों से चली आ रही थी, जिसे हमने भौतिक चकाचौंध में भुला दिया है, हमें दूसरों के दिखावों पर नहीं जाना चाहिए। पाली, जोधपुर, ब्यावर सहित अनेक क्षेत्रों के समारोहों में भोज्य पदार्थों को परोसने की संख्या सीमित है और वहां बड़े चाव से भोजन का आनंद लिया जाता है। इस परम्परा, नियमावली को सर्वत्र लागू करने की आवश्यकता है। इससे विवाह का बजट भी कम होगा साथ-साथ जैन मूल्यों की रक्षा, पुण्यार्जन भी होगा तथा इसका सर्वाधिक लाभ साधारण व मध्यम वर्ग के परिवारों को होगा तथा उनके उत्थान विकास में सहभागिता स्वतः दृष्टिगोचर होगी। धर्म गुरुओं, विद्वानों का मार्गदर्शन और अधिक प्रभावी रूप में आवश्यक है। महिलाशक्ति बच्चों में संस्कार डाले और जूठा नहीं छोड़ने की आदत डलवाएं, यदि समय पर इस ओर कदम नहीं उठाया तो भविष्य में अन्न की भारी किल्लत संभव है और अन्य देशों की भांति आंदोलन या लूटमार हो सकती हैं। आईये, समय पर इस ओर जाग्रत होवें, अन्न के महत्व को देखते हुए इसके सम्मान की शपथ ले, इसे बर्बाद न करें, ना होने दें तथा औरों को भी जूठा न छोड़ने की प्रेरणा दें। हमारे बड़े धार्मिक संस्थान पदाधिकारी इस ओर सकारात्मक प्रयास करें तभी हमारा समाज के प्रति दायित्व पूर्ण माना जाएगा। जय हिन्द-जय जिनेन्द्र ! ❖❖

बदल जाओ वक्त के साथ
या फिर वक्त बदलना सीखो
मजबूरियों को मत कोसो
हर हाल में चलना सीखो

राम : एक आचरण, चारित्र एवं जीवन शैली !

प्रस्तुति : श्री सम्पतराज सिंघवी, चेन्नई (तमिलनाडु)

एक दिन (संध्या के समय) सरयू के तट पर, तीनों भाईयों संग टहलते श्रीराम से भरत भैया ने कहा, 'एक बात पूछूं' भैया ? माता कैकेयी ने आपको वनवास दिलाने के लिए मँथरा के साथ मिल कर जो षड़्यंत्र किया था, क्या वह राजद्रोह नहीं था? उनके षड़्यंत्र के कारण एक ओर राज्य के भावी महाराज और महारानी को चौदह वर्ष का वनवास झेलना पड़ा, तो दूसरी ओर पिता महाराज की दुःखद मृत्यु हुई। ऐसे षड़्यंत्र के लिए सामान्य नियमों के अनुसार तो मृत्यु दण्ड दिया जाता है, फिर आपने माता कैकेयी को दण्ड क्यों नहीं दिया?

राम मुस्कुराए, बोले, 'जानते हो भरत! किसी कुल में एक चरित्रवान और धर्मपरायण पुत्र जन्म ले ले, तो उसका जीवन उसके असंख्य पीढ़ी के अपराधों का प्रायश्चित कर देता है। जिस 'माँ' ने आप जैसे महात्मा को जन्म दिया हो, उसे दण्ड कैसे दिया जा सकता है भरत? भरत सन्तुष्ट नहीं हुए, कहा, यह तो मोह है भैया! और राजा का दण्ड विधान मोह से मुक्त होता है। कृपया एक राजा की तरह उत्तर दीजिये कि आपने माता को दण्ड क्यों नहीं दिया? समझिए कि आपसे यह प्रश्न आपका अनुज नहीं, अयोध्या का एक सामान्य नागरिक पूछ रहा है। राम गम्भीर हो गए, कुछ क्षण के मौन के बाद कहा, अपने सगे-सम्बन्धियों के किसी अपराध पर कोई दण्ड न देना ही इस सृष्टि का 'कठोरतम दण्ड' है भरत! माता कैकेयी ने अपनी एक भूल का बड़ा - कठोर दण्ड भोगा है। वनवास के चौदह वर्षों में हम चारों भाई अपने-अपने स्थान से परिस्थितियों से लड़ते रहे हैं परन्तु माता कैकेयी हर क्षण मरती रही हैं।

अपनी एक भूल के कारण उन्होंने अपना पति खोया, अपने चार-बेटे खोए, अपना समस्त सुख-सम्मान खोया, फिर भी वे उस 'अपराध-बोध' से कभी मुक्त न हो सकीं। वनवास समाप्त हो गया तो परिवार के शेष सदस्य प्रसन्न और सुखी हो गए, पर वे कभी प्रसन्न न हो सकीं। कोई 'राजा' किसी 'स्त्री' को इससे कठोर दण्ड क्या दे सकता है? मैं तो सदैव यह सोचकर दुःखी हो जाता हूँ कि ''मेरे कारण 'अनायास ही' मेरी माँ को इतना कठोर-दण्ड भोगना पड़ा।'' राम के नेत्रों में जल उतर आया था और भरत आदि भाई भी मौन हो गए थे।

राम ने फिर कहा - और उनकी भूल को अपराध समझना ही क्यों भरत! 'यदि मेरा वनवास न हुआ होता, तो संसार 'भरत' और 'लक्ष्मण' जैसे भाईयों के अतुल्य भ्रातृ-प्रेम को कैसे देख पाता? मैंने तो केवल अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन मात्र किया था, पर तुम दोनो ने तो मेरे-स्नेह में चौदह वर्ष का 'वनवास' भोगा। 'वनवास' न होता तो यह संसार सीखता कैसे कि भाईयों का सम्बन्ध होता कैसा है? भरत के प्रश्न मौन हो गए थे। वे अनायास ही बड़े भाई से लिपट गए! राम कोई नारा नहीं हैं । राम एक आचरण हैं, एक चारित्र हैं, एक जीवन 'जीने की शैली' है। ❖❖

महासाध्वी पू. श्री विजयलताजी म.सा. 'तप कौमुदी' अलंकरण से अलंकृत

बैंगलोर (कर्नाटक) : 4 नवंबर 2023 को गणेश बाग, बैंगलोर में अम्बेश गुरु सेवा समिति के सान्निध्य में महासाध्वी पू. श्री विजयलताजी म.सा. के मासखमण की तपस्या के अनुमोदनार्थ श्रमणसंघीय आचार्य सम्राट पू. डॉ श्री शिवमुनिजी म.सा. ने महासाध्वी श्री विजयलताजी म.सा. को 'तप कौमुदी' के पद से अलंकृत किया है। इस अवसर पर जैन कांफ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनचंदजी सिंघी जैन, मानव सेवा योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री ज्ञानचंदजी लोढ़ा जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री किशोरजी दलाल जैन, कर्नाटक प्रान्त के अध्यक्ष श्री पुखराजजी मेहता जैन एवं प्रांतीय महामंत्री श्री सुरेंद्रजी आँचलिया जैन एवं अन्य सदस्यों ने आचार्यश्रीजी का पत्र महासाध्वीजी को प्रदान किया।

प्रेषक : पदमचंद आच्छा जैन, रा. युवा अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

उपवास से अनेक घातक रोग दूर किये जा सकते हैं

- श्री अभय कुमार जैन, भवानीमंडी (राजस्थान)

रोग निवारण का सबसे अच्छा उपाय है, खाना बंद कर उपवास करना। आयुर्वेद में उल्लेख है कि अग्नि आहार को पचाती है और उपवास दोषों को पचाता है अर्थात् नष्ट करता है। उपवास का काम है पूरे शरीर और मन की 'ओवरहीलिंग' कर देना या अंदर से उसकी अच्छी तरह मरम्मत कर लेना। आयुर्वेद में उपवास को **'परमौषधम्'** माना गया है। आयुर्वेद में उपवास की व्याख्या इस प्रकार की गई है **'आहार पचति शिखी, दोषान् आहार वर्जिताः।'** आयुर्वेद में यह भी कहा गया है - अन्न त्याग करने पर शरीर अपने रोगों का भक्षण करता है। **'लंघनम् परमौषधम्।'**

एजिंग इन्स्टीट्यूट की एक घोषणा के अनुसार सप्ताह में दो दिन उपवास करने वाले व्यक्ति अधिक आयु प्राप्त करते हैं। श्री हर्षद एम. शेल्टन ने, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञानी थे, उपवास को ऐसी रामबाण औषधि घोषित किया, जिसके द्वारा हर प्रकार के रोगों की प्रभावशाली एवं विश्वसनीय चिकित्सा संभव है।

'उपवास दर्शन' या **'फिलॉसफी ऑफ फास्टिंग'** के लेखक श्री ए. ए. फ्यूरिगेटन ने लिखा है कि रोग चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक, उपवास से सभी में लाभ होता है। यदि आप स्वस्थ और सौंदर्य शक्ति एवं साहस प्राप्त करना चाहते हैं तो उपवास कीजिए। उपवास से नैतिक व आध्यात्मिक प्रगति होती है, नैसर्गिक बुद्धि का उदय होता है। रोग निवारण, आत्मविश्वास की प्राप्ति, प्रेम की विशालता की दिव्य अनुभूति, विराट के साथ आत्म सामंजस्य का महत्वपूर्ण प्रसाधन उपवास ही है। उनके अनुसार उपवास स्वास्थ्य लाभ का प्राकृतिक पहलू है।

अमेरिका के डॉक्टर बर्नर पेड ने उपवास के संबंध में बहुत कुछ अध्ययन, लेखन और प्रचार कार्य किया है। उन्होंने उपवास चिकित्सा को एक स्वतंत्र पद्धति का रूप दिया है और हज़ारों व्यक्तियों पर इसका प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया है कि स्वास्थ्य, युवावस्था और शक्ति बढ़ाने के लिए उपवास से बढ़कर कोई विधि नहीं है। अमेरिका के डॉक्टर एडवर्ड ने अपने बच्चे की डिप्थीरिया जैसी विकट बीमारी भी उपवास के द्वारा ठीक की थी।

बीमारी में उपवास का अधिक महत्व बढ़ जाता है, क्योंकि सब रोगों की जड़ पेट ही है और जब तक उसे साफ ना रखा जाए, तब तक शरीर की किसी भी बीमारी को दूर नहीं किया जा सकता। अतः पेट की सफाई व मन की शांति के लिए लंबा उपवास आवश्यक है, जैसे शरीर को नई स्फूर्ति सोने व विश्राम से मिलती है ठीक उसी प्रकार आंतों को स्फूर्ति उपवास से मिलती है।

उपवास संपूर्ण विश्व में एक अनुष्ठान के रूप में प्रतिष्ठित परम्परा का नाम है। विश्व के अधिकांश धर्म में उपवास का विशेष महत्व है। जैन धर्म में **इच्छा निरोध स्तपः** का संदेश दिया गया है, इसका अर्थ है- इच्छाओं-वासनाओं का दमन करना ही तपश्चर्या है। उपवास द्वारा हमारे रसना इन्द्रिय को नियंत्रित किया जाता है। जैन श्रद्धालु पर्युषण पर्व के दौरान उपवास रखते हैं। इस्लाम धर्म में रखे जाने वाले रोज़े उपवास का ही एक रूप हैं। ये रोज़े रमज़ान के महीने में रखे जाते हैं, इसाई धर्मावलम्बी फास्ट के रूप में उपवास को आत्म-संयम और प्रेम की दया प्राप्ति का साधन मानते हैं। हिन्दू धर्म में वर्ष में दो बार आने वाली प्रत्येक नवरात्रि में नौ दिन तक आंशिक अथवा पूर्ण उपवास रखते हैं। बहुत सी महिलाएं निर्जला ग्यारस का व्रत रखती हैं।

यूँ तो रोगों को दूर करने के लिए ऐलोपैथी, होम्योपैथी, यूनानी व आयुर्वेदिक आदि अनेकानेक चिकित्सा पद्धतियाँ हैं तथापि उनके उपचार के लिए उपवास एक ज़बरदस्त प्राकृतिक साधन है। प्राकृतिक चिकित्सकों ने यह सिद्ध एवं प्रमाणित कर दिखाया है कि उपवास द्वारा घातक से घातक रोग भी दूर किये जा सकते हैं।

आयुर्वेद में इसे चिकित्सा का प्रमुख एवं प्रधान अंग माना गया है। इसकी इसी महत्ता के कारण ही सुश्रुत ने कहा है कि जिस मनुष्य के आंतरिक अवयव निष्क्रिय पड़े रहते हैं, उचित ढंग से कार्य नहीं करते, उपवास से क्रियाशील हो जाते हैं। उनकी अग्नि दशा ठीक हो जाती है और हठीले रोग शीघ्रता से दूर हो जाते हैं।

अमेरिका के प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक डॉक्टर एरनाल्ड टूर हिट ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध कर दिखाया कि उपवास काल में चोटें तथा घाव अत्यंत शीघ्रता से भरते हैं। उन्होंने अपने हाथ पर चाकू से गहरा घाव कर लिया तथा एक सप्ताह तक पूर्ण उपवास रखा। इस दौरान उन्होंने जल के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिया। पाँच-छह दिन में ही उनका घाव खुश्क हो गया और उस पर पपड़ी आ गई। न तेज़ दर्द हुआ, न मवाद पड़ा और न सूजन आई। फिर कुछ दिनों पश्चात उन्होंने हाथ पर उतना ही गहरा घाव किया और भोजन में अन्न, फल का प्रयोग किया। इस बार घाव को ठीक होने में दुगना समय लगा। उसमें खून, मवाद भी निकाला व दर्द भी हुआ। इसका कारण स्पष्ट करते हुए डॉक्टर एरनाल्ड ने बताया है कि उपवास काल में पाचन से अवकाश पाकर शरीर की पूरी शक्ति घाव भरने में लग जाती है। जानवर बीमार हो जाते हैं तो तुरंत खाना बंद कर देते हैं। कृपया अपने पालतू पशु एवं पक्षी पर भी ध्यान दें जब वे पुनः स्वस्थ हो जाते हैं तो खाना-पीना शुरु कर देते हैं।

गठिया, वात, मूत्राशय संबंधी रोगों, जैसे गर्मी, सुज़ोक, सूजन, मधुमेह, दमा, लकवा या यकृत में रक्त जमा होना, बादी-मोटापा, मस्तिष्क में खून का जमा होना, पेट तथा सीने की जलन, नसों का कड़ा होना या अन्य विकार में कैंसर, मोतीझरा, अपेंडिसाइटिस में लम्बे उपवास करने चाहिएं।

महात्मा गांधी ने भी डॉक्टर मित्रों से माफी मांगते हुए तथा अपने सम्पूर्ण अनुभवों के आधार पर तथा अपने जैसे दूसरों के अनुभवों के आधार पर बिना किसी हिचकिचाहट के कहा कि यदि निम्नलिखित शिकायत जैसे - कब्ज, रक्त की कमी, बुखार, बदहजमी, सिरदर्द, जोड़ों का दर्द, भारीपन, उदासी और चिंता आध्यात्मिक शांति हेतु तथा मानसिक आवेगों को दबाने में भी उपवास बड़ा सहायक सिद्ध होता है। क्रोध, शोक, घृणा आदि भी उपवास द्वारा दबाये जा सकते हैं। इससे कुत्सित विचार तथा बुरी भावनाओं का शमन हो जाता है। उपवास ही वह माध्यम है जिससे मनुष्य अपनी लालसाओं, कामनाओं एवं इन्द्रियों को नियंत्रित कर सकता है।

उपलब्ध प्रमाणों से पता चलता है कि प्राचीन मिस्रवासी सुज़ोक से ग्रस्त होने पर उपवास किया करते थे। उनका विश्वास था कि प्रति माह 3 दिन तक उपवास करने से अक्षय यौवन और ऊर्जा प्राप्त होती है। अनेक चिकित्सा वैज्ञानिक एलन गोल्ड, एलन हेयर, जीन, ओसवाल्ड, हर्बल एण्ड शेल्टन आदि चिकित्सा विज्ञानियों का एकमत से यही निष्कर्ष है कि रोगों से मुक्ति पाने का एकमात्र तथा अत्यंत प्रभावशाली साधन है उपवास।

प्राकृतिक चिकित्सकों ने यह सिद्ध कर दिखाया है। उपवास-व्यायाम आदि से घातक रोग भी दूर किये जा सकते हैं। महात्मा गांधी ने भी कहा था "विशुद्ध उपवास से शरीर, मन और आत्मा भी शुद्ध होती है।" उससे इंद्रियों का दमन होता है। गांधीजी ने उपवास को सत्याग्रह के लिए एक अमोघ अस्त्र के रूप में हमारे सामने रखा। सत्याग्रह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। सत्य एवं आग्रह अर्थात् जो बात सत्य है, न्यायोचित है उसे मानते हैं। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जब भी न्यायोचित बात को मनवाने का मौका आया, गांधीजी ने उपवास का सहारा लिया।

हमारे देश की बढ़ती हुई जनसंख्या तथा घटते हुए खाद्यान्नों के उत्पादन के संदर्भ में भी उपवास को राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हुआ है। यदि देश का प्रत्येक नागरिक अल्प अवधि के उपवास करना शुरु कर दे तो न केवल उसका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सुधरेगा अपितु राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में भी उसका महत्वपूर्ण योगदान होगा। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री ने भी इसी भावना से प्रभावित होकर देशवासियों को प्रति सोमवार व्रत करने के लिए प्रेरित किया था, जिसके कारण आज भी हज़ारों देशवासी प्रति सोमवार व्रत उपवास करते हैं।

विद्वानों, चिकित्सकों एवं अनुभवी व्यक्तियों का यह मत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। इसीलिए उपवास करना चाहिए, उपवास के द्वारा ही मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक शक्ति का विकास होता है। उपवास ही वह माध्यम है जिससे मनुष्य अपनी लालसाओं, कामनाओं व इंन्द्रियों को नियंत्रित कर सकता है।

विश्व के हर मज़हब, हर समुदाय, हर मज़हब, हर सम्प्रदाय में व्रत उपवास को बहुत महत्व दिया गया है। रामायण हो या पुराण, बाइबल हो या कुरान तथा बाइबिल

में उपवास के संबंध में चर्चा की गई है। बाइबल में तो 74 बार उपवास का जिक्र आया है। सनातन धर्म में एकादशी के व्रत का विधान बताते हुए एवं उसके लाभों का वर्णन इस प्रकार किया गया है -

मातेव सर्व बालानां, औषधम् रोगिणामिव।
रक्षार्थ सर्वलोकानां, निमित्तैकादशी तिथिः।।

अर्थात् एकादशी का निर्माण बालकों के लिए माता समान व रोगियों के लिए औषधि की तरह हितकारी है और यह सब लोगों की रक्षा करने वाली है।

इससे स्पष्ट है कि प्राचीन लोगों को भी उपवास द्वारा रोगों का संबंध और स्वास्थ्य लाभ के तथ्य की जानकारी थी। जैन सम्प्रदाय हेतु चातुर्मास के दौरान सावन, भादों माह में तो बहुत तपस्या, उपवास किए जाते हैं जैसे उपवास, बेला, तेला, पचोला, अट्ठाई, अर्द्धमासखमण, मासखमण आदि किए जाते हैं अर्थात एक, दो, तीन, पाँच, आठ, पन्द्रह तथा तीस दिन तक के उपवास किये जाते हैं।

उपवास के लाभ : यह प्राणी को विश्राम प्रदान करता है। यह आहार के अन्तर्ग्रहण को रोकता है। जो आंतों में सड़ जाता है और शरीर को विषाक्त कर देता है।

यह प्रणाली को स्वाभाविक बनाने का अवसर प्रदान करता है। यह स्रावों, निस्रावों तथा जमावों की क्रिया की गति को बढ़ावा देता है तथा रोगग्रस्त ऊतकों की टूट-फूट एवं अवशोषण में शीघ्रता लाता है। इसके द्वारा ऊर्जा का संचय होता है।

मनुष्य दीर्घायु होकर स्वस्थ रहता है। भविष्य में घातक रोग, दमा, जोड़ों का दर्द, मोटापा, मधुमेह, हृदय रोग, रक्तचाप आदि सभी रोगों की संभावना क्षीण हो जाती है।

सावधानियाँ : छोटे बालक, अधिक बूढ़े एवं गर्भवती महिलाओं को उपवास नहीं करना चाहिए। रक्तचाप, हृदयरोगी, मधुमेह, थायराइड तथा अन्य रोगियों को अपने चिकित्सक से परामर्श करके लम्बे उपवास करने चाहिएं। उपवास के दौरान पानी गर्म करने के बाद ठंडा करके दिन में कई बार पीना चाहिए अधिक श्रम एवं व्यायाम नहीं करना चाहिए। उपवास समाप्ति के पश्चात बहुत ही हल्का भोजन धीरे-धीरे प्रारम्भ करना चाहिए तथा बहुत ही सावधानी रखनी चाहिए।

लम्बे उपवास वालों को लगभग एक सप्ताह तक तेल गुड़, खटाई एवं बेसन एवं मैदा की तली हुई चीज़ों से परहेज़ रखना चाहिए। ❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 दिसम्बर से 20 जनवरी 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

उप-प्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म.सा. 'वागीश	22 दिसम्बर
युवाचार्य श्री मधुकरमुनि जी म.सा.	25 दिसम्बर
अध्यात्मयोगी श्री ज्येष्ठमल जी म.सा.	30 दिसम्बर
प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म.सा.	01 जनवरी
प्रवर्तक श्री शान्तिस्वरूप जी म.सा.	10 जनवरी
प्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म.सा.	15 जनवरी

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

प्रवर्तक श्री शान्तिस्वरूप जी म.सा.	22 दिसम्बर
तपस्वी श्री फकीरचन्द जी म.सा.	22 दिसम्बर
स्वामी श्री फूलचन्दजी म.सा.	05 जनवरी
प्रवर्तिनी डॉ. चन्दनाजी म.सा.	17 जनवरी

पुण्य स्मृति दिवस

स्वामीवर्य श्री बुधमल जी म.सा.	27 दिसम्बर
पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी म.सा.	08 जनवरी

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

ईश्वर ने मानव को ध्यान में रखते हुए ही, प्रकृति के माध्यम से सृष्टि का श्रृंगार किया है ।।

'श्रवण' प्रक्रिया एवं विवेक से सम्यक्त्व की प्राप्ति

- श्री पदमचन्द गाँधी, जयपुर (राजस्थान)

ज्ञान प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन श्रुतज्ञान है, जिसे सुनकर एवं स्वाध्याय द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिनवाणी का श्रवण सरल उपाय है। इसके द्वारा साधक अपने भीतर में व्याप्त अनन्त शक्ति को जाग्रत कर सकता है क्योकि स्वयं को सुनने के लिए, स्वयं को पहचानने के लिए 'आत्मा की आवाज़' को सुनना ज़रूरी होता है। हमारे भीतर भी सिद्धों जैसा जीव है, उसकी पहचान के लिए प्रभु ने 'श्रवण' का मार्ग बताया है।

तत्त्वार्थ सूत्र अ. 1 सू. 3 में कहा है, 'तन्निसर्गादधिगमाद्वा' अर्थात् सम्यक्दर्शन का आविर्भाव दो प्रकार से माना है - एक 'निसर्ग' अर्थात स्वभाव से तथा दूसरा 'अधिगम' अर्थात अध्ययन-श्रवण आदि निमित्त से। जिस सम्यक् दर्शन में बाह्य निमित्तों की अपेक्षा नहीं रखता हुआ स्वयमेव प्रकट होता है, निसर्ग सम्यक् दर्शन होता है तथा जिसे सम्यक् दर्शन की उत्पत्ति बाह्य निमित्तों की अपेक्षा रहती है अर्थात जो वीतराग वाणी और गुरु के उपदेश आदि निमित्त से प्रकट होता है, वह अधिगम सम्यक् दर्शन होता है। अधिगम सम्यक् दर्शन में ऐसे क्षयोपशम आदि के लिए तीर्थंकरों का उपदेश गुरु की वाणी तथा श्रुत स्वाध्याय बाह्य कारण निमित्त बनते हैं।

दस रुचियों में एक 'उपदेश रुचि' के अनुसार तीर्थंकरों का, केवल ज्ञानियों का, मुनियों या श्रावकों आदि का उपदेश श्रवण करने से जीवादि नौ पदार्थों का यथा स्वरूप समझ लेने पर धर्म के प्रति रुचि जाग्रत होती है, धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

हमें क्या सुनना है? - सुनने के लिए बहुत सारी बातें होती हैं जिनमें प्रमुखतः दो प्रकार - एक जिसके सुनने से राग-द्वेष कषाय उत्पन्न होते हैं - जिसके सुनने से सांसारिक क्रियाएँ चालू रहती हैं तथा दूसरा जिसके सुनने से कषाय मुक्त, विकार मुक्त होकर समकित को प्राप्त कर सकते हैं। शास्त्रों में कहा है -

को देवो? को धम्मो? को व तया राहणे उआउत्ति।
गीयथ-पाय-मूले, सुणेइ विगहाइ-परिमुक्को।।

अर्थात कौन देव है? कौन सा धर्म है? और उनकी आराधना के क्या उपाय हैं? इसके बारे में 'गीतार्थ' (आगमज्ञाता संयमी) के चरण कमलों में बैठकर विकथा आदि से मुक्त होकर उपदेश सुनता है, वही सच्चा श्रोता है। इस प्रकार जाग्रत श्रोता का श्रवण तप रूप हो जाता है क्योंकि उसका उद्देश्य प्रशस्त हो जाता है।

भगवान जिनेश्वर देवों, तीर्थंकर भगवन्त के द्वारा जिस प्रकार तत्त्व का प्रतिपादन हुआ हो, उसको नित्य ही उसी प्रकार से ही जो जानता है, आचरण में लाता है और कहता है, बतलाता है - वे संसार की आसक्ति से युक्त, सम्बन्धों से मुक्त दिव्य गुरु है, उनकी भक्तिपूर्वक मनोमालिन्यता से रहित दृढ़ उपासना करते हुए गृहस्थ परमोपदेश के माध्यम से क्या-क्या फल प्राप्त नहीं कर लेते हैं। ऐसा श्रवण ही हेय, ज्ञेय और उपादेय का विवेक प्रदान कर सकता है। ऐसा श्रवण ही सच्चा श्रवण है। उपदेश का आलम्बन उपदेश के शब्दों में अमिट ऊर्जा भर देते हैं। जिनवाणी का श्रवण करना साधना का महत्वपूर्ण अंग है। सुनने से दर्शन, वंदन, और समुपासना होती है, जो पुस्तक पढ़ने में नहीं होती ।

सुनने की प्रक्रिया - साधु-साध्वियों के पास जाकर दर्शन वन्दन करना, उनके पास बैठना, उनकी पर्युपासना करने से आध्यात्मिक लाभ मिलता है। गुणों की अनुमोदना होती है और अनुमोदना ही धर्मरूपी कल्पवृक्ष का बीज है। पर्युपासना का फल अर्थात साधुओं के समीप बैठना है। उन्हीं के बताये मार्ग पर चलने का आचरण करना। इसीलिए गृहस्थ को 'श्रमणोपासक' कहा है। समीप बैठने का अर्थ है- 'सत्संग' के लिए बैठना, यही पर्युपासना है। पर्युपासना के फल के लिए गौतम गणधर द्वारा प्रभु महावीर से पृच्छा करने पर बताया 'श्रमण' या पूर्ण अहिंसक साधक की पर्युपासना करने से 'श्रवण का फल' प्राप्त होता है। विवाहपण्णत्ति सूत्र 2/5/14 में कहा है -

सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हये तवे चेव, वो दाणे अकिरिया सिद्धि ।।

अर्थात् श्रवण का फल ज्ञान, ज्ञान का फल विज्ञान अर्थात् हेय, ज्ञेय, उपादेय (छोड़ने योग्य, जानने योग्य एवं ग्रहण करने योग्य) तत्त्वों का विवेक-विज्ञान का फल प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का फल संयम, संयम का फल अनास्रव अर्थात जीवों में कर्मों

का प्रवेश होकर रुक जाना, अनास्रव का फल तप, तप का फल-व्यवदान अर्थात कर्मों का नाश, व्यवदान का फल निष्क्रियता और निष्क्रियता का फल सिद्धि होता है।

'श्रवण' साधना का अन्तिम चरण नहीं होकर प्रथम चरण होता है, लेकिन श्रवण के पहले की प्रक्रिया साधक के लिए महत्वपूर्ण होती है, जो दर्शन, वन्दन एवं पर्युपासना है।

(1) दर्शन - अर्थात मुनि दर्शन से धर्म गुण का अनुराग उत्पन्न होता है। यह धर्मराग अन्तिम पुद्गल परावर्तन में भव्यात्मा के हृदय में उत्पन्न होता है। मुनि दर्शन के लिए साधक को पाँच अभिगम का पालन जरूरी होता है, जिसमें सचित का त्याग, अचित का भोग, उत्तरासन, अंजलीकरण और मन की एकाग्रता बताती है।

(2) वन्दना - तीन बार वन्दना द्वारा विनय प्राप्त होता है, अहं गलता है तथा साधक भीतर से खाली, हल्का एवं कोरा कागज की तरह बनता है।

(3) पर्युपासना - तत्त्व या धर्म के मर्म एवं रहस्य को जानने के लिए श्रवण करने की इच्छा से गुरु के सम्मुख बैठकर तत्त्वों के प्रति भक्ति, ज्ञान के प्रति जिज्ञासा आदि भावों को प्रकट कर सकते हैं तथा समाधान प्राप्त कर सकते हैं । इसी गुण से गुरु को यह पहचान होती है कि यह धर्म श्रवण करने की इच्छा वाला है - अर्थी है। जिसके तीन लक्षण - (i) विनय (तत्त्व के प्रति भक्ति-भावना, वन्दना आदि) (ii) समुपस्थित (विनय सहित योग्य आसन पर बैठना) और (iii) पृच्छा (योग्य शब्दों में ज्ञानी के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रकट करना।) इन तीनों से श्रवणकर्ता को उपदेशक पहचानता है। पर्युपासना तीन प्रकार - कायिकी, वाचिकी और मानसिकी होती है। काया से स्थिर मुद्रा में, वाचिकी के अनुसार जो जैसा कहा है, वैसा ही उसे मानना तथा हे भन्ते, तहत्ति, यही सही है आदि शब्दों का उपयोग करना। मानसिकी पर्युपासना के अनुसार जिनवाणी श्रवण हेतु मन में अत्यंत प्रीतिभाव और तीव्र अनुराग एवं श्रवण की प्यास का होना है।

उपरोक्त तीनों गुण मिलकर साधना के प्रथम चरण 'श्रवण' की भूमिका तैयार करते हैं। कान का स्वभाव सुनना है, लेकिन साधना के लिए श्रवण वह है, जो तत्त्व जिज्ञासा से युक्त होकर गीतार्थ से धर्मकथा का श्रवण करता हो अर्थात् तत्त्व की खोज, प्राप्त तत्त्व की स्थिरता और सम्यक् भाव में रमणता के लिए श्रवण करना तत्त्व रूपी हो जाता है।

ज्ञान सुनना ही साधना नहीं होता है, यह केवल साधना का पहला चरण होता है। उपदेश सुनने में श्रोता चार गुणों को धारण करता है, तब उसका सुनना श्रवण भूमिका के स्तर पर पहुँचता है। विंशति विंशिका 1/18 में स्पष्ट किया है -

मज्झत्थयाइ नियमा, सुबुद्धि-जोयण अत्थियाए य।
नज्जइ तत्त-विसेसो, न अन्नहा इत्थ जइयव्व।।

अर्थात मध्यस्थता, नियमितता, उत्तम बुद्धि के योग और अर्थिता से तत्त्व बोध होता है अन्यथा नहीं। अतः इन गुणों के अर्जन के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि ये गुण प्राप्त नहीं हों, किन्तु जिस श्रवण से जिन वचनों में दृढ़ अनुराग हो तो ऐसा श्रवण भी साधना के मार्ग में चरण बढ़ाने जैसा ही होता है।

सुनना और सुनाना जिनवाणी को श्रवण करना साधना का महत्वपूर्ण अंग है। उसके श्रवण से जो दर्शन, वन्दन और पर्युपासना रूपी तीनों गुणों की आराधना होती है, वह पुस्तक पढ़ने में नहीं होती। यदि कान नहीं हों तो जीव चतुरीन्द्रिय प्राणी में परिगणित होता है अर्थात् चेतना के एकेन्द्रियक विकास से अन्तिम पड़ाव है।

अतः श्रवण हेतु कर्ण सभी इन्द्रियों में अन्तिम और प्रधान है, चेतना के एकेन्द्रियक विकास में कान अन्तिम और प्रधान हैं। इसके बाद विकास के रूप में मन उपलब्ध होता है परन्तु मन अनिन्द्रिय और श्रुत ज्ञान मन का विषय है फिर भी उसकी संज्ञा 'मनज्ञान' की नहीं है क्योंकि विकास के चरण की दृष्टि से अन्य इन्द्रियों की अपेक्षा श्रोत्र मन से अधिक समीप है। आगमादि श्रुतज्ञान शब्द प्रधान होने के कारण उसे कान के द्वारा ही ग्रहण करता है।

अतः मन को सुरक्षित करना हो तो आगम श्रवण प्रधान उपाय है। दूसरी बात यह है कि संत जिनेन्द्र देव के अनुयायी हैं, उनके उपदेश श्रवण से उनकी उपासना जिनेन्द्र देव तुल्य समकक्ष बन जाती है।

सुनना और सुनाना भी साधना है। धर्मकथा श्रवण करना जिनधर्म में प्रवेश करने का प्रमुख द्वार होता है तथा अपने प्रमुख ज्ञान को जाग्रत करने का और जाग्रत ज्ञान को कार्यरत करने का साधन भी है। ठाणांग सूत्र 2/1/66 में बताया है -

दोहिं ठाणेहि आया केवली पण्णत्तं धम्मं लभेज्ज
सवणयाए तंजहा सोच्चा चेवय
अभिसमेच्चा चेव एवं जाव केवलणाण मुप्पडेज्जा ।

अर्थात् आत्मा दो प्रकार से केवली प्रज्ञप्त धर्म को श्रवण की भाव परिणति के रूप में प्राप्त कर सकता है - सुनकर और समझकर। इन्हीं दो प्रकार से केवलज्ञान तक प्राप्त कर सकता है। श्रवण गुण का आराधक होने के कारण ही गृहस्थ उपासक 'श्रावक' कहलाता है। सावयपण्णत्ति-2 में वर्णन आता है -

संपत्त-दंसणाई, पइदियहं जइ जणा सुणेईय ।
सामायारिं परमं, जो खलु तं सावगं विंति ।।

अर्थात् जो श्रद्धा को प्राप्त करके साधु के पास प्रतिदिन श्रेष्ठ समाचारी-साधु और श्रावक के सुन्दर आचार का श्रवण करता है, उसे श्रावक कहते हैं अर्थात जिनागमों को श्रद्धापूर्वक सुनने वाला श्रावक होता है, सुनाने वाला साधु धर्मकथा करके, तप अनुष्ठान करता है - स्वाध्याय नाम का तप करता है और जो वह धर्मकथा करते हुए अधिक तल्लीन हो जाता है, तो धर्म ध्यान में प्रविष्ट हो जाता है। अतः श्रोता को भी चाहिए कि वह धर्मकथा को धर्म कथा समझकर सुनें, श्रवणेन्द्रिय के विषय का पोषण करने के लिए नहीं और धर्मकथक महात्मा भी उसे अपनी साधना का अंग समझकर ही एक पवित्र धर्मानुष्ठान के रूप में अंगीकार करे। यश पाने के साधन के रूप में नहीं।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने श्रवण विधि को स्पष्ट करते हुए बताया कि श्रुतज्ञान अनेक अतिशयों का निदान है परन्तु वह प्रायः पराधीन है। गुरु की कृपा से ही वह अधिगम (प्राप्त) होता है। गुरुजनों से श्रुत लाभ प्राप्त करने के लिए गुरुजनों की आराधना को मूलभूत उपाय बताया है। गुरु की आराधना के लिए शास्त्रकारों ने आठ गुण बनाए हैं, जिनके द्वारा साधक श्रवण विधि को अपनाकर गुण ग्राह्य बनता है, शास्त्रों में कहा है :-

सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हिइ या वि ।
ततो अपोहए वा धारेइ करेइ वा सम्मं ।।

(1) विनय युक्त शिष्य शास्त्र सुनने की इच्छा रखता है।
(2) पुनः पुनः पूछता है अर्थात् अधीत श्रुत को निःशंकित करता है।
(3) अधीत श्रुत के अर्थ को सुनता है।
(4) सुनकर अवग्रह से ग्रहण को सुनता है।
(5) ग्रहण कर के ईहा द्वारा पर्यालोचन करता है कि यह ऐसा होना चाहिए।
(6) इसके पश्चात् गुरु ने ऐसा कहा इस बात का निश्चय करता है।
(7) अर्थ को निश्चित करने के पश्चात् उसे सदैव चित्त में धारण करता है।
(8) तदनन्तर गुरु के आदेशानुसार अनुष्ठान करता है।

उक्त रीति से गुरु का विनय करता हुआ शिष्य बुद्धि-गुण के द्वारा गुरुजन से श्रुत निधान को प्राप्त करता है। इस प्रकार स्पष्ट है - साधक को जिनवाणी श्रवण की प्यास जगे, जिनवाणी के प्रति प्रतिरोधक भाव नहीं हो, शंका नहीं हो, अहोभाव, प्रसन्नता एवं समर्पण का भाव हो, सुनने के लिए साधक स्वयं को भीतर से हल्का करे, अहंकार मुक्त हो तथा सरल होकर गुरुजनों से जिनवाणी का श्रवण करे। धर्मकथा में प्रमाद का परित्याग करके श्रवण करे। धर्मकथा थकावट (नींद द्वारा) उतारने का स्थान नहीं है। थकावट उतरने की राह प्रमाद की होती है।

श्रवण धर्म में बाधक कारण - प्रवर्तक श्री सूर्यमुनिजी म. के ग्रंथ सूर्य साहित्य भाग-4 में धर्म श्रवण के बाधक कारण बताये हैं, जो भव्यात्मा के जिनवाणी रूपी धन को लूट लेते हैं । ग्रंथकार ने ऐसे तेरह कारण बताये हैं, जिन्हें काठिया (गुजराती) चोर कहा गया है। इन बाधक कारणों से श्रवण का लाभ नहीं मिलता है। ग्रंथकार ने रत्न संचय[118] के अनुसार कहा है -

आलस्स मोहडवन्ना, थंभा पमाय-किविणत्ता ।
भय सोगा अन्नाण, वक्खेव-कुतूहला रमणा ।।

अर्थात् -

(1) 'आलस्य'- अभी क्या जल्दी है, अभी क्या उम्र है, बाद में सुन लेंगे ।
(2) मोह-परिजनों का, व्यापार का ।
(3) अवर्णवाद - उपदेश दाता को "फालतू समय बर्बाद करने वाले, बोर करने वाले, धर्म के नाम पर गप्पें मारने वाले आदि कहकर निंदा करने वाले समझना।"
(4) अभिमान - महाराज क्या उपदेश देगें ये बातें तो हम भी जानते हैं ।
(5) क्रोध - ये हमारा सब कुछ छुड़वाना चाहते हैं, ऐसे अप्रीतिकर भाव जिनवाणी से दूर ले जाते हैं ।
(6) प्रमाद - उपदेश सुनने का समय व्यर्थ बातों में खो देना।
(7) कृपणता - साधु दान आदि का उपदेश देंगे, त्याग

करवायेंगे, जो होता नहीं ।

(8) भय-प्रत्याख्यान, त्याग, तपस्या के नियमों का भय।

(9) शोक-परिजनों का वियोग, धन का वियोग, चिन्ता में रहना।

(10) अज्ञान - देव, गुरु, धर्म के विषय में सही जानकारी का अभाव।

(11) व्याक्षेप - प्रवचनों में मन नहीं लगना, मन की चंचलता, भटकाव।

(12) कोतूहल - उपदेश श्रवण के समय नाटक, सीरियल तथा सर्कस आदि को देखना ।

(13) रमण - द्यूत, शतरंज, चौपड़, ताश आदि खेलों में लगे रहना।

इनके अतिरिक्त अविधि, अविनय, श्रद्धा के अभाव से भी जिनवाणी श्रवण का लाभ नहीं मिलता ।

धर्म श्रवण के लाभ - विधि सहित प्रक्रिया एवं शुद्ध भावना से जिनवाणी का श्रवण करने से पाप कम होते हैं, सम्यक्त्व को प्राप्त करते हुए जीव मोक्षगामी बन जाते हैं। शास्त्रों में वर्णन आता है, रोहिणेय चोर जिसे जिनवाणी श्रवण नहीं करने की सौगन्ध उसके पिता ने करवायी थी, लेकिन परिस्थितिवश प्रभु महावीर की कल्याणकारी जिनवाणी के दो-चार शब्द नहीं चाहते हुए भी कानों में पड़ ही गये । जिसे सुनकर उसने अपना कल्याण कर लिया। प्रभु महावीर ने स्वयं चण्डकौशिक सर्प की बाम्बी के पास जाकर उसे 'संबुज्झई-संबुज्झई चण्डकोसिया! किं न बुज्झसि।' हे चण्डकौशिक समझो, समझो! क्यों नहीं समझते हो! कहकर प्रतिबोध दिया तथा उसका कल्याण किया।

थावच्चा अणगार ने सुदर्शन को शौच मूलक धर्म का परित्याग करवा कर निर्ग्रंथ प्रवचन में प्रतिबुद्ध किया (ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र अ. 5) अनाथी मुनि के उपदेश से सम्राट् श्रेणिक दृढ़ श्रद्धालु सम्यक्त्वी बने।

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने अवन्ती के राजा विक्रमादित्य को जिनमतानुमयी बनाया। कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने गुजरात के नरेश सिद्धराज, जयसिंह, कुमारपाल आदि को सम्यक्त्व प्रदान कर जिनभक्त बनाया। इस प्रकार शास्त्र साक्षी है जिनवाणी श्रवण से साधकों ने अपना कल्याण किया।

श्रवण विकास से जागरण का भाव पैदा होता है, आत्म मूर्च्छा दूर होती है। दशवैकालिक सूत्र 4/11 में स्पष्ट किया है-

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयंति जाणई सोच्चा, जं छेयं तं समायरे ।।

अर्थात आत्म हितकर कर्म (धर्म और पुण्य) और दुःख कारक कर्म (पाप) को सुनकर ही जीव जानता है। दोनों को श्रवण के द्वारा जानकर उपादेय-ग्रहण करने योग्य, हेय-छोड़ने योग्य और ज्ञेय-जानने योग्य भावों की उपलब्धि रुचि सहित श्रवण से ही होती है। इस तरह जब श्रद्धायुक्त समझ की प्राप्ति होती है, तब जीवादि तत्वों की विशिष्ट जानकारी पाने की प्रवृत्ति होती है। ज्यों-ज्यों जीवादि तत्वों का ज्ञान होता है, त्यों-त्यों जीव की विकृतियों के कारणों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है तथा विकृतियों के परित्याग की भावना विकसित होती है, इस तरह जीव सूत्र धर्म की तीन भूमिकाएँ हैं - श्रवण, ज्ञान, विज्ञान को उपलब्ध करता है और वह जाग्रत बनता है। जब वह जाग्रत बनता है तो निम्न लाभ होते हैं -

(1) ज्ञानावर्णीय कर्मों का क्षय होता है। (2) मूल सूत्रों की पुनरावृत्ति-जिसे परिवर्तना कहते हैं। परिवर्तना ध्यान का आलम्बन है क्योंकि वीतरागता के प्रति श्रद्धा, भक्ति, प्रीति, तत्वरमण की प्रवृत्ति और एकाग्रता से किया गया शास्त्रों का परिवर्तन रूपी स्वाध्याय मंत्र रूप बन जाता है। इसलिए जिनवाणी श्रवण के लिए 'यत्न-प्रयत्न' कर आगे बढ़ना चाहिए। उसकी निन्दा करके प्रयत्नों को ख़त्म नहीं करना चाहिए। (3) जिनवाणी को बार-बार सुनने से मोक्ष की इच्छा ताज़ी बनी रहती है, तत्व की उपलब्धि होती है। (4) जिनवाणी सुनने से जीव में संवेग उत्पन्न होता है, जिससे जीव का हित होता है, ऐसा हित न देह, न स्वजन और न ही धन का ढेर कर सकता है। (5) सूत्र स्मृति होती है। (6) धारणा शक्ति (संकल्प) का विकास होता है। (7) द्रव्यश्रुत भावश्रुत में बदल जाता है। (8) पुष्ट ज्ञान भवान्तर में भी साथ जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है जिनवाणी श्रवण-नियमित रूप से विधि सहित दर्शायी गयी प्रक्रिया द्वारा सुनने से साधक सम्यक्त्वी बनकर मोक्षगामी बन सकता है। अतः हमें प्रवचन में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। ❖❖

अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण

- डॉ. एन. के. खींचा (सीनियर फैलो, आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली)

अहिंसा सम्यक् संतुलन का हेतु है। वस्तुतः मानवता का विकास सस्टेनेबिलिटी से होता है। अहिंसा द्वारा पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण जीव मात्र के लिए सस्टेनेबल समाधान तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। जीव मात्र की रक्षा एवं संवर्धन तथा क्लीन एनर्जी के लिए अहिंसा प्रतिबद्ध होती है। अहिंसा स्वयं पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है।

चारित्र पाहुड ग्रन्थ में हिंसा से विरति को अहिंसा कहा गया है। (चारित्र पाहूड 30) अहिंसा महाव्रतों एवं अणुव्रतों के पालन हेतु वचनगुप्ति, मनोगुप्ति, ईर्या समिति, सुदान-निक्षेप तथा अवलोक्य मार्ग है। पर्यावरणीय नैतिकी (Environmental Ethics) के लिए सर्वप्रथम अहिंसा व्रत आवश्यक है तभी परिस्थितिकीय स्थापत्य, हरित स्थापत्य, स्थानीय परिस्थितिकी संभव होगी ताकि ईकोलॉजिकली साउंड अरबन प्लानिंग (ESUP) हो सकती है। जीवन संस्कृति का मूलाधार ही अहिंसा है।

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'' (तत्वार्थ सूत्र 5-21) की मुख्य धुरी है, पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण की सहोदर भावना आधार है। अहिंसामय जीवनचर्या है।

चूंकि पर्यावरण संरक्षण का आधार ही अहिंसा है। अहिंसा से ही परस्पर जीवों में सहजीवन, बंधुत्व, दया, अनुकंपा, करुणा, सेवा तथा वात्सल्य संभव है। शाकाहारी होना अहिंसक वृत्ति का प्रथम लक्षण है। अहिंसा को महाभारत के आदिपर्व, वनपर्व तथा अनुशासन पर्व में 'अहिंसा परमो धर्मः' की संज्ञा दी गई है। अहिंसा परम धर्म है, आत्म-संयम है, परम सत्य है। अहिंसा परम पुरुषार्थ है। अहिंसा एवं आचरण (Conduct) ही पर्यावरण संरक्षण है।

अहिंसा जीवन का परम सत्य है। अहिंसा पर्यावरण सुरक्षा का मंत्र है। अहिंसा स्वयं पर अनुग्रह है। अहिंसा का आरम्भ अपरिग्रह से है। अहिंसा जीवन का शोधक तत्व है। अहिंसा, आत्मशुद्धि का मार्ग है। अहिंसा सभी प्रदूषणों के निवारण के लिए रामबाण है। अहिंसा का आधार कायरता नहीं बल्कि वीरता है, साहस है। अहिंसा संयम है, तप है, पुरुषार्थ है, जीवन मात्र के लिए सम्मान है। अहिंसा, अन्तर्मन का सम्पूर्ण रूपान्तरण है।

अहिंसा ही परम ब्रह्मस्वरूप है। अहिंसा मुक्ति का मार्ग है। अहिंसा आत्महित करती है। व्यवहार जगत् में तप, श्रुत, यम, आत्मज्ञान, ध्यान, दान, सत्य, शील व्रतादिक श्रेष्ठ कृत्य है, उन सबकी धुरी अहिंसा ही है। अहिंसा सर्व जीवधारियों की रक्षा करती है। अहिंसा जीवन का परम आदर्श है। अहिंसा का लक्ष्य जीवन शोधन है। अहिंसा से द्रव्य शुद्धि एवं भाव शुद्धि होती है। अहिंसा सामाजिक साम्य है। अहिंसा पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का पर्यवेक्षण है। पर्यावरण संरक्षण का मूल स्तम्भ अहिंसा है। अहिंसा प्रथम अहिंसाणुव्रत है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु अहिंसा शुभ प्रक्रिया है। पर्यावरण क्षरण का मुख्य कारक है, पर-पदार्थ के प्रति राग, आसक्ति एवं लोभ। जबकि अहिंसा का मार्ग अपरिग्रह का हेतु है। अपरिग्रह से स्वतः ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण होता है। अहिंसा संयम है। अहिंसा जीवन का आधारभूत मूल्य है। अहिंसा जीवन शुद्धि और समृद्धि का मार्ग है। अहिंसा जीवन में मैत्री, वात्सल्य, शांति रूपी जल का प्रोक्षण (छिड़काव) करती है। अहिंसा लोक में जीवमात्र में सहोदर भावना पोषित करती है।

24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने देशना दी कि **'सव्वे पाणा पियाउपा सुहसाया दुक्खपडिकूला ।'** अर्थात् समस्त जीवों को अपना जीवन प्रिय है, उन्हें सुख अच्छा लगता है तथा दुःख प्रतिकूल लगता है। जीवन में राग-द्वेष और मोह की अनुत्पत्ति ही अहिंसा है। अहिंसा के अतिरिक्त सब व्रत, अहिंसा की परिपालना के लिए ही हैं। अतः जीव परस्पर उपकार करें। वस्तुतः करुणा (Compassion) जीव मात्र का स्वभाव है। जैन संस्कृति के अनुसार सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव, प्रमोदभाव तथा दुःखियों के प्रति करुणा भाव रखना ही उत्तम है।

जैन संस्कृति का ध्येय है कि किसी से वैर नहीं बल्कि

सभी प्राणियों के प्रति मित्रता हो। प्रत्येक जीव परस्पर उपकार करें। महावीर की देशना है कि **'मित्ती मे सव्व भुएसु, वेरं मज्झं ण केणइ।'** अहिंसा और मैत्री एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जैन संस्कृति न केवल प्राणी बल्कि पृथ्वी, जल, वायु आदि की भी हिंसा न करने का संदेश देती है। जैन संस्कृति में अहिंसा के पर्यायवाची के रूप में अनुकम्पा का प्रयोग हुआ है। अनुकम्पा पर-पीड़ा का स्व-संवेदन है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है कि समस्त जीवों का रक्षण और उन पर परस्पर दया करें। सभी जीवों को आत्म तुल्य मानें। आचारांग सूत्र में निर्देशित किया गया है कि सभी जीवों को समान मानें अर्थात् आत्मवत् सर्वभूतेषु मानें। दैनिक व्यवहार में चुनाव (Selection) आवश्यक होने पर ही अल्पतम हिंसा को ही व्यवहार जगत् में अपनाना चाहिए। मन, वचन और काया से हिंसा का त्याग करें - (आचारांग अध्ययन 6 सूत्र 107)।

समाज जीवन का आधार सकारात्मक (Positive) अहिंसा है, वह भी सापेक्ष अहिंसा है किन्तु सकारात्मक अहिंसा में घटित हिंसा, हिंसा ही है। हिंसा से ही प्रदूषण फैलता है। हिंसा और अहिंसा मुख्य रूप से व्यक्ति के आन्तरिक मनः स्थिति का परिणाम है। निर्णय हेतु विवेक बुद्धि अपेक्षित होती है। अहिंसा सभी त्रस एवं स्थावर जीवों का क्षेम कुशल मंगलकारी होती है। अतः किसी प्राणी का वध न करें तथा दूसरों पर शासन करना अथवा दास (गुलाम) बनाना अथवा अशान्त करना भी आचारांग सूत्र आगम में निषिद्ध बताया गया है।

अनुकम्पा क्या है? इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है कि दुःखी प्राणी के दुःख से स्वयं दुःख का अनुभव कर उसके प्रति करुणा जनित व्यवहार भाव ही अनुकम्पा है। अहिंसा को व्यवहार जगत् में अपनाने के लिए जैन संस्कृति में यतना (विवेक) को प्रतिक्षण अपनाने पर (प्रवृत्ति पर) ज़ोर दिया गया है।

यतना से भाव विशुद्धि रहती है, अपने परिणामों को शुद्ध रखें क्योंकि अशुभ परिणाम (भाव) के कारण यदि जीवों का घात (हिंसा) होता है तो वह हिंसा (Violence) है। पर्यावरण शुद्धि बनाये रखने के लिए मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भाव जो कि शुभ भाव है, शुद्ध भाव से व्यवहार जगत में जीवनचर्या करने से कषाय (Passion) नहीं अपनाते हैं। हिंसा न होना, पर्यावरण का रक्षण है। मित्र भाव में सर्वहितकारी भाव ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है क्योंकि सुप्रवृत्ति ही आत्मा मित्र भाव है तथा दुष्प्रवृत्ति अमित्र (शत्रु) भाव है। सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव, गुणवानों के प्रति प्रमोद भाव तथा दुखियों के प्रति करुणा भाव तथा अविनीतों के प्रति माध्यस्थ भाव रखना ही हिंसा रूपी प्रदूषणों से बचाव है। जैन संस्कृति में करुणा को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है किन्तु अप्रमाद, आलस्य, तन्द्रा, मूर्च्छा तथा अविवेक एवं लापरवाही के कारण अयतनापूर्वक की गई प्रवृत्ति से हुई प्राणातिपात हिंसा है।

अतः अहिंसा ही संवर का प्रथम द्वार है। जैन संस्कृति में वध, बंध विच्छेद, अतिभाररोपण, भक्तपान विच्छेद से बचना अहिंसा है। इसी प्रकार अनर्थदण्ड विरमणव्रत धारण करने से विविध प्रकार की हिंसा से बचा जा सकता है। जिसमें अपध्यानाचरित, प्रमादाचरित, हिस्तप्रदान या पापोपदेश प्रमुख है। वस्तुतः सभी जीवों को अपना जीवन प्रिय है। वध (मरण) सबको अप्रिय है। अतः किसी भी प्राणी की घात हिंसा नहीं करना चाहिए। अशुभ भाव (परिणाम) भी हिंसा है। अहिंसा ही संस्कृति है। त्रस-हिंसा से बचना भी अणुव्रत है। शुभ भाव ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है। अकषाय भाव ही आत्म स्वभाव है। यही सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र की साधना है। राग-द्वेष रहित वीतराग भाव ही संवर और निर्जरा है जो कि पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का मूल है।

शस्त्र (हिंसा) तो एक से बढ़कर एक हैं किन्तु अशस्त्र (अहिंसा) एक से बढ़कर एक नहीं है। अहिंसा की साधना से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण साधना है। ज्ञानी (विवेकवान) होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। हिंसा के अनुमोदन से भी दुःख होता है। विवेकशील (साधनाशील) मानव हिंसा का त्याग कर देता है। कहा भी गया है **'प्रमत्त योगात्प्राण व्यपरोपणं हिंसा'** अर्थात् असावधानी अथवा अविवेकपूर्ण आचरण के व्यवहार से जीवों का घात होता है, वह हिंसा है। अतएव हिंसा से बचें ताकि पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण आपके व्यवहार में स्वतः ही आ सके। ❖❖

पश्चिमी सभ्यता से आकर्षित युवा पीढ़ी पर ध्यान दें माता पिता

प्रेषक - श्री जे. महावीरचन्द कोठारी, चेन्नई (तमिलनाडु)

जैन समाज की युवा पीढ़ी आज किस ओर जा रही है। किसी का इस ओर ध्यान नहीं है। सब अपने व्यापार एवं सामाजिक कार्यों में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपने बच्चों का कोई ध्यान नहीं है कि बच्चे किधर जा रहे हैं, किसे मिल रहे हैं, किससे दोस्ती कर रहे हैं। युवा पीढ़ी आजकल पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हो रही है जैसे कि हुक्का सेवन, शराब की लत व पार्टियाँ आदि। माता-पिता भी आजकल पश्चिमी सभ्यता एवं खुली मानसिकता में डूबे हैं। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है। सप्ताह में 6 दिन व्यवसाय को और सप्ताह का एक दिन घूमने के लिए, इसके अलावा उन्हें कोई और मतलब नहीं। धर्म व संस्कार में कोई रुचि नहीं है। बच्चों को Bachelor Parties, Bachelor Night Study, Bachelor Foreign Trips, India Trips इन सब की इजाज़त है।

यही कारण है कि बच्चों के व्यवहार में बदलाव हो रहा है, जैसे कि ज़िद्द करना, ज़ोर से बोलना-चिल्लाना, व्यवहार से बड़ों के सम्मान में कमी। यह समाजजनों के लिए यह सोचने का विषय है। पर्युषण, सम्वत्सरी, महावीर जयन्ती पर स्थानक जाने के लिए कहने की हिम्मत माता-पिता जुटा नहीं पाते हैं। आज हुक्का, सिगरेट व शराब का प्रचलन बढ़ चुका है। जब लड़का-लड़की वैवाहिक सम्बन्धों के लिए एक दूसरे को देखने जाते हैं तो कहते हैं कि Hobbies क्या हैं, क्या नहीं हैं? समझ न आए तो ना कह देते हैं।

उत्कृष्ट समाज, उत्कृष्ट परिवार, अनमोल जिनशासन मिला है, लेकिन फिर भी युवा पीढ़ी आज गलत परिवेश में जा रही है। इसका मुख्य कारण है कि हमने धर्म की बजाय धन को प्रथम स्थान दिया। परिवार द्वारा धर्म से विमुख होना और बच्चों को भी धर्म से विमुख करना। तुम व्यापार करो बाकी हम तो प्रवचन में जा ही रहे हैं। कई परिवारों में नवकारसी, रात्रि भोज, जिमीकंद, Multi Cuisine Hotel (Veg. & Non-Veg.) आदि का कोई ज्ञान नहीं है। हमारा समाज सभ्य होते हुए भी आज गलत रास्ते की ओर जा रहा है। इतने सम्पन्न हो चुके हैं कि पैसा ही सब कुछ है, धर्म का कोई मतलब नहीं है। परिवार में, स्थानक से उन्हें कोई मतलब नहीं। धर्म से बेरुखी के कारण आज की युवा पीढ़ी गलत परिवेश, गलत दोस्ती के कारण आने वाला समय पहले Characterless, फिर Healthless, फिर Wealthless होगा। युवा पीढ़ी के युवा माता-पिता से नम्र निवेदन है कि युवा बच्चों पर पूरा ध्यान रखें, उन्हें धर्म से जोड़ें। सप्ताह में एक बार ज़रूर स्थानक भेजें। अपने घर से ही हमें एक सभ्य समाज बनाना है। सप्ताह में परिवार के साथ मिलकर अवश्य प्रार्थना करें, व्यापार की जगह व्यवहार धर्म को अपनाएं नहीं तो सब शून्य है।

विशेष आग्रह है कि Multi Cuisine Hotel में नहीं जाना है, शराब, सिगरेट, हुक्का, देर रात पार्टी, रात को 12 बजे या 1 बजे खाना मँगाकर खाना, इन सब पर प्रतिबंध लगाना है। युवा पीढ़ी को सही दिशा दिखाना है। अपने परिवार से इसकी शुरुआत करना है। जीवन में जैनत्व को अपनाना है। परिवार में छोटे-बड़े सब को रोज़ कुछ न कुछ धर्म आराधना करनी है। ❖❖

जीवन में अक्सर हम अतीत की बुरी यादों और अनुभवों को याद कर दुःखी होते रहते हैं। इस तरह हम अपने वर्तमान पर ध्यान नहीं दे पाते और कहीं न कहीं अपना भविष्य बिगाड़ लेते हैं।

जो हो चुका, उसे सुधारा नहीं जा सकता। लेकिन कम से कम उसे भुलाया तो जा सकता है और उन्हें भुलाने के लिए नई मीठी यादें हमें आज बनानी होंगी। जीवन में मीठे और खुशनुमा लम्हों को लाइये, तभी तो जीवन में मिठास आयेगी। ❖❖

योग प्राणायाम और ध्यान अभ्यास से आयुष्य का सम्बन्ध

प्रेषक - डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलुरु (कर्नाटक)

श्री पन्नवणा सूत्र के छठे पद में आयुष्य बंध पर विवेचन किया है। आयुष्य बंध आठ आकर्षों से बंधने की बात कही गई है अर्थात् आयुष्य बंध अधिक से अधिक अंतर्मुहूर्त ही होता है। आयुष्य के साथ-साथ जाति गति स्थिति अवगाहन प्रदेश और अनुभाग नाम का कर्म बंध होता है। इसमें गति एवं जाति में नहीं बदलते, हाँ, स्थिति आदि शेष नाम कर्म क्षयोपशमन से बदलते जाते हैं। असंख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्य का आयुष्य निरूपक्रम होता है अर्थात् मनुष्य अपने आयु के तीसरा भाग शेष रहने पर परभव की आयुष्य बांधते हैं।

इसके अलावा सातवें पद में श्वासोच्छवास पर विचार किया गया है। नरक आदि चारों गति के श्वासोच्छवास की गणना इस पद में की गई है। हाँ, यह सच है कि योगासन प्राणायाम और ध्यान साधना से मनुष्य स्वस्थ और पूरी ज़िंदगी जीता है लेकिन यह भी सौ टके सच्ची बात है कि योगासन प्राणायाम और ध्यान साधना से हम आयुष्य बढ़ा कर लम्बी ज़िंदगी नहीं पाते। हाँ, इनकी आराधना और साधना से मनुष्य अपना पूरा जीवन जी सकता है। सबसे पहले हम लम्बा जीवन और पूरे जीवन की भेद रेखा को समझें। जैन धर्म में आयुष्य का श्वासोच्छवास से गहरा सम्बन्ध बताया गया है। जैन दर्शन के अनुसार अगले जन्म में हमारे श्वासोच्छवास कितने होंगे? अगले जन्म में गति जाति आदि क्या होगी? यह सब वर्तमान भव में ही निश्चित हो जाता है। जैन आगम शास्त्रों में श्वासोच्छवास पर्याप्ति और श्वासोच्छवास बल प्राण पर विशेष प्रकाश डाला गया है। श्री पन्नवणा सूत्र में श्वासोच्छवास पर गहराई से विवेचन हुआ है। नरक तिर्यंच मनुष्य और देवलोक के जीव श्वासोच्छवास कितने प्रकार से लेते छोड़ते हैं, इसका विवेचन इस शास्त्र में वर्णित किया गया है। जो जीव जितना शान्त और स्वस्थ होता है, उसके श्वासोच्छवास भी उसी अनुरूप में गतिमान होते हैं।

गौतम गणधर के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्रमण भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि नारकी के जीवों का श्वासोच्छवास बहुत तेज़ होता है और देवताओं का श्वासोच्छवास अपने अपने स्थान की अपेक्षा शान्त और दीर्घ होता है। मनुष्य और तिर्यंच गति के जीवों का श्वासोच्छवास हमेशा एक सा नहीं रहता। आवेग, आवेश, क्रोध आदि कषाय की स्थिति में असामान्य हो जाता है। आज विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि आवेश आवेग, विषय वासना, क्रोध आदि कषाय में उन जीवों की श्वासोच्छवास की गति बढ़ जाती है। इस बात को योगियों और साधकों ने अपने अनुभव से जाना कि जीवन स्वस्थ और पूरा जीने के लिए श्वासोच्छवास को लम्बा और गहरा होना आवश्यक है। हिमालय (भारत), चीन, जापान के योग साधकों से उनकी लम्बी उम्र का राज़ पूछा तो उन्होंने दीर्घ और गहरी श्वासोच्छवास को बताया। जैन धर्म के अनुसार ज़िंदगी को दीर्घ या लम्बा नहीं बनाया जा सकता, हाँ, उससे पूरा जीवन जी सकते हैं।

जब देवेन्द्र ने महावीर स्वामी को आकर निवेदन किया कि वे अपना आयुष्य थोड़ा सा बढ़ा लें कि जिनशासन पर भस्माग्रह लगने वाला है तब स्वयं अनुत्तर योगी श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने अपनी आयुष्य बढ़ा पाने में असमर्थता जताई। सर्वज्ञ सर्वदर्शी तीर्थंकर भी अपने आयुष्य बढ़ा पाने में सफल नहीं हैं तो हम छद्मस्थ मनुष्य की क्या ताकत कि दीर्घायु हो सकें। जैसे पहले कहा गया है कि सम्पूर्ण आयु और दीर्घ आयु में बहुत फर्क है। जैन धर्म में अकाल मृत्यु और सकाल मृत्यु पर विशेष प्रकाश डाला गया है। अकाल मृत्यु यानि समय से पहले मरण को प्राप्त होना। जैसे पहले बताया गया है कि हर मनुष्य अपने श्वासोच्छवास लिखा कर आता है। अब यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब हरेक के श्वासोच्छवास नियत हैं और वह उन्हें भोगे बिना अगले भव में नहीं जा सकता तो फिर यह तो सकाल मृत्यु हुई न कि अकाल मृत्यु। यहां गंभीरता और निष्पक्ष भाव में चिन्तन करें कि मनुष्य अपना आयुष्य (श्वासोच्छवास) नहीं बढ़ा सकता लेकिन शीघ्र समाप्त कर सकता है। जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य आवेश, आवेग में, विषय वासना में, क्रोध आदि कषाय में अपने श्वासोच्छवास जल्दी जल्दी लेकर खत्म कर देता है।

इसे एक उदाहरण से समझने का प्रयास करें। किसी बच्चे को माता-पिता, खर्च के लिए पॉकेटमनी देते हैं, कोई बच्चा उस पॉकेटमनी को जल्दी जल्दी खर्च कर देता है और कोई समझदार बच्चा उस को आराम से धीरे-धीरे खर्च करता है। ठीक इसी तरह कोई मनुष्य जल्दी जल्दी श्वासोच्छवास खत्म कर देता है और योग साधक उसे धीरे धीरे लम्बे गहरी श्वासोच्छवास से खत्म करता है। इसी कला को भारत, तिब्बत, चीन और जापान के योग साधकों ने जाना। आज पूरे विश्व में इस रहस्यमयी साधना द्वारा योग साधक, जान समझ कर जीवन में उतारता है। वे जानते हैं कि कैसे श्वासोच्छवास के रहस्य को समझ कर उसे गहरी धीमी गति से खर्च करें।

इसे तिर्यंच जीव के उदाहरण से समझा जा सकता है। वैज्ञानिक इस बात को स्वीकार करते हैं कि एक कुत्ता एक मिनट में 50 से 60 बार श्वासोच्छवास लेता छोड़ता है जो 15 से 20 साल जीवित रहता है और एक कछुआ एक मिनट में 2 से 3 श्वासोच्छवास लेता छोड़ता है, वह 150 से 200 साल जीवित रहता है। मनुष्य साधारणतया 16 से 20 श्वासोच्छवास लेता छोड़ता है, वह 50 से 80 साल जीवित रहता है। तिर्यंच की अपेक्षा मनुष्य में यह सामर्थ्य होता है कि वह अपने श्वासोच्छवास को घटा बढ़ा सकता है। आवेग, आवेश, विषय वासना और क्रोध आदि कषाय की दशा में मनुष्य के श्वासोच्छवास की गति बढ़ जाती है।एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि जैन धर्म के अनुसार सभी जीव श्वासोच्छवास लेते छोड़ते हैं तो एकेन्द्रिय जीव के नाक (घ्राण) नहीं तो वो जीव कैसे श्वासोच्छवास लेते छोड़ते हैं? जैन आगम शास्त्रों में इसका समाधान करते हुए कहा कि एकेन्द्रिय जीव अपने स्पर्शनेन्द्रिय से श्वासोच्छवास लेते-छोड़ते हैं। पहले विज्ञान इस बात पर सहमत नहीं था लेकिन कोरोना महामारी के पश्चात् वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया कि जीव पूरे शरीर (स्पर्शनेन्द्रिय) से श्वासोच्छवास लेता छोड़ता है। इसका सबसे बड़ा सबूत ऑक्सीमीटर है। कोरोना काल में डॉक्टर तो क्या हर मनुष्य अपने हाथों की ऊंगली पर ऑक्सीमीटर से श्वासोच्छवास की गति को मापने लगा और सभी को यह विश्वास हो गया कि मनुष्य (जीव) सिर्फ घ्राण (नाक) से ही नहीं अपने पूरे शरीर से श्वासोच्छवास लेता छोड़ता है। एक और तथ्य यह है कि आज कल बहुत से मनुष्य, छोटी छोटी उम्र में हृदयाघात के शिकार हो मृत्यु को प्राप्त होने लगे हैं। विशेष कर कोरोना महामारी के इंजेक्शन के पश्चात यह समस्या पूरे विश्व में बढ़ती जा रही है। हमने देखा कि कोरोना महामारी के समय श्वासोच्छवास की कितनी समस्या हो गई और कई लोग अकाल मृत्यु के ग्रास बन गए चूंकि उनके श्वासोच्छवास बहुत बाकी थे लेकिन महामारी के कारण उन्हें श्वास लेने छोड़ने में कितनी तकलीफ होती थी।

अब मुख्य मुद्दे पर चर्चा करेंगे। कैसे योगासन प्राणायाम और ध्यान साधना के अभ्यास से मनुष्य अपना आयुष्य नहीं बढ़ा सकता परन्तु पूरा जीवन स्वस्थ रह कर जी सकता है। जैन धर्म के आगम शास्त्र श्री पन्नवणा सूत्र में श्वासोच्छवास पर गहराई से विवेचन किया गया है। इसमें चार शब्द उस्सासई वा, निस्सासई वा, उस्संती वा और निस्संती वा। इसमें पहली दो क्रियाएं बाह्य श्वासोच्छवास से और बाद की दो क्रियाएं आभ्यंतर श्वासोच्छवास से सम्बन्धित हैं। सार संक्षेप में कहें तो मनुष्य अपने जीवन को बढ़ा पाने में समर्थ नहीं होता, लेकिन अपने श्वासोच्छवास को पूरा लेने में सक्षम हो सकता है। किसी योग्य गुरु या योग प्राणायाम और ध्यान साधक से इसे समझ कर सीखा जा सकता है।

❖❖

निराशा, एक ऐसी बीमारी है जिसकी चपेट में एक बार कोई आ गया तो उसका उभरना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। अधिकांश लोग नये काम की शुरुआत तो बहुत उत्साह के साथ करते है, लेकिन, अपने द्वारा तय समय सीमा में अगर सफलता हासिल नहीं होती तो कुछ समय बाद ही सारा उत्साह खत्म होने लगता है। इसका सबसे बड़ा कारण होता है उदासीनता यानी खुद में मोटिवेशन की कमी। काम चाहे छोटा हो या बड़ा उसे अच्छे से पूरा करने के लिए मोटिवेशन Motivation की बहुत जरूरत होती है। बिना मोटिवेशन के अगर हम कोई काम कर भी लें तो उस काम में ना मजा आएगा और ना ही वह काम ढंग से होगा।

नवम्बर 2023 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैयावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति अक्टूबर माह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में चातुर्मास चल रहे हैं और हर प्रांत की वैयावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैयावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैयावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री अशोकजी रांका, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.रतनचंदजी सिंघवी ने जानकारी देते हुए बताया कि सितम्बर माह की भाँति इस अक्टूबर माह में भी लगभग 70-80 के आस-पास सक्षम संघों ने सेवादारों को मासिक वेतन प्रदान किया है। राष्ट्रीय वैयावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 2,30,500 रुपये की धनराशि वेतन के रूप में प्रदान की है। 16,500 रुपये की धनराशि से व्हील चेयर खरीदे गये। इस प्रकार कुल 2,47,000 रुपये की धनराशि वैयावच्च गतिविधियों में अक्टूबर माह में खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री अशोकजी रांका, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी ने सभी दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए वैयावच्च सेवा में रुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिकाधिक सहयोग देने की अपील की है। वैयावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्दजी सिंघवी द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहां मुक्त हस्त से पूरा किया जा रहा है वहीं आप पूज्यवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं, उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से आभार प्रकट किया।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT
SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

एक बार एक व्यक्ति ने महान् दार्शनिक सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है? सुकरात ने उस इंसान को कहा कि वह कल सुबह नदी के पास मिले, वहीं पर उसे अपने प्रश्न का जवाब मिलेगा। जब दूसरे दिन सुबह वह व्यक्ति नदी के पास मिला तो सुकरात ने उसको नदी में उतरकर, नदी की गहराई मापने के लिए कहा। वह व्यक्ति नदी में उतरकर आगे की तरफ जाने लगा। जैसे ही पानी उस व्यक्ति की नाक तक पहुंचा, पीछे से सुकरात ने आकर अचानक से उसका मुँह पानी में डूबो दिया। वह व्यक्ति बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगा, कोशिश करने लगा, लेकिन सुकरात थोड़े ज़्यादा शक्तिशाली थे। सुकरात ने उसे काफी देर तक पानी में डुबोए रखा।

कुछ समय बाद सुकरात ने उसे छोड़ दिया और उस व्यक्ति ने अपना मुँह पानी से बाहर निकालकर जल्दी-जल्दी साँस ली। सुकरात ने उस व्यक्ति से पूछा जब तुम पानी में थे तो तुम क्या चाहते थे? व्यक्ति ने कहा- जल्दी से बाहर निकलकर सांस लेना चाहता था। सुकरात ने कहा- यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे, जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांस लेना चाहते हो, तो तुम्हें सफलता निश्चित रूप से मिल जाएगी।

श्रमण संघ के पूर्वाचार्यों के जन्म, दीक्षा आदि महत्वपूर्ण तिथियाँ

आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा.	जन्म :	भादवा सुदी द्वादशी वि.स. 1939
	दीक्षा :	आषाढ़ शुक्ला पंचमी वि.स. 1952
	पद-ग्रहण :	वैशाख शुक्ला तृतीया वि.स. 2009
	देवलोक :	माघ कृष्णा दशमी वि.स. 2019
आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा.	जन्म :	श्रावण शुक्ला एकम वि.स. 1957
	दीक्षा :	मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी वि.स. 1970
	पद-ग्रहण :	अजमेर मुनि सम्मेलन वि.स. 2020
	देवलोक :	28 मार्च 1992 वि.स. 2049
आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	जन्म :	कार्तिक कृष्णा तेरस वि.स. 1988
	दीक्षा :	फाल्गुन शुक्ला तृतीया वि.स. 1997
	पद-ग्रहण :	चैत्र शुक्ला पंचमी वि.स. 2050
	देवलोक :	वैशाख शुक्ल एकादसशी वि.स. 2056

श्रमण संघ के पदाधिकारी मुनिराजों के जन्म, दीक्षा आदि महत्वपूर्ण तिथियाँ

आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	जन्म :	18 सितम्बर 1942 भाद्रपद शुक्ल पक्ष नवमी वि.स. 1999
	दीक्षा :	17 मई 1972 वैशाख शुक्ल पंचमी वि.स. 2029
	पद-ग्रहण:	07 मई 2001 वैशाख सुदी पूर्णिमा वि.स. 2058
युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	जन्म :	05 अक्टूबर 1967
	दीक्षा :	03 फरवरी 1982
	पद-ग्रहण:	27 मार्च 2015
वाचनाचार्य उपा. श्री विशालमुनिजी म.सा.	जन्म :	12 नवम्बर 1953
	दीक्षा :	22 जनवरी 1972
	पद-ग्रहण:	जनवरी 1986
उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी म.सा.	जन्म :	24 जनवरी 1951
	दीक्षा :	15 मार्च 1965
	पद-ग्रहण:	07 मई 2003
उपाध्याय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.	जन्म :	31 जनवरी 1957
	दीक्षा :	07 दिसम्बर 1975
	पद-ग्रहण:	03 सितम्बर 2004
उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.	जन्म :	07 अक्टूबर 1957
	दीक्षा :	24 मार्च 1974
	पद-ग्रहण:	10 सितम्बर 2004

उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	जन्म :	06 मई 1960
	दीक्षा :	विजया दशमी 1978
	पद-ग्रहण :	03 सितम्बर 2004
उपाध्याय श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'	जन्म :	आश्विन शुक्ल अष्टमी, संवत् 2018
	दीक्षा :	माघ शुक्ल पंचमी, संवत् 2032
	पद-ग्रहण :	17 नवम्बर 2021
प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.	जन्म :	24 नवम्बर 1936
	दीक्षा :	09 मई 1962
	पद-ग्रहण :	10 मई 1994
प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'	जन्म :	28 नवम्बर 1960
	दीक्षा :	08 मई 1974
	पद-ग्रहण :	14 जुलाई 2012
प्रवर्तक डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.	जन्म :	01 जनवरी 1954
	दीक्षा :	15 मार्च 1965
	पद-ग्रहण :	15 मार्च 2016
प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म.सा.	जन्म :	पौष शुक्ल चतुर्थ वि.स. 2004 (15.01.1948)
	दीक्षा :	08 मई 1974
	पद-ग्रहण :	14 जुलाई 2012
प्रवर्तक श्री विजयमुनिजी म.सा.	जन्म :	08 फरवरी 1952
	दीक्षा :	11 नवम्बर 1967
	पद-ग्रहण :	30 अक्टूबर 2019
प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	जन्म :	12 अगस्त 1951
	दीक्षा :	16 फरवरी 1964
	पद-ग्रहण :	29 नवम्बर 2020
प्रवर्तक श्री आशीषमुनिजी म.सा.	जन्म :	28 मार्च 1953
	दीक्षा :	26 अप्रैल 1974
	पद-ग्रहण :	29 नवम्बर 2020
प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा.	जन्म :	19 फरवरी 1964
	दीक्षा :	07 मई 1990
	पद-ग्रहण :	07 मई 2003
मंत्री श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश'	जन्म :	13 फरवरी 1957
	दीक्षा :	22 अप्रैल 1980
	पद-ग्रहण :	21 मई 2012
सलाहकार श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा.	जन्म :	अश्विन शुक्ला सप्तमी वि.स. 1964 ई. सन् 1938
	दीक्षा :	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा वि.स. 2016, 26 अप्रैल 1959
	पद-ग्रहण :	26 नवम्बर 1987
	देवलोक :	27 नवम्बर 2023

सलाहकार श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'	जन्म	:	श्रावण वदी तेरस, वि.स.स 1993, ई. सन् 1936
	दीक्षा	:	माघ सुदी तेरस, वि.स. 2016, सन् 1960
	पद-ग्रहण	:	07 मई 2003
सलाहकार श्री तारकऋषिजी म.सा.	जन्म	:	विजया दशमी, ई. सन् 1956
	दीक्षा	:	13 मई 1974
	पद-ग्रहण	:	07 मई 2003
सलाहकार श्री रमणीकमुनिजी म.सा.	जन्म	:	02 नवम्बर 1967
	दीक्षा	:	18 नवम्बर 1973
	पद-ग्रहण	:	07 मई 2003
सलाहकार श्री दिनेशमुनिजी म.सा.	जन्म	:	22 मई 1960
	दीक्षा	:	08 नवम्बर 1973
	पद-ग्रहण	:	07 मई 2003
सलाहकार श्री विनयमुनिजी म.सा. 'भीम'	जन्म	:	05 जून 1955
	दीक्षा	:	26 जनवरी 1972
	पद-ग्रहण	:	07 मई 2003
सलाहकार श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'	जन्म	:	15 अक्टूबर 1949
	दीक्षा	:	25 अप्रैल 1966
	पद-ग्रहण	:	29 नवम्बर 2010
प्रवर्तिनी डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.	जन्म	:	07 मई 1953
	दीक्षा	:	17 जनवरी 1966
	पद-ग्रहण	:	29 मई 2011
प्रवर्तिनी डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म.सा.	जन्म	:	22 जनवरी 1937
	दीक्षा	:	01 मई 1958
	पद-ग्रहण	:	06 सितम्बर 2014
प्रवर्तिनी डॉ. श्री सरिताजी म.सा.	जन्म	:	05 सितम्बर 1952
	दीक्षा	:	16 फरवरी 1964
	पद-ग्रहण	:	05 सितम्बर 2016
प्रवर्तिनी डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.	जन्म	:	23 मार्च 1952
	दीक्षा	:	09 दिसम्बर 1974
	पद-ग्रहण	:	15 अक्टूबर 2016
प्रवर्तिनी डॉ. श्री सुधाजी म.सा.	जन्म	:	01 अगस्त 1943
	दीक्षा	:	14 फरवरी 1965
	पद-ग्रहण	:	16 अक्टूबर 2016

ईश्वर इतना कृपालु है कि अपने भक्तों को बिना मांगे देता है!

समाचार प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा जूम एप्प के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न

वित्तीय वर्ष 2022-23 के ऑडिटेड अकाउंट्स को सर्वसम्मति से पारित किया गया

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा का आयोजन बुधवार, 29 नवंबर 2023 को निर्धारित समय पर जूम एप्प के माध्यम से जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। तीनों ही सभाओं का सफल संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन द्वारा प्रभावशाली रूप से किया गया।

सभा की शुरुआत से पूर्व श्रमणसंघीय सलाहकार, राजर्षि तपस्वीरत्न पूज्य श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. के 27 नवम्बर 2023 को देवलोकगमन हो जाने पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर श्रमणसंघ में उनके योगदान को याद कर दो मिनट का मौन रखा गया।

राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा में श्रीमती प्रेमलताजी बुरड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन तथा साधारण सभा में राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। तीनों ही सभाओं में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों, कार्यकर्ताओं एवं आजीवन सदस्यों की उपस्थिति बहुत सराहनीय रही। तीनों ही सभाओं में वित्तीय वर्ष 2022-23 के ऑडिटेड अकाउंट्स को जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे इन तीनों ही सभाओं में सर्वसम्मति से पारित किया गया।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने अपने उद्‌बोधन में जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्षों, मंत्रीगण एवं सभी पदाधिकारियों द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस के सतत विकास हेतु किये जा रहे सहयोग तथा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अनुमोदना की गई।

जूम एप्प पर आयोजित तीनों ही सभाओं में मुख्य रूप से जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अशोकजी बाबूसेठ बोरा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री संजीवजी जैन, श्री मनमोहनजी जैन, श्री शंभुलालजी ललवाणी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री जिनेश्वरजी जैन, श्री विजयजी डागा जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, श्री राजीवजी जैन, श्री उगमचंदजी गांधी जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन, श्री जयप्रकाशजी ललवाणी जैन, श्री अर्पितजी छाजेड़ जैन, श्रीमती दर्शनाजी तालेसरा जैन, कई योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन तथा उपस्थित पदाधिकारियों में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्रीगण, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्रीगण, राष्ट्रीय संगठन मंत्रीगण, अनेक प्रांतीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण एवं कार्यकर्ता तथा जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों की उपस्थिति सराहनीय रही। उपस्थित सदस्यों ने अपने विचारों के आदान-प्रदान से जैन कॉन्फ्रेंस की प्रगति पर चर्चा की। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन द्वारा तीनों सभाओं में उपस्थित पदाधिकारियों, कार्यकारिणी समिति सदस्यों एवं अन्य सदस्यों के प्रति सभाओं को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रेषक : अतुल जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

आचार्य देवेन्द्र जन्म जयन्ती पर उमड़ा जनसैलाब

दिल्ली : उपाध्याय प्रवर श्री रमेशमुनि जी म.सा., प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म.सा., साहित्यकार डॉ. सुरेन्द्रमुनि जी म.सा, सेवाभावी श्री दीपेशमुनि जी म.सा. तथा नव दीक्षित श्री पार्श्वेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के मंगलमय सान्निध्य में पू. आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. की जन्म जयन्ती का भव्य आयोजन अहिंसा विहार, रोहिणी, दिल्ली में बड़ी संख्या में भक्तजनों की उपस्थिति के बीच सुसम्पन्न किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में अहिंसा विहार लेडिज़ क्लब द्वारा सुन्दर स्वरूप में संगीतमय वन्दना प्रस्तुत की गई, जिसका श्रवण करते हुए उपस्थितजन भावविभोर हो उठे। तत्पश्चात् बालक-बालिकाओं द्वारा आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के जीवन चारित्र को उद्वत करती हुई नाट्य प्रस्तुति की गई।

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी जैन ने जहां आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. के जीवन चारित्र को अपने मुक्तामणि सम शब्दों से रेखांकित किया वहीं दिल्ली एवं आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में उपस्थित महानुभावों में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं नवकार तीर्थ अध्यक्ष श्री प्रशान्त जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री श्री जय कुमार जी जैन, नवकार तीर्थ के महामंत्री श्री डी.सी. छाजेड़ जी, श्री महेन्द्र जी डोसी, श्री दिनेश जी जैन (चाँदनी चौक), श्री सुरेन्द्र जी जैन (नांगलोई) आदि की उपस्थिति ने इस आयोजन की शोभा को द्विगुणित किया। इस अवसर पर सेवारत डॉक्टरों का जहां स्वागत किया गया वहीं क्षेत्र में नये भवन हेतु सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी तातेड़, लाला श्री हेमचन्द जी जैन, संघ अध्यक्ष श्री सुभाष जी पारेख के अलावा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा लगभग एक करोड़ की राशि का अनुदान दिया गया। स्थानीय श्रीसंघ की ओर से संघ अध्यक्ष श्री सुभाष जी पारेख, महामंत्री श्री हेमचन्द जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री अमित जी जैन, श्री शिखरचन्द जी जैन, श्री नरेश जी जैन, श्री ललित जी ओसवाल जैन, श्री करतारसिंह जी जैन, श्री विकास जी जैन आदि द्वारा आभार प्रस्तुत किया गया। श्री सुधीर जी जैन द्वारा इस अवसर पर जीवदया की सद्प्रेरणा प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में श्री पार्श्वेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा श्री उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया गया। श्री सुरेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा सुन्दर मंच संचालन किया गया तथा गुरुदेवों द्वारा प्रवचन एवं समारोह के अंत में मंगलपाठ प्रदान किया गया।

प्रेषक : सुभाष पारेख जैन, प्रधान-अहिंसा विहार श्रीसंघ

माम्बलम श्रीसंघ द्वारा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव तप-त्याग के साथ मनाया गया

चेन्नई (तमिलनाडु) : टी. नगर जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ विराजित स्वर्ण संयम आराधक पू. श्री वीरेन्द्रमुनि जी म. सा. के पावन सान्निध्य में 5 से 14 नवम्बर तक 10 दिवसीय भगवान महावीर की अंतिम देशना के वाचन का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान पुच्छिसुणं के सामूहिक स्वाध्याय के साथ श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययनों का मुनिश्रीजी ने सारगर्भित वाचन किया तथा श्रावक-श्राविकाओं ने भी पूरे मनोयोग से तप-त्याग, व्रत प्रत्याख्यान आदि लिए। अंतिम दिवस पर मुनिश्रीजी द्वारा अंतिम अध्याय का खड़े होकर वाचन करने के साथ ही भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, गौतम स्वामी केवलज्ञान कल्याणक एवं सुधर्मा स्वामी का पाट महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कर्नाटक गज केसरी खद्दरधारी गुरुदेव श्री गणेशलालजी म.सा. की 144वीं जन्म जयन्ति तप-त्याग, सामूहिक जाप एवं सामायिक दिवस के रूप में मनाई गई। गुरुदेव श्री वीरेन्द्रमुनीजी म.सा. ने गुरु गणेश के व्यक्तित्व-कृतित्त्व एवं संयम जीवन पर प्रकाश डाला। इस प्रसंग पर भगवान महावीर सेवा समिति की तरफ से 364वाँ मानव सेवा एवं अन्नदान कार्यक्रम भी आयोजित किया गया तथा वृद्धाश्रम में भी अन्नदान किया गया।

इस प्रसंग पर संघ अध्यक्ष डॉ. एम. उत्तमचन्द जी गोठी जैन ने जहां श्रीसंघ की उपलब्धियों की चर्चा की वहीं उन्होंने इन आयोजनों में सहयोग देने वाले सभी सहयोगी बंधुओं के प्रति संघ की ओर से आभार प्रकट किया। इस मंगलमय अवसर पर कई श्रावक-श्राविकाओं ने जहां श्रावक के 12 व्रत अंगीकार किए वहीं 24 वर्षों से वर्षीतप करने वाली सुश्राविका श्रीमती पारसीबाई इन्दरचन्द जी लोढा, लगातार 13 तेले तप करने वाली सुश्राविका श्रीमती हेमलता राजेन्द्रजी भंसाली, श्रीमती शालू किशोर बाघमार द्वारा श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययन, खुशबू बाघमार द्वारा सम्पूर्ण सुखविपाक सूत्र तथा 13 वर्षीय बालक हर्षित बोहरा द्वारा सम्पूर्ण श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र कंठस्थ करने के उपलक्ष्य में श्रीसंघ की ओर से शॉल, माला एवं धार्मिक पुस्तकें आदि भेंट करके बहुमान किया गया।

प्रेषक : डॉ. एम. उत्तमचन्द गोठी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

पूज्या श्री सोहनकंवर जी म.सा. का जन्म शताब्दी समारोह तप-त्याग के साथ मनाया

आसींद (राजस्थान) : आसींद श्रीसंघ के तत्वावधान में साध्वी श्री कमलप्रभा आदि ठाणा के सान्निध्य में महावीर भवन में महासती सोहनकंवर जी म.सा. का जन्म शताब्दी वर्ष तप-त्याग के साथ मनाया गया। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सज्जनराज जी मेहता जैन एवं पूर्व महिला राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कमलाजी मेहता जैन की अध्यक्षता एवं जैन कॉन्फ्रेंस की वर्तमान राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थिति ने आयोजन को गुण गौरव प्रदान किया।

साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. ने महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. की जीवनरेखा को रेखांकित करते हुए बताया कि गुरुनी जी के जीवन में जहां बचपन से ही धर्म के संस्कार विद्यमान थे वहीं उनकी संयम साधना और मौन की प्रवृत्ति उत्तम रूप थी। गुरु सेवा में उनकी समर्पण भावना एवं स्वाध्याय आदि जागरूकता रत हुआ करती थी। साध्वी श्री लब्धिप्रभा जी म.सा. ने भी पूज्या श्री सोहनकंवर जी म.सा. के जीवन की विलक्षणता को उद्वृत किया। समारोह में पू. आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा., प्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म.सा., उप-प्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म.सा., श्री कोमलमुनि जी म.सा., साध्वी श्री सुप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री जयमाला जी म.सा. द्वारा इस अवसर के लिए प्रेषित शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाए गए। इस अवसर पर श्री कमलप्रभा जी म.सा. के संयम दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर पू. आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म.सा. द्वारा उन्हें 'स्वर्ण संयम आराधिका' की उपाधि से विभूषित किया गया।

समाजजनों द्वारा भी उनके प्रति शुभकामनाएँ प्रस्तुत की गईं। साध्वी श्री तरुणप्रभा जी म.सा., श्री सुदर्शनप्रभा जी म.सा व श्री मणिप्रभा जी म.सा. ने भी सुन्दर गीतिकाएं प्रस्तुत की। श्रीसंघ द्वारा सुश्रावक श्री विजय कुमार जी कर्नावट को श्रावक रत्न, सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी संचेती को श्राविका रत्न, श्री सज्जनराज जी मेहता जैन को शिरोमणि रत्न, श्रीमती कमलाजी मेहता जैन को स्वाध्यायी रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रान्तीय अध्यक्षा श्रीमती नीता बाबेल जी जैन, रा. महिला उपाध्यक्षा श्रीमती लाडजी मेहता, श्री शान्तिलाल जी मारु, श्री महेन्द्र जी जैन आदि बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने समारोह की शोभा को कई गुणा बढ़ाया। समारोह में श्री विमल जी जैन द्वारा लक्की ड्रॉ, प्रभावना श्री लक्ष्मीलाल जी बम्ब-श्री विमल जी जैन द्वारा वितरित की गई।

प्रेषक : पूरणमल चौधरी, महामंत्री, आसींद श्रीसंघ

प्रशांत विहार में तप अभिनंदन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया

दिल्ली : परम श्रद्धेय राजर्षि, तपस्वी रत्न पू. श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा., वाचनाचार्य, नेपालहिंद गौरव पू. डॉ. विशालमुनिजी म.सा. के शिष्य रत्न नवकार मंत्र साधक पू. श्री विचक्षणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में भगवान महावीर के 2250वें निर्वाण महोत्सव के पावन प्रसंग पर महाराष्ट्र केसरी, तपस्वी रत्न पू. श्री परागमुनिजी म.सा. ने 141 आयंबिल तप की आराधना एवं सरलमना श्रद्धेय श्री मनोहरमुनिजी म.सा. द्वारा 151 एकसाना व्रत की आराधना सुसम्पन्न की।

प्रशांत विहार श्रीसंघ ने बड़े ही आध्यात्मिक रूप से इसे मनाया। तप की अनुमोदना करते हुए प्रशांत विहार श्रीसंघ के अंतर्गत कई परिवारों ने लंबी तपस्याओं के पच्चखाण लिये। इस पावन प्रसंग पर राज्य सभा सांसद एवं बीजेपी के सह-कोषाध्यक्ष श्री नरेशजी बंसल विशेष रूप से गुरु भगवंतों के प्रति अपनी श्रद्धा रखते हुए उपस्थित हुए। प्रशांत विहार श्रीसंघ ने सभी आगंतुकों का स्वागत अभिनंदन किया। सभा का संचालन श्रीसंघ महामंत्री एवं जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन ने किया। इस अवसर पर श्री नरेश आनंदप्रकाशजी जैन, श्री सुरेशकुमारजी जैन, श्री रमेशजी जैन शामड़ी, श्री मुन्नालालजी जैन के अलावा देश के कई अन्य शहरों से श्रद्धालु उपस्थित हुए तथा पूज्य साधु-संतों का मांगलिक भी प्राप्त हुआ।

प्रेषक : जितेन्द्र जैन, प्रांतीय अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश

चातुर्मास समापन पर कृतज्ञता, तपस्वी सम्मान दिवस एवं प्रश्नमंच समारोह का आयोजन

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : जैन साधना भवन श्रावक संघ, स्कीम नंबर 71 के तत्वावधान में राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. की सुशिष्या मालव कीर्ति उपप्रवर्तिनी पू. श्री कीर्तिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के 2023 चातुर्मास की ऐतिहासिक सफलता पर चातुर्मास शिखर समारोह स्वरूप कृतज्ञता दिवस एवं तपस्वी सम्मान समारोह एवं राष्ट्रीय प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। महासती मंडल के पुरुषार्थ से तप, संयम, स्वाध्याय के साथ यह चातुर्मास संपूर्ण इंदौर महानगर में सर्वाधिक 17 मासखमण के साथ विविध जप-तप अनुष्ठान आयोजनों में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

आपश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु मुकुट मांगलिक भवन गुमास्ता नगर मे आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में जैन कॉन्फ्रेंस के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी जैन थे। अध्यक्षता फैडरेशन के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजयजी मेहता जैन ने की।

कार्यक्रम में श्री कैलाशजी नाहर, श्री महेशजी डाकोलिया, श्री राजेंद्रजी लोढा, श्री बाबूलालजी पितलिया, श्री विजयजी ललवानी, श्री प्रकाशजी भटेवरा, श्री संतोषजी जैन 'मामा', श्री सुभाषजी विनायक्या, श्रीमती मधुजी लोढ़ा, अलकाजी नाहटा, जागृतिजी भंडारी, किरणजी डांगी, साधनाजी डांगी, प्रभाजी जैन, विजयलक्ष्मीजी जैन ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। जिनेन्द्र आनंद बल्लभ कीर्ति ट्रॉफी प्रश्न मंच का आयोजन भी किया गया, जिसके पुरस्कार श्री महेशजी डाकोलिया परिवार की ओर से प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का संचालन अनिलजी बरडिया जैन ने किया एवं प्रश्नमंच का संचालन श्री संतोषजी जैन 'मामा' द्वारा किया गया। श्री विजयजी मेहता जैन परिवार गौतम प्रसादी के लाभार्थी बने। **प्रेषक : संतोष जैन 'मामा',** इन्दौर

दत्तनगर में मुमुक्षु कु. चांदनी तातेड की जैन भगवती दीक्षा महोत्सव सम्पन्न
दीक्षा पश्चात् नाम पू. श्री आप्तवंदनाजी म.सा.

दत्तनगर (महाराष्ट्र) : पावन दीक्षा पाठ प्रदाता उपाध्याय पू, श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा, पू. श्री समकितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, पू. श्री चंदनबालाजी म.सा., पू. श्री पद्मावतीजी म.सा. के निश्रा एवं पू, श्री प्रीतिसुधाजी म.सा., पू. श्री प्रियसाधनाजी म.सा., पू. श्री चंद्रकलाजी म.सा., पू. श्री अर्चनाजी म.सा., पू. श्री यशाजी म.सा., पू. श्री कुमुदलताजी म.सा., पू. श्री चारूप्रज्ञाजी म.सा. आदि ठाणा के पवित्र पावन सान्निध्य में मुमुक्षु कु. चांदनी तातेड़ की जैन भागवती दीक्षा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई, जिनका दीक्षा पश्चात् नाम पू. श्री आप्तवंदनाजी म.सा. रखा गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान बालासाहबजी धोका जैन ने उनकी धर्मनिष्ठ युवा एवं महिला टीम तथा माता सुनीताजी तातेड़, धर्म माता-पिता श्री राजेन्द्रजी-सौ. मनीषाजी लुंकड़ और श्री प्रकाशजी रसिकलालजी धारीवाल, श्री विनोदजी बाबूलालजी मांडोत, श्री प्रकाशजी सुखलालजी बोरा, श्री पूनमचंदजी तातेड, श्री सुनीलजी बाफना, सौ. आनंदीबाईजी धोका, श्री राजकुमारजी लोढ़ा, श्री किरणजी बोरा, श्री राजेंद्रजी गुगले, श्री विजयजी सालेचा, श्री विशालजी भंडारी आदि ने संघ को बड़ा योगदान दिया एवं आनंद दरबार जैन भगवती दीक्षा महोत्सव का अतुल्य आयोजन किया।

इस अवसर पर साधु-साध्वीजी का स्वागत, दीक्षार्थी का शाही कुमकुम, रक्षाबंधन भक्ति संगीत, केशर घुटाई एवं छाँटना, 200 दृष्टिहीन लोगों के साथ वर्षीदान, वरघोड़ा, सम्मान व बिदाई का माहौल, सभी कार्यक्रम समय पर, अतिथियों, दानदाताओं, कार्यकर्ताओं सबका उचित आदर-सम्मान किया गया।

इस मौके पर वैयावच्च एवं भोजन की अतुलनीय व्यवस्था रही। दीक्षा स्थल वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र गंगाधाम शत्रुजंय रोड़, पुणे की व्यवस्था का लाभ जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री रमनलालजी लुंकड़ जैन द्वारा लिया गया। **प्रेषक : बालासाहेब धोका जैन,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेंस के आजीवन सदस्यों की सूची का राष्ट्रीय अध्यक्षजी की भावनानुसार

प्रथम बार जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय युवा शाखा, नई दिल्ली द्वारा

ऑनलाईन डिजिटलाइजेशन एवं अपडेटेशन

इसमें सभी आजीवन सदस्यों का रजिस्टर करना अनिवार्य है।

Android App | iOS App | Web Link

!! निवेदक !!

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा
आनंदमल छल्लाणी जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन	पुष्पा गोखरू जैन

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष	राष्ट्रीय युवा व. उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय युवा महामंत्री	राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय युवा सह कोषाध्यक्ष
पदमचंद आच्छा जैन	कमलेश नाहर जैन	प्रमोद सिंघी जैन	मनोज सोलंकी जैन	प्रवीण सिंघी जैन
9980059421	9376737111	9844117766	9844162930	9844331009

प्रान्तीय युवा - सम्पर्क सूत्र

प्रान्तीय युवा अध्यक्ष कर्नाटक	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष आन्ध्र - तेलंगाना	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष तमिलनाडु	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष पंजाब	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष हरियाणा	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश
विकास कोठारी जैन	पवन कटारिया जैन	आनंद बालेचा जैन	दीपांशु जैन	प्रवेश जैन	सुविनित कुमार जैन
9845850155	9849159292	9841368579	8847011852	9211600001	8791703503

प्रान्तीय युवा अध्यक्ष दिल्ली	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष राजस्थान	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष मध्य प्रदेश	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष महाराष्ट्र	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष मुम्बई - पुणे	प्रान्तीय युवा अध्यक्ष गुजरात
दिनेश जैन	निर्मल सिंघवी जैन	संदीप गोखरू जैन	रोशन चोरड़िया जैन	बाबूलाल बड़ोला जैन	मंजीत कोठारी जैन
9999658350	9414163710	9425063976	9403151617	7977691263	9374544138

जैन कान्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा के द्वारा संस्था के आजीवन हस्तलिखित सदस्यों की सूची को डिजिटलाइज किया जा रहा है।आप सभी से अनुरोध है कि इस ऐप को डाउनलोड़ कर इसके माध्यम से अपना पूर्ण विवरण भरकर अवश्य अपडेट करें।

हमारे यहाँ से भी फोन द्वारा आपका विवरण लिया जायेगा, कृपया सहयोग करें।

राष्ट्रीय कॉल सेन्टर सम्पर्क सूत्र - 9595095401

शोक समाचार

राजर्षि, सलाहकार पूज्य श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. का देवलोक गमन

मेरठ में जैन कॉन्फ्रेंस पदाधिकारियों एवं हज़ारों भक्तजनों ने अर्पित की भावपूर्ण श्रद्धांजलि

मेरठ (उत्तर प्रदेश) : श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के वरिष्ठ संतरत्न राजर्षि, आयम्बिल तप सम्राट् श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्म पितामह, तपस्वीरत्न पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. का 27 नवम्बर 2023 की रात्रि 10:32 बजे संथारा सहित देवलोकगमन हो गया।

आप सन 1938 में हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के चावगांव में एक राजपूत वंश में हवलदार पिता श्री ख्यालसिंहजी और माता श्रीमती जानकी देवीजी के घर जन्मे और एक दिन होशियारपुर में एक जैन संत की भव्य अंतिम शोभा यात्रा को देखकर आप जैन धर्म की ओर आकर्षित हुए। विधि के संयोग से आप मेरठ पधारे और 1959 में मेरठ में विराजित घोर तपस्वी श्री निहालचंदजी म.सा. के श्रीमुख से दीक्षा पाठ ग्रहण किया और आपश्री जी को जिनशासनसूर्य प्रवर्तक श्री शांतिस्वरूपजी म.सा. का शिष्य घोषित किया गया। दादा गुरुदेव श्री खूबचंदजी म.सा. और संघ संरक्षक श्री फूलचंदजी म. सा. से भी आपका विशेष लगाव था और हमेशा आपको उनका आशीर्वाद मिलता था। जैन भागवती दीक्षा के 64 वर्षों की उत्कृष्ट साधना में आपने कश्मीर से कन्याकुमारी और मुंबई से कोलकाता तक लगभग 75000 किमी. से भी अधिक की पैदल विहार यात्राएं करते हुए जिनशासन की महत्ती प्रभावना की।

आप गुरु निहाल परिवार के अनुशास्ता थे और आपकी शिष्य मंडली में वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर पू. डॉ. श्री विशालमुनिजी मा सा, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री आशीषमुनिजी म.सा., पंडित श्री विचक्षणमुनिजी म.सा. ,श्री उत्तममुनिजी म.सा., श्री अचलमुनिजी म.सा., उपप्रवर्तक श्री अभिषेकमुनिजी म.सा., नेपाल केसरी श्री मणिभद्रमुनिजी म.सा., श्री गौतममुनिजी म.सा., दक्षिण केसरी श्री समकितमुनिजी म.सा. आदि 30 से भी अधिक संतों जैसे उत्तम चर्या वाले विलक्षण संतो का भंडार है, जो गुरु गरिमा के अनुरूप चारित्र्य सम्पन्न संतों के रूप में विख्यात हैं।

उनकी अंतिम शोभायात्रा में बुधवार 29 नवंबर को प्रातः 10 बजे पूरे भारतवर्ष से श्रद्धालुओं का जनसैलाब उमड़ पड़ा। मेरठ और देशभर से पहुंचे गुरुदेव के अनुयायियों ने नम आँखों से गुरुदेव को अंतिम विदाई, श्रद्धांजलि अर्पित की। लुधियाना, अमृतसर, होशियारपुर, दिल्ली, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, राजस्थान, हरियाणा सहित देशभर से हज़ारों लोग गुरुदेव के गुणगान और जयकारे लगाते हुए भव्य रूप से अंतिम शोभा यात्रा में शामिल हुए। इस अवसर पर हैलिकॉप्टर से भी गुरुदेव पर पुष्प वर्षा की गई और बैण्ड-बाजे के साथ अंतिम शोभायात्रा निकाली गई।

अंतिम शोभायात्रा में कर्नाटक से राज्यसभा सांसद श्री लहरसिंहजी सिरोया, मेरठ लोकसभा सांसद श्री राजेंद्रजी अग्रवाल, मेरठ के मेयर श्री हरिकांतजी आहलूवालिया गुरुदेव को श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित हुए। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन जी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, वैय्यावच्च योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, ज्ञान प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजयजी बाफना जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री पुष्करजी जैन, रा. कार्य. समिति सदस्य श्री जयप्रकाशजी ललवाणी जैन, उत्तर प्रदेश प्रांतीय महामंत्री श्री भास्करजी जैन, श्री अमनजी जैन, श्री पुनीतजी जैन, श्री मनीषजी 'बब्बू' जैन, श्री सुनीलजी जैन-दिल्ली और अन्य पदाधिकारी गुरुदेव को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु उपस्थित हुए। इस पूरी शोभा यात्रा का आयोजन मेरठ श्रीसंघ ने सभी सहयोगी संस्थाओं के सहयोग से किया। श्री मनीष जैन-मन्त्री श्रीसंघ और अन्य प्रांतीय पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा., महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. आदि संत-सतीवृंद के शोक संदेश उनके जीव की यात्रा, वीतरागता की ओर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य सिद्धत्व को प्राप्त करने हेतु प्राप्त

हुए। इसके अतिरिक्त देशभर से गुरुदेव के प्रति भावांजलि-श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु अनेकों श्रीसंघों, गुरु भक्तों के संदेश प्राप्त हो रहे हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली द्वारा शनिवार 02 दिसम्बर 2023 को दोपहर 2:15 बजे से जूम एप्प के माध्यम से पूज्य गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. के प्रति श्रद्धांजलि, भावांजलि अर्पित करने हेतु **'गुणानुवाद सभा'** का आयोजन किया गया। इस गुणानुवाद सभा में देशभर से पूज्य साधु-साध्वीजी म.सा. एवं भक्तजनों ने जुड़कर गुरुदेवश्रीजी के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा भक्ति प्रस्तुत की।गुणानुवाद सभा का संचालन कर रहे जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन को गुरुदेवश्री के प्रति अपने भाव व्यक्त करने हेतु आमंत्रित किया। श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने कहा कि हम सभी जानते हैं कि पूज्य गुरुदेवश्रीजी का जीवन स्वावलम्बी था। विशाल शिष्य परिवार और उग्र तपस्या होते हुए भी अपने कार्य गुरुदेवश्रीजी स्वयं ही किया करते थे। आपश्रीजी का कहना था कि भगवान महावीर का सेनानी होकर पुरुषार्थ से पीछे हटे तो हम महावीर का सेनानी कहलाने योग्य नहीं हैं।

यह भी एक अद्‌भुत संयोग ही है कि पूज्य गुरुदेव ने जैन नगर मेरठ में दीक्षा ली और जैन नगर मेरठ में ही महाप्रयाण किया। मैं एवं मेरा परिवार परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. को वंदन, नमन करते हुए हार्दिक वंदनांजलि, भावांजलि, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। पूज्य गुरुदेवश्रीजी की आत्मा चिर शांति में लीन हो तथा अंततः मोक्ष के शाश्वत सुखों का वरण करे।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन ने अपने भाव रखते हुए कहा कि जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी ही है उससे भला कौन बच सकता है परन्तु महामनस्वी गुरुदेव का यूँ जाना जिनशासन के लिए बहुत बड़ी क्षति है। गुरुदेवश्रीजी के प्रति समर्पित इस गुणानुवाद सभा में वीतराग देव के चरणों में यही भावना बहाता हूँ कि आपकी निर्वाण यात्रा यूं ही आगे वर्धमान रहे और शीघ्र ही निर्वाणगामी महापुरुषों में आपका भी नाम उल्लिखित हो। अदृश्य लोक में विराजित गुरुदेव की आत्मा से सभी के कल्याण की कामना करता हूँ।

गुणानुवाद सभा में वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर पू. डॉ. विशालमुनिजी म.सा., श्रमणसंघीय प्रवर्तक पू. श्री आशीषमुनिजी म.सा., प्रवर्तिनी पू. श्री सुधाजी म.सा. की सुशिष्या पू. श्री किरणजी म.सा., पू. साध्वी श्री राधाजी म.सा. आदि ठाणा ने भी गुरुदेवश्रीजी के प्रति अपनी यादों, उनके संस्मरणों को याद करते हुए अपनी भावांजलि समर्पित की और गुरुदेवश्रीजी के पद्‌चिन्हों पर चलने का आव्हान किया।

सभा में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अशोकजी बाबूसेठ बोरा जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री सुधीरजी जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन, डॉ. उत्तमंचदजी गोठी जैन, श्री भास्करजी जैन, श्री अर्पितजी छाजेड़ जैन, श्री राकेशजी जैन 'लक्की', श्रीमती विमलजी बाफना जैन, श्री राकेशमोहन जी जैन, श्री आनंदजी मेहता जैन, श्री मुन्नालालजी जैन, श्रीमती ऋचा जी जैन, श्रीमती शीला जी जैन, श्री धीरजजी जैन, श्री सुनीलजी बाफना जैन, श्री गौतमचंदजी दुग्गड़ जैन, श्री राजेशकुमारजी जैन, श्री लक्ष्मीलालजी जैन, श्री पवनजी कटारिया जैन, श्रीमती दर्शनाजी तालेसरा जैन, श्रीमती शशिकलाजी बोरा जैन, श्री रोशनलालजी जैन, डॉ. सौरभजी जैन, डॉ. पारसजी सुराणा जैन, श्रीमती संतोषजी जैन आदि अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी श्रद्धांजलि गुरुदेवश्रीजी के प्रति समर्पित की।

वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर पू. श्री विशालमुनिजी म.सा. ने गुरुदेवश्रीजी के साथ बिताये लम्हों को याद करते हुए अपनी भावांजलि समर्पित कर मांगलिक प्रदान किया। गुणानुवाद सभा का संचालन करते हुए श्री अशोककुमारजी मेहता जैन ने बताया कि सभा में 150 के लगभग भक्तजनों ने हिस्सा लिया। अंत में आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के मांगलिक द्वारा सभा समाप्त हुई। **प्रेषक : जयप्रकाश ललवानी जैन,** राष्ट्रीय कार्य. समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

!! श्री महावीराय नमः !!

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल

(पूर्णतया वातानुकूलित)

सहर्ष आपको सूचित किया जा रहा है कि जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन, नई दिल्ली में नव - निर्मित

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल (पूर्णतया वातानुकूलित)

शुभ विवाह, जन्म दिवस आदि पारिवारिक एवं अन्य आयोजनों के लिए उपलब्ध है।

सामाजिक संस्थाएँ, श्रीसंघ व Corporate Houses आदि भी धार्मिक, सामाजिक व सेमिनार आदि कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यक्रम आयोजन हेतु उपलब्ध सुविधायें :-

- नई दिल्ली के शालीन, आदर्श वातावरण के बीच 4500 Sq. Ft. क्षेत्रफल में निर्मित।
- पूर्णतया सुसज्जित, वातानुकूलित व सुविधापूर्ण परिसर।
- कार पार्किंग की सुव्यवस्थित सुविधा उपलब्ध।
- हॉल की बुकिंग के साथ 2 वातानुकूलित कमरे उपलब्ध कराए जाएंगे।
- पूर्णतया सुरक्षित व पारिवारिक माहौल की अनुभूति ।
- भोजन आदि के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध ।

सहयोग राशि :-

24 घंटे की बुकिंग के लिए 61000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : रात्रि 12:00 बजे से अगले दिन रात्रि 12:00 बजे तक), दूसरे दिन के लिए विशेष छूट।

8 घंटे की बुकिंग के लिए 41000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : प्रातः 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा सायं 4 बजे से रात्रि 11 बजे तक)

-: ध्यानार्थ :-

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों व प्रान्तीय अध्यक्षों की अनुशंसा पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों हेतु विशेष छूट प्रदान की जाएगी ।

जैन कॉन्फ्रेंस सदस्य 20 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

स्थानकवासी जैन समाज के सामान्य परिवार भी छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

-: विशेष :-

जैन भवन परिसर में स्थित जैन भोजनशाला में नाश्ता, शुद्ध सात्विक (लहसुन, प्याज़ व जिमीकंद रहित) भोजन के अलावा चाय, कॉफी, पानी व स्नैक्स आदि उपलब्ध।

जैन भवन में लगभग 30 ए. सी. कमरे उपलब्ध ।

!! अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र !!

व्हाट्सएप्प नम्बर : 9019731906 लैण्डलाइन नम्बर : 011 - 23363729 / 23365420

Email.: aissjc1906@gmail.com

* नियम व शर्तें लागू

!! कृष्णा ग्राफिक्स - 9717360488 !!

RNI No. : 2123/1957
Date of Posting : 15-16/12/2023
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
दिसम्बर 2023

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/21-22-23
U (C) 66/2021-2023
Licenced to post without Pre - Payment
Date of Publication : 05/12/2023

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

चैन्नई - गुरू गणेश जन्मोत्सव के अवसर पर प्रवर्तक श्री कुंदनऋषि जी म. सा. के द्वारा महासती श्री चैतन्याश्रीजी म. सा. को 'जिनशासन प्रभाविका' को अलंकरण से विभूषित करने की चादर के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी एवं स्थानीय पदाधिकारीगण।

औरंगाबाद - पूज्य महासती श्री अमितसुधा जी म. सा. के दर्शन वन्दन सेवा का लाभ लेते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी श्री दिलीपजी खिंवसरा आदि महानुभाव ।

राजस्थान - नाथद्वारा पदार्पण पर राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत सस्नेह भेंट उपस्थिति राष्ट्रीय कार्य. सदस्य श्री सम्पतलालजी लोढ़ा, श्री लक्ष्मीचंद जी जैन श्री जेपी जी ललवाणी, श्री निर्मलजी सिंघवी आदि महानुभाव।

मेवाड़ राजस्थान - प्रान्तीय अध्यक्ष श्री निर्मल जी पोखरणा एवं उनकी टीम के द्वारा राज्यस्तरीय सम्मेलन में श्रमण संघ हित में प्रस्तावित नियमों को स्थानीय श्री संघ पदाधिकारियों को प्रशस्ति पत्र के रूप में सौंपते हुए

सूरत - गुजरात महिला शाखा अध्यक्षा श्रीमती सीमाजी नाहर आदि कार्यकर्ताओं के द्वारा गुरूभगवन्तों के विशेष दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन

कर्नाटक - प्रान्तीय युवा शाखा द्वारा शीतकालीन मौसम में कम्बल वितरण कार्यक्रम। उपस्थित राष्ट्रीय व प्रान्तीय पदाधिकारीगण

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक राजीव जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110 001 से प्रकाशित